

अध्याय - 3

मेहरुनिसा परवेज़: कथा साहित्य में मध्यमवर्गीय नारी जीवन

मध्यवर्गीय नारियों का जीवन वास्तव में बहुत ही दयनीय होता है। क्योंकि ना तो वे निम्नवर्ग में आती हैं जिन्हें लोक-लाज समाज का कोई डर नहीं होता और ना ही उच्च वर्ग में आती हैं जिनमें समाज के प्रवाह को मोड़ने की ताकत होती है। इसलिए इन्हें इन दोनों वर्गों के बीच पिसना पड़ता है। ये स्त्रियां घरेलू और कामकाजी दोनों ही दायित्व को निभाती हैं। मध्यवर्ग से तात्पर्य उस वर्ग से होता है जिन्हें जीवन की प्राथमिक आवश्यकताएं - रोटी, कपड़ा और मकान तो प्राप्त होता है किंतु उच्चवर्ग की जैसी स्थिति को पाने के लिए अन्य अनेको समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इनके पास ना तो निम्न वर्ग जैसी आजादी होती है और ना उच्च वर्ग जैसी सुख-सुविधाएं, साथ ही समाज में फैले आधुनिकता - बोध के दबावों से वशीभूत होकर ये स्त्रियाँ मानसिक द्वन्द्व का शिकार हो जाती है।

इस वर्ग की जो गृहिणीयाँ होती है वे सारे दिन घर के काम-काज में लगी रहती है। इन्हें अपने लिए पल भर की भी फुरसत नहीं मिलती, समय से पहले ही बूढ़ी दिखने लगती है। लेकिन, झटका इन्हें तब लगता है जब इनके काम-काज को परिवार में कोई महत्व नहीं देता तब ये हताश हो जाती है। घर के किसी भी महत्वपूर्ण फैसलों में इनकी कोई राय जानना या बताना जरूरी नहीं समझा जाता है। परंपरागत पितृसत्तात्मक मूल्यों, रीति-रिवाजों एवं रूढ़ी परंपराओं का पालन करती है। पर्दा-प्रथा, लड़की- लड़के में भेदभाव कन्या- भ्रूण हत्या दहेज-प्रथा जैसी कुरीतियां इनमें देखने को मिलती है। बेटी के जन्म से ही दहेज जुटाने में लग जाती हैं साथ ही बेटे के विवाह में दहेज लेने की लालसा भी इनमें अटल रहती है। प्रेम विवाह का विरोध करती हैं। विधवाओं के प्रति गलत दृष्टि होती है। इस वर्ग में पढ़ी-लिखी और अनपढ़ दोनों ही तरह की स्त्रियां देखने को मिलती हैं। किंतु चौबीस घंटे चारदीवारी के भीतर रहने से इनकी सोचने और समझने की शक्ति

विस्तृत नहीं होती। कामकाजी स्त्रियों को देखकर ईर्ष्या से भर जाती हैं। 'औरत ही औरत की दुश्मन है' यह कहावत इस वर्ग की स्त्रियों पर ठीक बैठती है। बच्चों का पालन पोषण और विवाह का दायित्व ये स्वयं उठाती हैं। आर्थिक दृष्टि से अधिक सक्षम ना होने के कारण प्रायः चिंता एवं तनावग्रस्त देखी जाती हैं।

मध्यवर्गीय स्त्रियों में जो कामकाजी होती हैं उनका जीवन तो और भी जटिल होता है। क्योंकि इन्हें घर बाहर दोनों ही दायित्व को निभाना पड़ता है और इस वर्ग के पुरुषों की मानसिकता बहुत रूढ़िवादी होती है। वह पढ़ी-लिखी कामकाजी स्त्री से शादी तो कर लेते हैं किंतु उनका साथ-सहयोग देने की बात आती है तो पति बन जाते हैं। इस वर्ग पुरुष ऑफिस या अन्य किसी काम से आते हैं तो आराम करते हैं लेकिन स्त्री जब काम से आती है तो घर के कामों में लग जाती है। बदलते वक्त ने महिलाओं को आर्थिक शैक्षिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया है और उनकी हैसियत एवं सम्मान में वृद्धि हुई है, इसके बावजूद महिलाओं की घरेलू-जिम्मेदारी, खाना बनाना और बच्चे, सास-ससुर तथा परिवार की देखभाल अभी भी महिलाओं का ही काम माना जाता है। अब महिलाओं को दोहरी जिम्मेदारी निभानी पड़ती है। घरेलू महिलाओं की अपेक्षा कामकाजी महिलाओं पर काम का अधिक बोझ होता है। इन महिलाओं को अपने और घर और ऑफिस के बीच तालमेल बिठाने में बहुत ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अपने घर का काम खत्म कर जब कभी ऑफिस देर से पहुँचती है तो वहाँ भी अपने बड़े अफसरों से उन्हें डाट सुननी पड़ती है और कभी वह यौन शोषण का शिकार भी हो जाती है। जितना उनका संघर्ष शारीरिक स्तर पर होता है उससे कई गुना जादा उनका संघर्ष मानसिक स्तर पर होता है। इस वर्ग के पति स्वतंत्र और मानवीय दृष्टि वाले नहीं होते, अतः उस स्त्री को पति की शक भरी मानसिकता की यातना भी सहनी पड़ती है। ये स्त्रियाँ पितृसत्तात्मक मूल्यों को सहने के लिए शापित होती है। कामकाजी महिलाएं आज भी आर्थिक रूप से पुरुषों से मुक्त नहीं हैं। क्योंकि जो महिलाएं अपने परिवार की अर्थव्यवस्था में सहयोग करती हैं। वह

अपनी आय को अपनी इच्छा अनुसार खर्च करने के लिए स्वतंत्र नहीं है। ये महिलाएं पढ़ी-लिखी कमाऊ होते हुए भी पितृसत्ता के कारण घर और बाहर के महत्वपूर्ण फैसलों में इनको सहभागी नहीं बनाया जाता। घरेलू हिंसा और उत्पीड़न को भी ये स्त्रियां अक्सर भोगती हैं। बच्चों के पालन-पोषण और पढ़ाई के प्रति अधिक सचेत होती हैं। इनमें जाति बंधन अत्यंत सख्त होता है। उसके बावजूद अब ये अन्तर्जातीय विवाहों में अपना स्वतंत्र निर्णय लेने लगी हैं।

आज के दौर में देखा जाने लगा है कि महिलाएं अधिक जागरूक हो रही हैं। दबबू प्रवृत्ति कम हो रही है पितृसत्तात्मक व्यवस्था के प्रति विद्रोही स्वर उठने लगे हैं। फलस्वरूप परिवारिक ढांचे में बदलाव आने लगा है। इनके विद्रोही स्वर के कारण संयुक्त परिवार एकल परिवार में बदलने लगे हैं। पति के द्वारा अत्याचार बढ़ जाने पर यह तलाक जैसी ठोस कदम भी उठाने लगी हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति और उसका प्रभाव मध्यवर्गीय स्त्रियों की विवशता को और भी बढ़ा रहा है। क्योंकि मर्यादित साधनों में अमर्यादित सुख-सुविधाओं की लालसा इनमें बढ़ती जा रही है। अधिक मेहनत करने की वजह से स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही करती हैं और भयानक बीमारियों की चपेट में आ जाने के कारण समय से पहले ही मौत को गले लगा लेती हैं।

सरकार द्वारा भी स्त्रियों को केंद्र में रखकर अनेकानेक योजनाएँ, नीतियाँ तथा नए कानून बनाए जा रहे हैं। किंतु जब तक स्वयं, समाज और परिवार द्वारा इनकी समस्याओं को नहीं समझा जाएगा कागजों पर बनी नीतियां कुछ नहीं कर सकेंगी। स्वस्थ और शिक्षित समाज चाहिए तो इन मध्यमवर्गीय स्त्रियों का तिरस्कार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। क्योंकि यह स्त्रियाँ संख्या में सर्वाधिक होने के कारण किसी भी समाज का महत्वपूर्ण अंग होती हैं। अतः इनका स्वास्थ्य और जागरूक होना अति आवश्यक है। मेहरुन्निसा परवेज़ ने अपने कथा साहित्य में मध्यवर्गीय नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया है। जिसका हम विस्तार से चर्चा करेंगे।

'आँखों की दहलीज' उपन्यास में एक मध्यवर्गीय स्त्री के बाँझपन की व्यथा है। इस उपन्यास की नायिका 'तालिया' का सम्बन्ध कहीं ना कहीं लेखिका से संबंधित है। एक स्थान पर

लेखिका ने अपने अंतर मन के किसी कोने में छिपे दर्द को व्यक्त किया है- "तालिया से मैं बहुत कम समय के लिए मिली पर उस लड़की ने मुझे बहुत प्रभावित किया तालिया का दुःख देखकर लगा वह जो भोग रही है। मेरा दुःख है क्योंकि उन दिनों मेरा नाम भी बाँझ औरतो की सूची में था। शादी के दस वर्ष बीत गये थे और मैं माँ नहीं बन पाई थी कसूर चाहे जिसका हो कलंक औरत ही झेलती है।"¹ डॉ. द्वारा बताये जाने पर की तालिया आप कभी माँ नहीं बन सकती उसे एक झटका सा लगता है। उससे उसकी बेहद कीमती चीज़ छीन चुकी थी। वह एकदम खामोश हो जाती है। अक्सर व्यक्ति जब खामोश होता है तो उसके भीतर बहुत शोर होता है। ऐसा ही तालिया के साथ होता है ईश्वर ने उसके साथ मज़ाक ही तो किया था। एक औरत के लिए बनना उसके सौभाग्य की बात होती है और यह सौभाग्य तालिया से छीन चुका था। अतः पति शमीम से तालिया की हालत देखी नहीं जाती और वह तालिया को उसके मायके छोड़ आता है। मायके में आने के बाद वह सब भूलने की कोशिश करती है। परन्तु यह मध्यवर्गीय समाज के लोग उसका पीछा कहीं नहीं छोड़ते, उसे ताना मारते हैं। स्थिति तो तब भयावह हो जाती है, जब मध्यवर्ग के शिक्षित वर्ग भी उस महिला पर बातों - बातों में कटाक्ष करने से पीछे नहीं हटते "बहन क्यों न तुम तालिया को लेकर अजमेर चली जाओं, वहाँ तो बड़ी- से बड़ी बाँझन की मुराद पूरी हो जाती है।"² इन तीखे स्वरों को सुनकर तालिया को लगता है। जैसे उस पर किसी ने खंजर से वार कर उसे पूरी तरह से लहलुहान कर दिया गया हो।

इस उपन्यास की तालिया दोहरी मानसिक पीड़ा से गुजरती है। एक ओर बाँझपन और दूसरी ओर जावेद के संपर्क में आ जाने से वह बहुत दुःखी हताश हो जाती है। बाँझपन तालियां के लिए अभिशाप था। वह उसी दुःख के कारण वश जावेद के इतने निकट आ गई थी। "आंखों की दहलीज नारी जीवन के अधूरे जीवन को लेकर चलता है। उसमें नारी के अंतर्गत को, उसकी छटपटाहट, की सच्चाई के साथ चित्रित किया है। तालिया माँ न बन सकने की कसक तथा जावेद के साथ अचानक बन गए शारीरिक संबंधों का तनाव लिए एक अधूरी नारी है।"³ तालिया

का दुर्भाग्य ही तो था जो वह जावेद के इतने करीब आ जाती है नहीं तो उसका अपना इतना अच्छा संसार था। वह अपने पति शमीम के साथ खुशी-खुशी अपनी गृहस्थी संभाल रही थी। समीम जैसा प्यार करने वाला पति होते हुए भी वह जावेद से संबंध बना बैठती है। यह ख्याल उसे पूरी तरह झकझोर कर रख देता है। अतः तालिया अपनी खामियों और गुनाहों के कारण रोज तिल-तिल मरती है। तालिया शशी से अपना दुःख प्रकट करते हुए कहती है। मेरे गुनाहों की सजा शमीम को क्यों मिले वह शमीम को वारिस देना चाहती है। "शमीम जैसे पति को मैं कुछ भी ना दे सकी न अपना पवित्र शरीर ना पवित्र आत्मा और न उसका वारिश शशि सोचो एक औरत के लिए कितने अपमान की बात है कि वह अपने पति को वारिस ना दे सके।"⁴ कई दिनों से तालिया की खबर ना मिलने के कारण यहां शमीम परेशान रहने लगता है और वह तालियां को तार भेजकर इत्तिला करता है कि वह उसे लेने आ रहा है। यह खबर सुनकर तालिया घबरा जाती है कि अचान शमीम उससे मिलने क्यों आ रहा है। अब वह शमीम का सामना कैसे करेगी वह अंदर ही अंदर अपने गुनाहों के दलदल में धसते चली जाती है। परंतु जिस क्षण के सामने आने से इतना डरती है, वह क्षण आके चला जाता है। तब वह कहती है -" ओह आदमी कितने बनावटी मुखौटे चढ़ाए जीता है कोई उसके उस बनावटीपन को उधार दे तो वे सड़ते- गलते मुख उसकी दुग्ध से साँस लेना भी मुश्किल हो जाए।"⁵

डॉ.शशी तालिया से अपने अधूरे प्रेम की दास्तान सुनाती है कि वह इंस्पेक्टर से प्रेम करती थी। इंस्पेक्टर अपने ऑफिस से रुपया गबन कर लेता है। इस जुल्म में उस पर मुकदमा चलता है। इसी कारण वश शशी के माता- पिता रिश्ते के विरुद्ध होते हैं। शशी को इंस्पेक्टर से मिलने नहीं देते तब शशि कहती है-" तालिया हम हिंदुस्तानी लड़कियाँ कितनी बदनसीब होती हैं! हर लड़की मोहब्बत का पेड़ लगाती है, पर उसमें फूल लगने वाले ही होते हैं की वह दूसरे से बाँध दी जाती है। ठीक अवसर पर उसे उन्ही फूलों की माला पहनाई जाती है कितने बेरहम हैं ये लोग।"⁶ डॉ शशी के माध्यम से लेखिका ने मध्यमवर्गीय शिक्षित नारी किस प्रकार आज स्वावलंबी होने के

बाद भी मध्यवर्गीय समाज की सीमाओं से बंधी है। परंपरागत संस्कार उसको अपनी अकड़ से मुक्त होने नहीं देते। अतः शशि समाज पर व्यंग करते हुए कहती है, हमारा समाज कितना भी शिक्षित क्यों ना हो गया हो परंतु अभी भी वह चौदवी सदी में ही जी रहा है।

इस उपन्यास की एक पात्र जमीला भी मध्यवर्गीय और अशिक्षित समाज की खोखली मानसिकता की शिकार हो जाती है। निर्धनता और निरक्षरता मुस्लिम स्त्री की प्रगति में बाधक है। इस स्थिति को उसे पग-पग पर झेलना पड़ता है। इसी संकुचित मान्यताओं के कारण जमीला की सास नौकरी पेशा लड़की से शादी के खिलाफ है। परंतु "जमीला नौकरी कर लेती है, सात भाई-बहनों की जिंदगी का सवाल था, पिता पहले ही गुजर चुके थे, आमदनी का कोई साधन बचा नहीं था। इसीलिए नौकरी करना आवश्यक हो गया। किन्तु किस किमत पर ! नहीं तालिया, जमशेद की अम्मा पुराने ख्याल की है, नौकरी करने वाली उनके घर की बहूँ नहीं बन सकती।"⁷

अतः तालिया अब अपने गुनाहों का बोझ जादा दिन ढोह नहीं सकती, वह अपने आप को खत्म कर देना चाहती है। उसे हर क्षण डर लगा रहता है। कहीं जावेद का भेद उसके पति शमीम को ना पता चल जाये, शमीम के साथ जब से वह वापस अपने घर आई है। तब से ही वह इसी भय से भयभीत होती रहती कि कहीं जावेद की पत्नी का पत्र शमीम के हाथ ना लग जाए। इसी ग्लानि पीड़ा में वह आत्महत्या करने की कोशिश करती है पर वह बच जाती है। तभी तालिया कहती है-" जमीला में फिर बच गई। मैं अपने गुनाहों के लिए कब तक जिंदा रहूँ। मुझ गुनाहगार पर मौत भी मेहरबान नहीं है।"⁸ जमीला तालिया की बचपन की सहेली है। जो तालिया की हमराज हमदर्द सब कुछ है जो उसके हर गुनाह का सबूत भी है। वह जमीला से कहती है " जमीला तू शमीम की गृहस्थी संभाल ले। मेरी अच्छी बहन। "⁹

आत्महत्या की कोशिश के जुर्म में जब तालिया को कोर्ट में हाजिर होना पड़ता है। जज द्वारा आत्महत्या की कोशिश करने का कारण पूछे जाने पर तालियां कहती है " मजिस्ट्रेट साहब जब एक औरत को मालूम हो जाए कि वह अपने पति को उसका वारिश नहीं दे सकती तो

सोचिए उसे जीने का क्या हक है। पति पर उग्र भर बोझ बने रहकर जीना कहां की इंसानियत है सारा जीवन क्या उधार खाने में बिताया जा सकता है।"¹

लेखिका ने अपने इस उपन्यास में मध्यवर्गीय नारी के मुखौटो को खोल कर रख दिया है। एक ओर तो वह अपने पति शमीम को वारिश ना दे पाने पर पीड़ा प्रकट करती है। वहीं दूसरी ओर वह जावेद के प्रेम में पड़कर उसे धोखा देती है। वह सोचती है "हर औरत शायद दो रूपों में जीती है। एक वह जो बाहर से दिखाई देता है दूसरा वह जिसे कोई नहीं देख पाता, इस पर वह सती कहलाती है।"¹¹ इस दोहरे चरित्र पर मेहरुन्निसा परवेज जी खुद कहती है ... कि आखो की दहलीज में मैंने औरत के मुंह पर से वह नकाब खींच लिया है, जिसे ओढ़े हुए वह सती बनने का ढकोसला करती है, सतीत्व के सनातन संस्कारों पर आघात जरूरी है; पर मैंने सफगोई से पर्दा खींच दिया तो इसमें क्या बुरा किया, देह के क्रूर सत्य को मैंने अपनी लेखनी में स्वीकारा है।"¹²

' उसका घर ' उपन्यास मध्यवर्गीय ईसाई परिवार की स्थिति को लेकर लिखा गया है। उपन्यास में नायिका ऐलमा के साथ ही भैया- भाभी, विधवा बुआ उनकी बेटी रेशमा और बच्चे हैं। यह सभी पात्र मध्यवर्ग से संबंधित है। ऐलमा एक तलाक शुदा स्त्री है। दमे की बीमारी के कारण उसका पति उसे तलाक देता है। जब तलाक की बात उठती है। तब आन्टी और रेशमा, ऐलमा के पति को अदालत में ले जाने की बात करते हैं। तब ऐलमा कहती है "ऑंटी भीख में मांगा हुआ प्यार, प्यार नहीं नफरत होता है। पति - पत्नी के सम्बन्ध हृदय से होता है। अदालत जाकर क्या करोगी ? माना मुझे तलाक नहीं दे पायेंगे, पर उस घर में अदालत जाने के बाद मेरी स्थिति क्या होगी, सोचो ? इसलिए मैंने स्वीकार कर लिया है।"¹³ ऐलमा पति का प्यार, सम्मान चाहती है, तिरस्कार नहीं, इसलिए वह बिना किसी प्रतिशोध के तलाक दे देती है।

तलाक के पश्चात वह अपने भैया- भाभी के पास रहने लगती है और भैया पर बोझ नहीं बनना चाहती है। इसलिए स्कूल में नौकरी कर लेती है वैसे उसे घर की सुख सुविधाओं से कोई लगाव नहीं था। ऐलमा बचपन से ही अपने भैया से डरती थी। वह भैया की इच्छा के विरुद्ध नहीं

जा सकती थी। क्योंकि उसके पास अब अपना कोई घर नहीं था। भैया अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए उसे साधन के अनुरूप उपभोग करते हैं। जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। भैया, ऐलमा को अपने अफसर आहूजा के साथ जाने के लिए मना लेते हैं। जिसके बदले में भैया अपना बैंक-बैलेंस और नौकरी में तरक्की बढ़ाते हैं। ऐलमा शुरू में घबराती है, भयभीत होती है, झिझकती है। किंतु उद्धार का कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। आहूजा खुश नहीं होगा तो भाई को फायदा नहीं होगा। इसलिए भैया उसको धमकाते डराते रहते हैं, अंततः वह समर्पण कर देती है। मध्यवर्गीय समाज में अर्थ के प्रति लोभ के कारण सामाजिक मर्यादाएं, परंपराएं, पारिवारिक विघटन आपसी संबंध टूटते जा रहे हैं और इसी लोभ ने एक भाई को इतना स्वार्थी बना दिया जिस भाई को अपनी बहन की रक्षा करनी चाहिए थी। वही भाई अपनी बहन के सौंदर्य का सौदा करता है। इस विषय पर डॉ. निहार गीते कहती है "समाज के धिनौने चित्र को उजागर करने के पश्चात वे यह विचार प्रस्तुत करती है कि व्यक्ति बाहर से कुछ और अंदर से कुछ और होता है। पिता - भाई यदि अपनी बहन या बेटी का ही सौदा करें तो यह कितना धिनौना रूप है। इस धिनौनेपन से नकाब हटाने में मेहरून्सिसा परवेज़ सफल हुई है।"¹⁴

ऐलमा रेशमा से अपना दुःख बाटते हुए कहती है। अब मेरा यहां दम घुटता, मैं यहां से कहीं दूर चली जाना चाहती हूँ। मुझे मद्रास से नौकरी का बुलावा आया है। भैया के कारण उसे आहूजा के काम वासना को तृप्त करने का साधन बनना पड़ा। ऐलमा अभी तक उस बात से समझौता नहीं कर पायी है। स्त्री के अपने अस्तित्व की कामना उसे भीतर ही भीतर टूट जाती है। स्त्री पराधीनता पर बिलख उठती है और कहती है "क्यों रेशमा क्या औरत, हमेशा पुरुष के नाम से ही जानी जाएगी।"¹⁵ ऐलमा के दुखों को देखकर तन मन भ्रमपूर्ण स्थिति में हो जाता है और सोच विचार करता है कि समाज का यथार्थ कहीं यह कविता तो नहीं –

"मैंने अपने को,

पहनाया तुम्हारे पाँवों में,

जूती बन,
बिछी बिस्तरे पर,
चादर बन,
कभी टंगी खूँटी पर,
तुम्हारा मुखौटा बन,
मैं बनी वस्तु,
तुम रहे भोक्ता "16

सदियों से ही मध्यवर्ग की ही नहीं बल्कि सभी वर्ग की स्त्रियां एक समान शोषण का शिकार होती आई है। मारपीट, घरेलू हिंसा और यौन शोषण जैसे जुल्मों को सहन करती हैं। वह कहीं भी सुरक्षित नहीं है घर के बाहर दफ्तर सभी जगह असुरक्षा का आभास होता है। ऐसी कोई जगह या घर नहीं जहां वे अपने आप को महफूज समझे मेहरुन्निसा परवेज़ ने स्त्री की इसी वेदना को एलमा के माध्यम से उल्लेखित किया है।

इस उपन्यास में रेशमा, एलमा के विपरीत एक साहसी युवती है। जो अन्तरधर्मीय विवाह करना चाहती है। स्वाधीन भारत में शिक्षा के व्यापक प्रसार, नागरीकरण की बढ़ती हुई गतिविधियों तथा नयी शासन पद्धति के फलस्वरूप जातिगत, धर्मगत, बंधन शिथिल पड़ते जा रहे हैं। मध्यवर्गीय परिवार के माँ-बाप अपने बच्चों की शादी अपनी इच्छा के अनुसार करना चाहते हैं। शिक्षित युवक - युवतियां अपना मार्ग अपने आप निश्चित करने में समर्थ है। आजकल की युवा पीढ़ी न सिर्फ प्रेम विवाह, अंतरजातीय विवाह अपितु धर्म की भी परवाह नहीं करते, और ना ही आर्थिक स्थिति को देखते हैं। इस उपन्यास की रेशमा हिंदू लड़के देव से प्रेम करती है। बिना-ब्याह के देव के बच्चे की माँ बनती है और पूरे समाज को चुनौती देती है। किंतु आंटी रेशमा का ब्याह किसी इसाई लड़के से करवाना चाहती है, और कहती है - " किसी भी ढोर-चमार से बच्चा जन्मा कर वह आ जाये तो क्या मैं उसे दामाद मान लूँ ! कभी नहीं!"¹⁷ पर रेशमा, देव से ब्याह माँ

के आशीर्वाद से करना चाहती है। वह देव को इस घर में दामाद का सम्मान दिलाना चाहती है, और जैसे सब लड़कियाँ अपने घर से इज्जत के साथ विदा होती है वैसे ही वह भी विदा होना चाहती है। इसे अपना हक समझती है। वह ऐलमा से कहती है "नहीं दीदी, जब तक मामा मुझे जैसे सब लड़कियाँ जाती है, विदा नहीं करेंगी, तब तक नहीं जाऊँगी। मैं मामा को इस मामले में झुका कर ही रहूँगी।"¹⁸ रेशमा को देव के साथ ब्याह करने के लिए माँ की मृत्यु तक का इंतजार करना पड़ता है।

मध्यवर्गीय समाज में आज की युवा पीढ़ी अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध अंतरजातीय या अंतरधर्मीय विवाह कर सकते हैं। जाति-पाति धर्म के झूठे आदर्शों को अस्वीकार करके विवाह के बंधन में बंधते हैं। इस उपन्यास की नारी पात्र रेशमा पुरानी पीढ़ी के मूल्यों के प्रति विद्रोह करती है। वास्तव में रेशमा और देव अंतरधर्मीय विवाह करके अपने उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए स्वतंत्रता से अपने मार्ग का चुनाव करने तथा समाज के आरोपों की उपेक्षा कर अपने वैवाहिक जीवन को आदर्शमयी बनाने में युवा पीढ़ी की योग्यता, चारित्रिक दृढ़ता एवं उसकी सोच-विचारने की शक्ति की सराहना लेखिका ने की है। न सिर्फ एक रचनाकार के रूप में उन्होंने अपनी रचनाओं में उसकी स्वीकृति दी है, बल्कि स्वयं अपने जीवन में भी उन्होंने अंतरधर्मीय परिवार में मेहरुन्निसा परवेज़ जी ने विवाह करके अपने क्रांतिकारी व्यक्तित्व का सबल प्रमाण हमारे समक्ष रखा है। उनके क्रांतिकारी सामाजिक व्यक्तित्व के प्रभाव को उनकी रचनाओं में स्पष्ट देखने को मिलता है।

'कोरज' नारी केंद्रित उपन्यास है। अरमान बी, फातमा, साजोखाला, राबिया, नसीमा और कम्मो यह सभी विपन्न मध्यमवर्गीय जीवन से संबंधित पात्र हैं। इस उपन्यास के संदर्भ में डॉ. मिनी सामुअल लिखती है- "श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज़ जी ने 'कोरजा' उपन्यास में बस्तर जिले के कस्बों के माध्यम से निम्न मध्यमवर्गीय परिवारों में व्याप्त, भूख, घुटन, पीड़ा, शोषण, सेक्स, तनाव, गरीबी और स्वार्थ आदि का वर्णन किया है। बस्तर के सामाजिक, राजनीतिक,

सांस्कृतिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन की विस्तृत जानकारी इस उपन्यास में दी गई है भले ही लेखिका ने उपन्यास में जगदलपुर और उसके आस-पास के इलाको को चुना है, लेकिन यह स्थितियाँ भारत के किसी भी गाँव या कस्बे की हो सकती है।¹⁹

रहमान खाँ मध्यवर्ग के काम लोलुप स्वार्थी अय्याशी पुरुषों का प्रतिनिधित्व करता है। जिसकी पत्नी अरमान बी उसकी इस हरकतों से परेशान रहती है। घर- बाहर के लोग अगर उन्हें समझाते तो वह साफ कह देते, "अरे खुद कुरान- शरीफ में खुदा ने फरमाया है कि मैंने तुम्हारे लिए औरत पैदा की है, खाने के लिए परिंदे और ऐश के लिए औरत। भई, जैसे एक ही कमीज तीन दिन पहनो तो बदन काटने दौड़ता है वैसे ही एक औरत के साथ कुछ दिन रह लो तो साला मुँह का मजा ही खराब हो जाता है।"²⁰ अरमान बी कि नजर अपनी बेटी फातमा पर पड़ती है। अब वह बड़ी हो रही है। वह रहमान खाँ जिनका कभी घर में पता ही नहीं रहता था। अब घर में अधिक रहने लगे है," अरमान भी वक्त की मार खाई अनुभवी औरत थी। पारखी आँखों ने ताडलिया और पति को बाज सा जा पकड़ा। वह समझ गई की अचानक लड़की की ओर बाप का प्रेम नहीं उमड़ा है, बल्कि यह मक्कार आदमी की वहशी आखों का पानी था जो घर में फुदकती नये परो की फटड़पडाती चिड़िया को एक ही बार में दबोच लेना चाहता था।"²¹ अरमान बी फातमा का विवाह जल्द से जल्द करवा देती है। रहमान खाँ के लाख मना करने के बावजूद वह पति द्वारा प्रताड़ित होती रही परंतु बेटी को बाप का शिकार बनने नहीं देती। इसीलिए रहमान खान ने बेटी के लिए मायके के सभी दरवाजे बंद कर दिए थे। फातमा जो एक बार घर से विदा हुई तो उसने कभी पलटकर घर के द्वार की तरफ नहीं देखा। फातमा की इस कि इस मजबूरी का अच्छा फायदा पति करीम मियां उठाते है। आए दिन दोनों में झगड़े होते हैं और करीम मियाँ फातमा को हमेशा ताना देते हैं कि..."तेरे मायके से कभी कोई लेने भी आता है, कि खाली झूठी शान बघारती रहती है। करीम मियाँ चारपाई पर पसरते हुए चिल्लाते।"²² फातमा एक बेटी को जन्म देती है। जिसका नाम नसीमा होता है और एक पुत्र भी होता है जो छोटी सी उम्र में मृत्यु को प्राप्त हो जाता

है। तभी करीम मियाँ दूसरी शादी करके अन्यत्र चले जाते हैं। इस दुःख से फातमा पागल हो जाती है और एक दिन उसकी सासे थम जाती है।

अरमान बी और फातमा के माध्यम से मध्यवर्गीय घुटती, कराहती, परतंत्र भारतीय नारी का मार्मिक चित्र लेखिका ने खींचा है दोनों अपने-अपने पतियों द्वारा प्रताड़ित, शोषित होती हैं। परंतु दहलीज लांगने का ख्याल नहीं लाती अपनी गृहस्थी पर दांत गड़ाये रखती है, उन्हें पता है। इसके पश्चात उनके पास कोई अन्य मार्ग नहीं है, पराधीनता ही मध्यमवर्गीय नारी को पुरुष का गुलाम बनाती है।

मध्यवर्गीय समाज की समस्त समस्याओं का मूल कारण आर्थिक अभाव है 'महाजनी सभ्यता' शीर्षक लेख में प्रेमचंद ने समाज की विषमताओं का मूल कारण धन ही माना है। "जहाँ धन की कमी-बेशी के आधार पर असमानता है, वहाँ ईर्ष्या, जोर, जबरदस्ती, बेईमानी, झूठ, मिथ्या अभियोग, आरोप, वेश्यावृत्ति, व्यभिचार और सारी दुनिया की बुराइयाँ अनिवार्य रूप से मौजूद हैं। जहाँ धन का आधिक्य नहीं, अधिकांश मनुष्य एक ही स्थिति में हैं, वहाँ जतन क्यों हो ? जब्र क्यों हो ? और व्यभिचार क्यों हो ? झूठे मुकदमे बाजी क्यों चले और चोरी- डाके की वारदातें क्यों हो ? ये सारी बुराइयाँ तो पैसे ही की देन हैं- पैसा अपने साथ बुराइयाँ लाता है, जिन्होंने दुनिया को नर्क बना दिया है।"²³ इस कथन से स्पष्ट है कि मध्यवर्गीय समाज में पैसा वह शक्ति है, जो बड़े से बड़े दुष्कर्मों, पापों पर्दा डाल सकती है। और पैसे का अभाव व्यक्ति को प्रत्येक स्थान पर तिरस्कार, अपमान और धिक्कार का पात्र बना देता है।

मध्यवर्गीय नारी की आर्थिक दुर्दशा का फायदा समाज के इज्जत दार कहे जाने वाले पुरुष किस तरह उठाते हैं। इसका यथार्थ वादी चित्रण लेखिका ने साजो खाला के माध्यम से किया है। साजो खाला विधवा तथा तीन बच्चों की माँ है। वह अपने परिवार से छत ना छीन जाये इस लिए रोज रात को जुम्न खान के यहाँ जाती है। जिसके पास नानी का घर गिरवी रखा है। क्योंकि उसने नानी से सौदा किया है, कि अगर साजो रोज रात उसके पास आयेगी तो वह उन

सब को घर से नहीं निकालेगा साथ ही किराया भी नहीं लेगा। एक औरत के लिए उसकी इज्जत से बढ़कर कुछ नहीं होता परन्तु जब बात परिवार और बच्चों की आती है, तब वह विवश हो जाती है और परिवार के खातीर ही साजो अपने तन की आहूति दे देती है। इसी लाचारी का फायदा समाज में घूमने वाले भेड़िये उठाते हैं। जुम्न खाँ मध्यवर्ग के उस वहशी दरिन्दे का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी वासना पूर्ति के आगे अपनी उम्र तक का लिहाज नहीं करता है। एक दिन रब्बो नसीमा को जुम्न खाँ के बारे में बताती है कि जो "कभी पैसे-पैसे का मोहताज था, नाना के साथ जंगल के ठेके पर जाता था, नाना का मुनीम था, पर ब्याज पर पैसा दे- देकर पैसेवाला बन गया है। साजो खाला उसकी गोद में खेलती रही उन्हीं मालकिन की बेटी जिनका उसने नमक खाया है; जिनसे तनख्वाह लेता था, आज उन्हीं की बेवा लड़की उसके ऐश का साधन बनी है।"²⁴ और आगे कहती है "एक दिन साजो खाला नानी को रो-रोकर बता रही थीं। "अम्मा वह बूढ़ा मुझे नंगी करके सारी रात खड़ा रखता है, मेरे बदन को झिझोड़ता है। मैं विरोध नहीं करूँ, इसलिए मुझे खंभे से बाँध देता है और हँसते हुए मेरे शरीर पर हाथ फेरता नोचता रहता है। पूरे सौ पावर का बल्ब जलता रहता है और मैं नंगी खड़ी रहती हूँ और वह वहशी हँसता हुआ शराब पीकर घूमता रहता है।"²⁵

इतना सब सहने के बावजूद साजो खाला के बच्चों को फीस ना जमा करने पर स्कूल से निकाल दिया जाता है और नानी भी आर्थिक आभावों के कारण हमेशा ही साजो को कोशती रहती है। उसके बावजूद साजो परिवार और बच्चों के लिए निरंतर परिश्रम करती रहती हैं। मध्यवर्ग की आर्थिक दासता ही सम्पूर्ण नारी जाती के लिए अभिशाप है, जो अनेकों संघर्षों को जन्म देती है। साजो की तरह ही देश की सैकड़ों औरतों को जाने-अनजाने में घोर सामाजिक अपराधों का शिकार बनकर अनुचित, असहाय और दर्दनाक जीवन के असहनीय बोझ को चुपचाप ढोना पड़ता है।

वहीं नानी के घर की आर्थिक स्थिति बहुत ज्यादा दयनीय है। गरीबी और लाचारी इस घर पर कुंडली मारकर बैठी है। नानी जो हमेशा फुफकाये साँप की भाँति गुस्से में रहती है। जहाँ पहले ही साजो खाला और उनके तीन बच्चे उनके साथ रहते हैं। अब नसीमा और रब्बो को देखकर वह क्रोधित हो उठती है। किन्तु बाद में उन्हें अपना लेती है।

राबिया जिसे प्यार से लोग रब्बो बुलाते हैं। जो 'चरामा' नामक छोटे से गाँव में माता-पिता की मृत्यु के पश्चात अपनी सौतेली माँ के साथ रहती है। सौतेली माँ जो बचपन से ही उस पर जुर्म करती है। घर के सारे काम-काज रब्बो से करवाती है। एक दिन सौतेली माँ के दूर के रिश्ते का छोटा भाई जमशेद आता है। जिसके साथ माँ बेबाक होकर बातें करती थी और जब कभी रात में रब्बो की आँख खुलती तो माँ के कमरे से बात-चीत करने की आहट आती तो आभाष होता की कमरे में कुछ तो ठीक नहीं होगा। रब्बो जब भी घर के कामों में लगी रहती अचानक जमशेद आकर उसे पकड़ लेता, इधर-उधर की हरकतें करता तो रब्बो सहम जाती और डरती कही माँ ने देख लिया तो क्या हर्ष करेगी। परन्तु जमशेद तो दोनों के साथ ही खेल रहा था। इसी खेल-खेल में रब्बो उसकी हवश का शिकार बन जाती है और जब रब्बो के पाँव भारी हो जाते हैं तब राज खुल जाता है। "सौतेली माँ को जब पता चला तो वह एक ईर्ष्यालु औरत बन गई। एक जादू को दोनों ने एक साथ एक समय भोगा था माँ-बेटी का रिश्ता कहा रह गया। दोनों सौत हो गईं डाह से उसका तन-बदन जल गया। औरत कभी अपनी चीज को दूसरे के पास नहीं देख सकती। पूरे चारामा में रब्बो की कहानी पहुँच गई। रब्बो को रस्सी से बाँधकर इतना मारा गया था कि सारे शरीर में ओले के निशान पड़ गए थे।"²⁶ जब बात जगदलपुर पहुँची तो उस्मान खालू रब्बो को अपने साथ नानी के घर ले आते हैं। जो पाँच महीने गर्भ से थी। नानी तो जैसे पत्थर हो गयी। रब्बो को खूब मारा पीटा, कोशा परन्तु रब्बो खामोशी से सहती रही एक दिन अचानक समय से पहले ही दर्द उठा और मरे हुए बच्चे ने जन्म लिया। अतः कुछ समय पश्चात रब्बो अपने आप को संभाल लेती है।

यहाँ रब्बो की दोस्ती कम्मो से हो जाती हैं। जिसके यहाँ रब्बो का आना-जाना बढ़ जाता है और उसी के घर उसकी मुलाकात उसके चचेरे भाई अहसान से होती है। दोनों में प्रेम हो जाता है। वहीं नानी रब्बो की शादी पैसे वाले काले रंग के अधेड़ उम्र के बूढ़े आदमी से तय कर देती है। यह बात नसीमा और कम्मो अहसान भाई को बताते हैं। वो शादी के लिये सीधा इन्कार नहीं करते बल्कि अपनी जिम्मेदारियों का हवाला देकर टाल देते हैं। तभी कम्मो नसीमा से कहती है "प्यार...प्यार...दरअसल में कुछ नहीं है नसीमा महज एक भुलावा, एक छल, उम्र की भावुकता, बस"²⁷ अहसान भाई का जवाब नसीमा रब्बो से बताती है। रब्बो को सुन कर झटका से लगता है जैसे किसी ने उंची इमारत से अचानक ढकेल दिया हो और गहरी चोट आई हो। ऐसा प्रतीत होता है और वह नसीमा से कहती है। "बस ऐसे ही खत्म अफसाने होते हैं नसीमा। अच्छा हुआ वहम टूट गया। मर्द हमेशा से बेरहमी कुत्ते रहे हैं...बस हड्डियाँ चिचोड़ना जानते हैं और कुछ नहीं"²⁸ यहां रब्बो अहसान के बच्चे की माँ बनने वाली है और वह नसीमा को लेकर अंडेवाली आपा के पास गर्भपात की दवाई लेने जाती है। अतः अंडेवाली उसे देशी दवाई देती है जिससे रब्बो का गर्भपात हो जाता है।

मध्यवर्गीय समाज की लड़कियों को किसी ना किसी कारण वश अनमेल विवाह का शिकार बनना पड़ता है। एक तो अनमेल विवाह स्वयं ही अभिशाप है। किंतु राबिया को इस अभिशाप के साथ जीना पड़ता है। निर्धन नानी...विवश, लाचार है। ना चाहते हुए भी मजबूर होकर रब्बो की शादी अधेड़, कुरूप आदमी से तय कर देती है। अतः रब्बो जब प्रेम की परिभाषा तक नहीं जानती थी तब उसे बहला-फुसला कर उसके साथ छल किया गया और जिससे सच्चे मन से प्रेम करती थी वह शादी से मुखर गया। तब राबिया हालात से समझौता कर लेती है और नानी के तय किये गये आदमी से शादी कर विदा हो जाती है।

'अकेला पलाश' यह भारतीय मध्यवर्गीय नोकरी पेशा की समस्या का वर्णन है। जिसे दोहरी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। घरेलू तथा बाहर और दोनों ही चुनौतियों में खड़ा भी

उतरना पड़ता है। अगर एक में भी चूक हुई तो जिंदगी की गाड़ी डगमगाने लगती है। विवेच्य उपन्यास में तहमीना, पौरुष हीन पति और प्रेमी तुषार यह सभी पात्र मध्यवर्गीय जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

तहमीना पी.डब्लू. डी के ऑफिस में चेयरमैन के पद पर कार्यरत है। साथ ही पति और बच्चे की जिम्मेदारियों को भी संभालती है। आजादी के बाद से ही नारी शिक्षा में सुधार के कारण आज उच्च मध्यवर्ग और शहरी निम्नवर्ग में भी नारी शिक्षा में सुधार आया है, और वह अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश कर रही है। जिसके कारण आज उन्हें अपनी छोटी-छोटी जरूरतों के लिए किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ता है। आज वह आत्मनिर्भर है। किन्तु उसके बावजूद उन्हें अनेकों मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। तहमीना अपने जीवन की जरूरतों को पूर्ण करने के लिए नोकरी करती है। किन्तु घर और नोकरी दोनों ही जगह निष्ठा पूर्वक भूमिका निभाना चाहती है और इसी कारण से वह मानसिक रूप से तनावों से ग्रस्त रहती है। एक दिन तहमीना ऑफिस के टेन्शन के कारण सुबह देर से उठती है। तो बेटे रिकू की स्कूल बस छूट जाती है, तो तहमीना पति जमशेद से रिकू को स्कूल छोड़ने को कहती है। तो जमशेद उस पर भड़क जाता है - "यह तो अब रोज होना है," जमशेद ने अखबार तह करते हुए कहा, "तुम रोज थक कर आओगी, ऑफिस की बातों को लेकर तुम्हारे दिमाग में टेन्शन रहेगी और इसी तरह रोज मिनी बस छूट जाया करेगी।"²⁹ तहमीना जमशेद से कहती है कि आपको भी तो मेरा सहयोग करना चाहिए। इस बात से रुष्ट होकर तहमीना कर जमशेद अपने कमरे में चला जाता है।

अक्सर देखा जाता है कि मध्यवर्गीय स्त्रियाँ घरेलू स्वभाव की होती हैं। वह घर के सारे काम-काज खुद करती हैं। उन्हें अपने लिए थोड़ी सी भी फुरसत नहीं मिलती। वहीं मध्यवर्ग के पुरुषों की मानसिकता संकुचित, रूढ़िवादी होती है। वैसे तो समाज में आधुनिक बनने का ढोंग तो करते हैं। परन्तु जब घर में अपनी पत्नी का हाथ बटाने की बात आती है तो पति बन जाते हैं पति ऑफिस से आकर आराम करते हैं। वहीं पत्नी ऑफिस से आकर अपने बच्चे और घर के काम-

काज में लग जाती है और सब भूखें होंगे कौन क्या खायेगा। सभी को भूख लगी होगी, पर वह इस सब में यह कभी नहीं सोचती कि उसे भी थकान लगी है। उसे भी भूख लगी है। वो तो सिर्फ अपने परिवार के बारे में सोचती है। जैसे उसे आराम करने का अधिकार ही नहीं है। वो तो रात को सोते समय भी दूसरे दिन की दिनचर्या की योजना बनाने लगती है।

मेहरुन्निसा परवेज़ जी ने मध्यवर्गीय काम-काजी स्त्री के दोहरे उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन से कैसे उबरे, इसका समाधान नाहिद बाजी के माध्यम से बताया है। वह तहमीना को समझाती है - "तुम एक हो पर तुम्हें कई की ड्यूटी निभाना है, और निभाना होगा, यह मत भूलो कि इसके लिए तुम्हें सिर्फ इतना करना होगा कि बातों को उतनी गंभीरता से न लो कि वह तुम्हें पिंच करती हुई तुम पर हावी हो जाएं। सहज बनो और सरलता से जाना सीखो तो सब कुछ आसान लगेगा।"³⁰ हमारे समाज की व्यवस्था ही कुछ इस तरह बनी है कि स्त्री की माँ का घर भी उसका अपना नहीं, ससुराल भी उसका अपना घर नहीं, तभी तो इस उपन्यास में तहमीना एक स्थान पर कहती है - "कहते हैं शादी के बाद औरत का घर हो जाता है। पर यहाँ ऐसी बात नहीं थी। जब भी घर में झगड़ा होता, पिताजी माँ को और बच्चों को घर से बाहर कर देते, चाहे भरी बरसात हो, चाहे कड़कडाती ठंड हो, किसी न किसी बहाने इधर-उधर फेके हुए पार्सल की तरह वह लोग थे।"³¹ इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि स्त्री का अपना कोई घर नहीं होता।

अचानक बहुत दिनों के पश्चात उसे उसका बचपन याद आ गया जिसमें सिर्फ कड़वाहट ही कड़वाहट थी। माँ अपनी सुरक्षा के लिए अपनी पन्द्रह वर्ष की बेटी तहमीना की शादी अपने पति की उम्र के आदमी से करवा देती है। ताकि उसके पिता को यह अहसास हो जाये वह शादी-शुदा लड़की के पिता है। अब उसकी उचित- अनउचित करतूतों का असर बेटी पर भी पड़ेगा, और वह इस काम में सफल भी रहती है। तहमीना सोचती है-"माँ को शायद जरूर बच्चों के भविष्य की चिन्ता थी, पर वह एक अनपढ़ औरत थी, जिनका दायरा सिर्फ पति के इर्द-गिर्द घूमता था। सारा जीवन उन्होंने पति को घर लौट लाने के चक्कर में ही काट दिया। हर समय अपना

स्थान छीन जाने का उन्हें भय रहा, हमेशा यह भय रहा कि पिताजी उनके स्थान पर किसी दूसरी स्त्री को न ले आयें।"³² एक औरत हर चीज बरदास्त कर सकती है, किन्तु अपनी जगह दूसरी स्त्री को बरदास्त नहीं कर सकती है।

मध्यवर्गीय स्त्रियों में प्रायः देखा गया है, वह समाज में अपना अलग स्थान बनाये रखने के लिए झूठी शान और शौकत की खातीर वह अपने पति के नाम से बंधी रहना चाहती हैं। चाहे पति कितना भी दुराचारी, अत्याचारी ही क्यों ना हो। किन्तु वह तो बस उनके नाम से ही अपनी प्रतिष्ठा समझती हैं। इसका मूल कारण आर्थिक रूप से पति पर पूर्ण रूप से निर्भर रहना है।

तहमीना ने भी धीरे-धीरे अपनी जिन्दगी के साथ समझौता कर लिया था कि जो उसकी किस्मत में था वो उसे मिल चुका है। किन्तु घर से विदा होते समय उसने भीतर ही भीतर निश्चिन्त कर लिया था। अब चाही जो हो जाए, दूबारा इस घर पर पैर नहीं रखूंगी। अब तो उसके मन में माँ के लिए घृणा भी नहीं रही। वह तो बचपन से ही समझौता करती आई है, और अपने पति जमशेद के साथ भी एक समझौता भरा रिश्ता ही निभा रही है। उस रिश्ते में कुछ और बचा भी नहीं था।

जमशेद सिर्फ नाम का पति है। वह अपनी पत्नी को पति का सुख देने में असमर्थ है, जमशेद अपनी कमजोरी छुपाने के लिए ही तहमीना से बात-बात में झगड़ा कर लेना है और एक ओर तहमीना से बात-बात में झगड़ा कर लेता है और एक ओर तहमीना का परिचय तुषार से होता है। तहमीना की वीरान जिन्दगी में ठंडी हवा का झोंका बनकर आता है और उसे भी अपने साथ उड़ने पर मजबूर कर देता है। तहमीना लाख मना करती है। वह समझाती है कि मैं किसी की ब्याहता हूँ। उसकी एक मर्यादा है। किन्तु तुषार उसकी एक नहीं सुनता और कहता है - "तुमने अपने को पत्थर मान लिया है, और अपने आपको घर के लिए, समाज के लिए ढाल लिया है, पर तुम यह बात भूल गयी हो कि तुम्हारी अपनी भी इच्छाएँ हैं, तुम्हें अपने लिए भी जीना है।"³³ तहमीना हार कर अपने को तुषार को समर्पित कर देती है। दोना का रिश्ता कुछ दिनों तक ठीक रहा किन्तु बाद में तुषार धीरे-धीरे तहमीना से दूर बनाने लगता है। तहमीना, उसके झुटे प्यार में इस

कदर अंधी हो जाती है कि समाज, मान-मर्यादा किसी की भी परवाह नहीं रहती, जैसे वह तुषार के प्यार में सब भूल चूकी है। "कितना अजीब है! पुरुष पहले औरत के पीछे भागता है, बाद में औरत को उसके पीछे भागता पड़ता है, अपना सब कुछ लुटा कर। हर युग में, हर पुरुष यही करता है और हमेशा नारी उससे छली जाती रही है। धोखा जानकर भी धोखा खाती रही है। खूबसूरत धोखा जो सिवाय आँसू और बरबादी के कुछ नहीं देता।"³⁴ तुषार तहमीना को बिना बताएं उसकी जिन्दगी से चला जाता है। तहमीना उसकी याद में आँसु बहाती है अपने को समेटते हुए कहती है। तुषार को लगता होगा मैं उसके बिना हार जाऊँगी, टूट कर बिखर जाऊँगी, किन्तु नहीं मैं अपने जीवन में वो सब हाशिल करूँगी जो मुझे करना है।

इस उपन्यास की मध्यवर्गीय नारी तहमीना का दाम्पत्य जीवन की कड़वाहट, तथा विवाहेतर संबंध का मूल कारण अनमेल विवाह को माना है। अधखिली कलियों का विवाह जबरदस्ती बूढ़े के साथ विवश होकर रहना पड़ता है। अपूर्ण आकांक्षाओं के साथ अपने भाग्य को कोसती कुंठाग्रस्त जीवन जीने के अतिरिक्त उसके पास और कोई विकल्प नहीं होता। यह मध्यवर्गीय समाज की जटिल समस्याओं में से एक है। अनमेल विवाह के दुष्परिणामों को लेखिका ने तहमीना के माध्यम से व्यक्त कर समाज की थोथी मान्यताओं पर गहरा प्रहार किया है और वह सफल भी रही है। अनमेल विवाह की समस्या को मुंशी प्रेमचंद्र जी ने उनके उपन्यास निर्मला में अंकित किया है अनमेल विवाह जैसी कुरीतियों से हमारा समाज बुरी तरह जकड़ा हुआ है। 'निर्मला' उपन्यास में अनमेल विवाह की समस्या को इस कथन द्वारा हम समझ सकते हैं, "इसका कारण यह था कि अब तक ऐसा ही एक आदमी उसका पिता था, जिसके सामने वह सिर झुकाकर, देह चुराकर निकलती थी; अब उसकी अवस्था का एक आदमी उसका पति था। वह उसे प्रेम की वस्तु नहीं, सम्मान की वस्तु समझती थी। उनसे भागती फिरती थी। उनको देखते ही उसकी प्रफुल्लता पलायन कर जाती थी।"³⁵ तहमीना की तरह आज अनेको नारियाँ अनमेल विवाह के कारण से ही वह अवैध संबंध के काटो में फसती हैं और अपने चरित्र को नष्ट करती हुई

देखी जा रही है। जिस दाम्पत्य जीवन में असमानता और प्रेमहीनता की स्थिति होती है। उस रिश्ते को निभाने में पति या पत्नी सामाजिक मान-मर्यादा, दिखावटी पन को त्यागकर, पारंपरिक नैतिकता का उल्लंघन करते हैं। इसके लिए उन्हें समाज में लांछित भी होना पड़ता है। परवेज़ जी इस संदर्भ में आधुनिक नारी की जागरूकता चेतना की प्रशंसा करती है जो पुराने मूल्यों को तोड़ती नज़र आ रही है।

अचानक कुछ सालों बाद तुषार का खत तहमीना के पास आता है। तहमीना खत पढ़कर फाड़कर फेक देती है और अकेले रहना पसंद करती है - "अब वह पहले की तरह कमजोर, लाचार, बात-बात पर रोने वाली तहमीना नहीं रह गयी थी। उसकी जगह लेली थी एक अच्छे, ऊँचे व्यक्तित्व वाली तहमीना ने, जिसके पास आज अपना बँगला, गाड़ी, फ्रिज वे सारी चीज़ें हैं। जिसके लिए वह कल तक तरसती थी, सपने संजोये थे!"³⁶ अब वह पहले जैसी सामाजिक मूल्यों में बंधनेवाली स्त्री नहीं रही बल्कि जीवन के यथार्थ को जानकर उसके बरक्स अपने आप को स्थापित करने वाली एवं सामाजिक समस्याओं से लड़ते हुए अपने आपमें स्वतंत्र नारी के रूप में हमारे समक्ष आती है, जिसे अपनी जिन्दगी में किसी पुरुष के सहारे की जरूरत नहीं महसूस होती है।

'पासंग' उपन्यास को मेहरुन्निसा परवेज़ जी ने अपनी बेटी सुमोला तथा नयी-पीढ़ी को सौंपा है। इस उपन्यास में कनी, दादी अर्थात् बुलाकी बेगम, साबरा, बानो आपा और कुलसुम ये सभी मध्यवर्गीय नारी की अनेको दुर्बलताओं का चित्रण किया है।

पासंग उपन्यास उन सभी मध्यवर्गीय तरुणियों का प्रतीक बनकर उभरता है, जो किसी ना किसी कारण से अपने को निराश टूटा हुआ पाती हैं। परिणाम स्वरूप कुंठा, निराशा, घुटन एवं वैषम्य के दमघोट वातावरण में वह दिशाहीन हो जाती हैं। वैसा ही 'बनोआपा' के साथ होता है। उसकी गलती सिर्फ इतनी थी कि वह नदिम नामक लड़के से प्रेम करती थी। नदिम वकालत पास करके वकील बनना चाहता था, जिसे परिवार में भी सभी पसंद करते थे। बानो का दुर्भाग्य ही तो

था कि देश के बटवारे में नदिम को भी पाकिस्तानी काफिले के साथ जबरजस्ती भेज दिया गया। नहीं तो दोनों खुशी-खुशहाल जिन्दगी बिताते, पर भाग्य का लिखा कौन मिटा सकता है। बानो तो बचपन से ही दुःख सहती आई है, जब वह छोटी थी तभी माँ अल्हा को प्यारी हो गयी थी। अब्बा ने दूसरा निकाह किया, पर सौतेली माँ ने उसे कभी नहीं अपनाया। जब सौतेली माँ को यह बात पता चली की बनो माँ बनने वाली है, तो उसे मार-मार कर अधमरा कर देती है। पिता ने भी बेटी का दुःख नहीं समझा बल्कि समाज की परवाह की और बानो को जगदलपुर से रशीद चाचा को बुलाकर अपनी बहन यानी दादी के पास भिजवा देते हैं। दादी बानो को देखकर कहती है - "कुएँ में ढकेल देता ? हरामी का पिल्ला जनने क्या बुलाकी बेगम का वाड़ा ही मिला !"³⁷ मध्यवर्गीय परिवार की कमजोरी सामाजिक रूढ़िवादिता का वर्णन दादी के माध्यम से देखने को मिलता है। जो एक लाचार लड़की की पीढा को समझने की बजाय अपनी शान-शौकत बचाये रखनेके लिए बानो को खरी-खोटी सुनाती है। बानो रोती-बिलखती रही कनी को समझ में नहीं आया कि सब आपा को इतना दुतत्कार क्यों रहे है पर बानो का आना कनी को अच्छा लगता है। दादी जितना बानो को छुपाकर रखना चाहती है उतना ही लोगों को उसके बारे में जानने की उत्सुकता बढ़ती है, कहते हैं ना जिस चीज को जितना छुपाओ वह चीज उतनाही और सामने आती है।

बानो आपा एक बच्चे को जन्म देती है जिसकी एक झलक भी उन्हें देखने नहीं दिया जाता है। कुलसुम के अब्बा रात के अंधेरे में एक कपड़े में लपेट कर बच्चे को कहीं ले जाते हैं। लेकिन वापस खाली हाथ आते हैं, यह देख कुलसुम कनी से कहती है "रात की काली चादर सब के बुरे काम अपनी चादर में ढाक लेती है।"³⁸ बानो अपने बच्चे के लिए बिलख-बिलखकर रोती, चिल्लाती है। उसकी आँखों से नदी की भाँति आँसुओं की धारा बहती है। उसका विलाप देख पत्थर भी पिघल जाये किन्तु दादी और चाचा का दिल नहीं पिघलता। आखिर कार हारकर बानो बेहोश होकर गिर जाती है। बानो के दुखों को देखकर कनी सोचती है, क्या इससे अतिरिक्त

भाग्य क्या मध्यवर्गीय लड़कियों का हो सकता है - "कनी का मन दुःख से विचलित हो गया था समाज का भय खानदान की इज्जत जाने कितने मजबूरों की बली लेती है समाज का चक्र कितने डरावने, दुःखद ,अनुभव करा के चुप चाप गुजर जाती है ।"³⁹ बानो आपा ने जिस बच्चे के लिए इतनी तकलीफें सही उस बच्चे को भी सब ने उनसे अलग कर दिया था । मां अपने बच्चे के लिए सारे दुःख-दर्द सह लेती है । मजूरी कर, भीख मांगकर या अपने को बेचना भी पड़े तब भी वह पीछे नहीं हटती पर यहां तो उन्हें "चोरी की सजा भी मिली और कीमती गठरी भी उनसे छीन ली गई थी ।"⁴⁰ मध्यवर्गीय समाज का भय एक परिवार की प्रतिष्ठा ने एक माँ से उसके ममत्व को छीन लिया । कनी कहती है "बानोआपा क्या आपको नहीं लगता कि आपको सब लोगों ने मिलकर धोखा दिया है, लूटा है?"⁴¹ बानो को अफसोस होता है वह कहती है "कहीं और चली गई होती तो कम से कम मेरा बेटा तो मेरे पास होता? अपनों को अपना अधिकार देकर मैं खुद ठगी गई न?"⁴² बानोआपा अपने को संभाल पाती कि तभी उन पर एक और दुःखों का पहाड़ आ गिरता है। कुलसुम आकर बताती है कि बानोआपा का निकाह दिलशान भाईजान से होने वाला है । इस बात को सुनते ही कनी सुन पड़ जाती है और उसके सामने दिलशाद भाई जान का चेहरा घूमने लगता है । काले, थोड़ी से टेढ़ी आँखें, गले का टेंटूआ बाहर निकलाबाहर हुआ है जो उम्र में भी बहुत बड़े हैं कोई काम-काज भी नहीं करते आवारों की तरह घूमते रहते हैं और कहां हुरपरी सी दिखने वाली बानोआपा एक बार नजर पड़े तो फिर हटती नहीं । क्या आपकी नसीब में यही दूल्हा था, अपने ही अपनों को इतनी बड़ी सज़ा क्यों देते हैं? क्या अपने ही अपनों को इतनी बड़ी सज़ा क्यों देते हैं? क्या दिलसान भाई बानो के लायक है? दादी कहती है - "हीरा चाहे कितना किमती हो पर उसमें उसका जरा भी खरोँच आ गई तो समझ ले, बाजार में उसका कोई मोल नहीं होता । बेदाग हीरा ही ऊँची जगह बैठता है।ऐसे ही समाज में इन्सान की इज्जत होती है।"⁴³

बानोआपा के माध्यम से लेखिका ने उन तमाम मध्यवर्गीय लड़कियों की पीड़ा को व्यक्त किया है कि आज भी लड़कियां किसी भेड़-बकरियों से भिन्न नहीं हैं । उन्हें चार दिवारी में

बांधकर रखा जाता है। उन्हें एक जोरदार झटके की आवश्यकता है जिससे उन्हें घेरने वाली दिवारें डह जायें। वह लड़कियों की आजादी चाहती है। समाज की कुरूपता को देखकर उनकी झुटी मर्यादा की खातिर न जाने कितनी ही लड़कियों की बली चढ़ा दी जाती है। आज हम इक्कीसवीं शदी में हैं और दुनिया में नये-नये कीर्ति मान स्थापित हो रहे हैं। जब बात आधी आबादी की बात पूरी दुनिया में चल रही हो, उसके उपरान्त यदि स्त्रियों की स्थिति इस प्रकार अभी भी बनी हुई है तो वह चिन्ता का विषय है। इससे मुक्ति का मार्ग ढूँढ़ना अति आवश्यक हो जाता है।

कनी दादी के कहने पर धान की रकम मँगने गणपत काका के घर जाती है। वहाँ कनी को अकेला पाकर गणपत काका उसका फायदा उठाने की चेष्टा करते हैं। लेकिन कनी चतुराई से अपने आप को बचाने में कामयाब हो जाती है। गणपत काका की करतुत के बारे में सुनकर कुलसुम विद्रोह और चेतावनी की आग से भड़क उठी थी और कहती है "उसे क्या हक है हमारी जिंदगी बरबाद करने का, और फिर यही लोग समाज के ठेकेदार बन जाते हैं, लडकी पाक, बिना दाग की चाहते हैं। बिगाड़ते भी यही लोग हैं और सजा भी यही लोग सुनाते हैं। यह कैसी दुनिया है! इन मर्दों को सारे अधिकार कसने दे दिये हैं?"⁴⁴

गणपत काका के माध्यम से लेखिका ने मध्यवर्गीय संबंधों की विसंगतियों को व्यक्त किया है कि व्यक्ति अपनी उम्र तक कि भी परवाह नहीं करता बल्कि बेटी की उम्र की लड़की पर अत्याचार करने को तैयार हो जाता है।

कुलसुम के पिता, पैसों के लोभ में आकर पैसे वाले एक बूढ़े के साथ कुलसुम का विवाह तय करते हैं। जिसकी पहली पत्नी को तपेदिक की बीमारी से ग्रसित है और वह कुछ दिनों की मेहमान है। इसलिए वह लोग कुलसुम की हर शर्त मानने को तैयार है और दहेज भी नहीं लेंगे। परिवारिक परिस्थितियों के कारण वह भी समझौते के रास्ते को अपनाती है और अपनी शर्तों पर शादी के लिए तैयार हो जाती है।

पासंग उपन्यास में लेखिका ने एक ओर मध्यवर्गीय नारी की विवशता, लाचारी, स्वार्थ, बर्बरता, सामाजिक मर्यादा और लोक-लाज चित्रित है तो दूसरी ओर मध्यवर्गीय नारी पात्रों के माध्यम से नारी जागृति की पक्षधर है। आज हमारे देश और समाज में नारी जागृति की आवश्यकता है, और समाज की प्रत्येक स्त्री की अपनी क्षमता को पहचानना होगा, उन्हें जागना होगा। उन्हें सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा। जो अपने दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास से एक सभ्य समाज का निर्माण कर सके। जिससे समाज में पनप रहे बुराईयों का स्वयं अंत करे। हर नारी को स्वयं चेतना होगा, जिससे समाज को नई दिशा मिल सके।

'समरांगण' उपन्यास में मध्यवर्गीय दाम्पत्य जीवन में तनाव देखने को मिलता है। नायिका सुहासनी का पति पहले उसे बहुत आदर प्रेम से रखता है। पंडित गोपीलाल दिल्ली में एक मिठाई की दुकान चलाते हैं। दिल्ली में दंगों के कारण दोनों पति-पत्नी बच कर भाग निकले हैं। दोनों नर्मदा तट आ पहुंचते हैं, वहाँ पहली बार गोपीलाल की मुलाकात बूँदाजान से होती है। एक मध्यवर्गीय व्यक्ति धन, दौलत, संपदा पाकर किस प्रकार स्वार्थी, अय्यास, बुद्धि हीन हो जाता है। उसका जीवंत उदाहरण गोपीलाल के माध्यम से देखने को मिलता है। गोपीलाल नर्मदा की शरण में आकर एक रईस व्यक्ति बन जाते हैं। अब उनके पास धन, दौलत, हवेली सब कुछ है वह मशहूर व्यक्ति बन गये थे। अंग्रेजों की तरफ के सभी मुकदमे गोपीलाल करने लगे थे। गोपीलाल, बूँदाजान से बिना ब्याह किये उसके साथ पति-पत्नी की तरह रहते हैं। बूँदाजान उसके बच्चे की माँ बनती है। पत्नी सुहासनी के सामने बूँदाजान का भेद खुलने नहीं देता। सुहासनी मध्यवर्गीय परंपरागत नारी के रूप में रह जाती है। उसे बूँदाजान के बारे में सब कुछ पता होता है, किंतु अंजान बने रहना ही सही समझता है। पति और बेटे के सौभाग्य के लिए जीवन भर अकेले जीवन जीने का दुर्भाग्य ढोती रहती है। घर में इतनी सुख सुविधाओं के बावजूद वह घर में पुराने सामान की भांति पड़ी रहती है, किंतु उसने कभी विद्रोह नहीं किया, यह सोचकर वह कुछ नहीं कहती कहीं पति उसे पत्नी के सम्मानित पद से भी वंचित ना कर दे। उसकी जगह बूँदाजान को पत्नी बनाकर

घर में ना ले आए। इस डर से वह जीवन भर दुःख सहती रही। जब पैसे का अभाव था तो एक साड़ी को तरसती रही, पर जब आज भाग्य ने धन ही धन खड़ा कर दिया है, लेकिन वह पति के प्रेम से वंचित हो जाती है। इतना सब सहन करने के बावजूद वह किसी के सामने कभी अपने दुःख को प्रकट नहीं करती ना ही घर में कभी कलह करती है।

जब सुहासनी की बहू बूँदाजान के बारे में पूछती है और विरोध करने को कहती है। तो सुहासनी कहती है - " सिर्फ बूँदाजान का ही नहीं, पति के हर संबंधों के बारे में पता है।"⁴⁵ वह और कहती हैं " बहू, तुम्हें एक बात बताऊँ विरोध करने से पुरुष के भीतर का पशु कभी नहीं सुधरता, बल्कि वह अधिक भड़कता है। ऐसे लोग अपने चक्रव्यूह में फँसकर खुद मरते हैं, अधिक चतुर व्यक्ति का ऐसा ही अंत हुआ है।"⁴⁶ सुहासनी का पति उससे जिस तरह का व्यवहार करता था, बेटा उससे कम नहीं था। सुहासनी और बहु पृथा दोनों परंपरागत नारी का अनुकरण करने वाली है। सुहासनी जीवन भर पति के सभी कुकर्मों को जानते हुए भी कुछ नहीं करती है और अंदर ही अंदर तड़प कर मर जाती है। वह पति के वैभव, सामाजिक मर्यादा, सार्वजनिक स्वार्थों के लिए सुहासनी अपनी बली चढ़ा देती है। जिस दिन सुहासनी की मृत्यु हुई उस दिन पति-बेटा दोनों ही काम के सिलसिले में बाहर गए हुए थे। तीन दिन के इंतजार के बाद बिना उन दोनों के अंतिम संस्कार कर दिया गया। लोग उसकी किस्मत के बारे में कहते हैं - "देखो कैसी अभागिन निकली बेचारी, पति और बेटे का मुँह भी नहीं देख पाई।"⁴⁷ "बिना किसी रोष, असंतोष के वह पति की अवहेलना का विष पी गई थीं। वह तो पहली बार इस राजसी-वैभव वाली कोठी की कैद से मुक्त हो पाई थी। सोने का बना, हीरों से जड़े इस पिंजरे की कैद से स्वतंत्र हो पाई थीं। जिस पति ने पूरे जीवन उन्हें अपने पैरों तले रौंद- रौंदकर प्रतिष्ठा का सिंहासन पाया था, उसे इतना भी अवसर नहीं दिया कि वह अपना कर्तव्य निभा सकता। उनकी धिक्कृत देह पति और पुत्र मुखाग्नि के कर्तव्य से भी मुक्त कर चली गई। वह एक वीरांगना थीं। सारी उम्र

जीवन का युद्ध लड़ते मृत्यु विजय पा गई थीं। सारी उम्र अपने भीतर के कला और अंतर्द्वंद को बिना प्रकट किए संसार से विदा हो गई थीं।"⁴⁸

इस उपन्यास में मेहरुन्निसा परवेज़ जीने धन लोलुप व्यक्ति अपने जीवन मूल्यों को किस प्रकार भूल जाता है, तथा धन दौलत संपदा के मोह-माया में पड़कर व्यक्ति अपने कर्तव्य से किस प्रकार वंचित रह जाता है। जिसका जीवंत चित्रण गोपीलाल के माध्यम से किया है। सुहासिनी तथा पृथा के घर में दौलत-शोहरत कोई कमी नहीं थीं, उसके बावजूद पति द्वारा उपेक्षा ही मिलती है। दोनों सास-बहू एक जैसा ही जीवन जीती हैं। दोनों की सुंदरता के सामने सब बेकार है किंतु उसके बावजूद गोपीलाल बूँदाजान के मोह में फँस जाता है, और बेटा मोहन विदेशी औरतों से संबंध बनाता है। दाम्पत्य जीवन में पवित्रता नहीं, सत्यता नहीं, तो जीवन का, बंधन का, कोई मोल नहीं रह जाता। दुनिया में सभी लोग एक दूसरे को छलते हैं, किंतु इतनी बड़ी सामाजिक व्यवस्था के बावजूद किए गए रिश्तों में भी यदि छल-कपट का विवाद आ जाए तो इतना सब करने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। सामाजिक बंधनों के बाद भी यदि धोखा मिलता है तो मनुष्य और प्राणी में कोई फर्क नहीं रह जाता है।

'सिर्फ एक आदमी' इस कहानी की मेहरुन्निसा परवेज़ जी ने मध्यवर्गीय लड़की सुमी की मनोदशा का चित्रण किया है। सुमी अपने पिता से डरती है। उसकी पाँच बहने हैं सुमी के लिए कितने रिश्ते आते हैं पर सुमी के पिता पैसे के खर्च के डर से मना कर देते हैं। सुमी की माँ और उसकी सभी बहने बप्पा से डरती है क्योंकि बप्पा उन्हें किसी ना किसी बहाने पीटते रहते हैं सुमी अपने प्रेमी अतुल को बताती है कि बप्पा ने सभी कमरे किराए पर दे दिये हैं हम लोग यहां बहुत परेशानी में जी रहे हैं। सुमी कहती है- "अब तो मैं हर सुबह जब उठती हूँ तो डर लगता है कि कहीं माँ ने आत्महत्या ना कर ली हो जाने क्यों, बप्पा ऐसे हो गए हैं सारे घर में उनका आतंक छाया रहता है।"⁴⁹ सुमी के अपने सपने, इच्छाएँ सब दब से गये हैं, बप्पा के दहशत से, मार से, गालियों से सभी डरे-डरे हुए घर में रहते हैं वह कहती है। "अतुल इस भीड़ भरे घर में इतनी जगह नहीं जहाँ

हम बैठकर अपने भविष्य, अपने सुखद सपनों के बारे में सोच सकें। हमसे हमारे विचार, हमारी आजादी तक छीन ली गई है। भला इसे कोई घर कहेगा? हम इंसान हैं, हमें पूरा हक मिलना चाहिए न,"⁵⁰ सुमी और अतुल दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं लेकिन सुमी अपने सनकी पिता के आतंक के कारण उनकी मर्जी के खिलाफ जाकर विवाह करना नामंजूर करती है। मध्यवर्गीय स्त्रियों के बारे में डॉ. विजय वारदा जी कहते हैं "आर्थिक संपन्नता शिक्षा की सुविधाएँ, वेश-भूषा, रहन-सहन में चाहे जितनी आधुनिकता आयी हो पर बौद्धिक स्तर पर यह आधुनिकता आ नहीं पाई है, यह एक कटु सत्य है। विशेषतः भारतीय परिवारों में सारी सुविधाओं के बावजूद स्त्री, पुरुष द्वारा नियंत्रित और आतंकित है जहाँ जरूरी है वहाँ भी विद्रोह करने की उसकी हिम्मत नहीं है। कई बार तो यह देखा गया है कि अशिक्षित और गरीब स्त्रियों में जो हिम्मती होती है, वैसी हिम्मत संपन्न या मध्यवर्ग की पढ़ी-लिखी स्त्रियों में नहीं होती।"⁵¹ इसलिए सुमी अतुल से कहती है "अतुल, क्या तुम बप्पा की मौत तक इन्तजार नहीं कर सकते? "जिस दिन बप्पा मारेंगे, मैं तुम्हारे पास चली आऊँगी, बस।"⁵²

यहाँ लेखिका ने मध्यवर्गीय शिक्षित लड़की की मनोदशा को उल्लेखित किया है। जिसकी भावना पर सामाजिक मर्यादा का पहरा है, जो पिता के सभी अत्याचारों को सहती है। किन्तु सुमी घर की दहलीज़ लाँघकर अतुल से विवाह करने की हिम्मत नहीं है और इसलिए बप्पा की मृत्यु का इंतजार करती है।

'अपने-अपने दायरे' कहानी में मेहरुन्निसा परवेज़ ने पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में मध्यवर्गीय नारी जीवन का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न दाम्पत्य जीवन से संबंधित है। जो स्त्री पुरुष पति-पत्नी के आपसे संबंधों पर आधारित है। पति-पत्नी का आपसी संबंध भारतीय धर्म और संस्कृति में पवित्रता के उच्च शिखर पर विराजमान है। पत्नी के जीवन की सार्थकता पति के प्रेम और उसके विश्वास में निहित है। कहानी में माया अपने मायके आती है वह अपने माँ-बाबूजी के संबंध में बदलाव देखकर दुखी हो जाती है। दोपहर में माँ उसे बाबूजी के बारे में बताती है, अब वह घर में

तनख्वाह नहीं देते कुछ पैसे ही खर्च के लिए नौकरों के हाथ भिजवा देते हैं। जरूरत पड़ने पर गहने गिरवी रखकर घर का खर्च चलाती हूँ, मेरी साड़ी फटने पर भी दूसरी नहीं लाते। पर आया के लिए हमेशा नयी-नयी साड़ी लाकर देते हैं। माया माँ को देखकर सोचती है "बिल्कुल पति की तरफ से ऊबी हुई एक नारी, जो सामने सब कुछ देखकर भी आंखें बन्द कर लेती है। जैसे सामने वाले से कोई संबन्ध न हो, कोई रिश्ता न हो।"⁵³ माँ-बाबूजी एक घर में रहते हुए भी दोनों अपनी अलग-अलग जिन्दगी जीते हैं। रात को सोते समय माया के कान में कुछ खटकने की आवाज सुनाई देती है। तभी वह रजाई को सरकाकर देखती है - "बाबूजी के टार्च की रोशनी को पहले आमों के झुटफूट में, फिर नौकरों के क्वार्टरों की तरफ जाते देखती रही, महसूस करती रही, क्या माँ जाग रही है? हे ईश्वर, बाबूजी इतने बड़े अफसर होते हुए भी नौकरो के क्वार्टर के पास छिः छिः और उसकी आंखों से दो आंसुओं की बूंद रेंगती निकली और रजाई में खो गयी।"⁵⁴

सुबह माँ-बाबूजी उसे स्टेशन छोड़ने जाते हैं वह बड़ी मुश्किल से अपने आँसुओं को रोकती है। वह सोचती है मुझे छोड़ने के बाद वह फिर अपने-अपने दायरे में व्यस्त हो जायेंगे। लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से अंकित किया है कि पति-पत्नी के रिश्ते में कोई एक भी अपनी मर्यादा लांघता है तो संबंधों में शून्यता व्याप्त हो जाती है।

'चमड़े का खोल' कहानी में मेहरुन्निसा परवेज़ ने ग्रामीण निम्न मध्यवर्गीय समाज में व्याप्त वैवाहिक संबंधों तथा रीति-रिवाजों का चित्रण किया है। ग्रामीण निम्न मध्यवर्गीय समाज में पति-पत्नी के बीच तालमेल न बैठने, या अन्य परिस्थितियों में दूसरा विवाह करने या अन्य स्त्री या पुरुष को अपनाने का प्रचलन है इस वर्ग में समाज क्या कहेगा ? उसका डर नहीं होता। इस वर्ग में एक पत्नी के होते हुए दूसरी पत्नी को भी रखा जा सकता है। इस कहानी में बाबूजी की पहली पत्नी को दर्मे की बीमारी हो जाती है तभी से बाबूजी नयी माँ के साथ गाँव में रहने लगते हैं। बेटी शुभी अपने मायके आती है तब माँ उसे बताती है कि "इनका क्या है, महीने के एक हफ्ता यहाँ रहते हैं, सारा घर का सामान घेर कर चले जाते हैं, हाथ खर्चे को कुछ रुपये दे जाते हैं, वह भी

किसी दिन बन्द कर देंगे तो हम माँ-बेटे को आत्म-हत्या की नौबत आ जायेगी।"⁵⁵ निम्न मध्यवर्गीय परिवारों में आर्थिक विपन्नता के कारण बेटी का आना भी एक पिता को अच्छा नहीं लगता। शुभी जब मायके आती है, तब उसे महसूस होता है " शादी के बाद भी वह बाबूजी पर भार है कपड़ा देना पड़ता है इसलिए बाबूजी उसके आने पर खुश नहीं होते। जैसे उसके और बाबूजी के बीच में कपड़े की दीवार है।"⁵⁶ उसे बहुत दुख होता है माँ उसे समझाती है बेटा अपने बाबूजी की किसी बात का मलाल मत करना मेरे जीते-जी मायका मत छोड़ना "मैं अपनी चमड़ी के भी कपड़े बनवाकर अपने बच्चों को पहना सकती हूँ"⁵⁷ शुभी, मां की बातें सुन करती है "विदेशों में अच्छा रहता है, कोई किसी से बंधा नहीं रहता, अपने यहां मायके जाने का सिस्टम बहुत बुरा है, बन्द कर देना चाहिए, है न ?"⁵⁸ इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने दर्शाया है कि निम्न मध्यवर्गीय परिवार के लोग रीति-रिवाज एवं रूढ़ी परम्पराओं में आस्थावान होते हैं। वे अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद उनसे अलग नहीं रह सकते। इस वर्ग में बेटी जब मायके आती है तो उसे कपड़े भेट देने का रिवाज है इसी परंपरा के कारण शुभी और उसके बाबूजी के बीच दूरी आ जाती है। किंतु आर्थिक अभाव में यह प्रथा संबंधों को बोलबाला बना देती है।

'तीसरा पेंच' कहानी में लेखिका ने मध्यवर्गीय पुरुष की मानसिकता तथा नारी देकर आकर्षण का अंकन किया है। कहानी के नायक प्रो. देव जो पहली पत्नी को तलाक दे चुके हैं, और दूसरी पत्नी की उसके प्रेमी ने हत्या कर दी। यह सब जानते हुए भी तीसरी स्त्री उस पर आकृष्ट हो जाती है। एक दिन वह देव से मिलने उसके घर पहुंचती हैं। तो उसके बाथरूम में अन्य स्त्री के कपड़े देखकर और देव के आचरण को देखकर उसको बहुत अजीब लगता है तब वो वहाँ से उदास होकर जाने लगती है, तो देव कहता है - "प्रसन्नता इस बात की है कि तीसरी गली पर अब अपना आखिरी मकान बनेगा।"⁵⁹ यहां इस तरह से स्त्री को तीसरा पेंच समझ में आ जाता है, और वह देव की जिंदगी से हमेशा के लिए चली जाती है।

मध्यवर्गीय शिक्षित काम-काजी स्त्री आज भी विवाह संदर्भ में अपना अलग दृष्टिकोण रखती है। स्वावलंबी होने के कारण अब उन्हें किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता है। आज की नारी पुरुष के गलत आचरण के प्रति विद्रोहशील है तथा आवश्यकता पड़ने पर उससे संबंध तोड़ लेती है तीसरा पेंच कहानी में मेहरुन्सिसा परवेज ने तीसरी स्त्री के माध्यम से पुरुष की नैतिकता को ललकारा है और स्त्री ने उसके आचरण को देख कर उसे नकारा है।

'एक और सैलाब' मेहरुन्सिसा परवेज ने इस कहानी में निम्न मध्यवर्गीय एक ऐसी महिला का वर्णन किया है। जो बेबस होकर अपने ही पति को मार देती है। इस कहानी की नायिका नीलू है जिसका पति चार-पांच बीमारियों से ग्रसित है। नीलू बच्चों की देखभाल के साथ ही अस्पताल में दाखिल पति के लिए अस्पताल के चक्कर काटती रहती है। उसे ज्ञात होते हुए भी कि अब उसका पति कभी ठीक नहीं होगा, फिर भी उसकी सेवा देख-रेख निष्ठा भाव से करती है। किंतु भागदौड़ करते-करते अंदर से टूट जाती है और इस भागदौड़ के दरमियान एक दिन नीलू की मुलाकात उसके पुराने दोस्त उमेश से होती है। उमेश नीलू के साथ उसके घर जाता है, नीलू के बच्चों को देख कर उसे तरस आती है। एक बार फिर उमेश, नीलू के घर आता है, जहाँ पता चलता है की नीलू के पति की मृत्यु हो गयी है। उमेश अस्पताल जाकर नीलू के दुखों को कम करने की कोशिश करता है। तभी नीलू उसके समीप आकर करती है- "उमेश ""? " सहसा वह चुप हो गई और उसके पास आ गई," मैंने ही उन्हें नींद की गोलियां ज्यादा दे दी थी। मैं बहुत मजबूर हो गई थी उमेश। भागदौड़ करते-करते मैं थक गई थी इसके आगे प्रश्न न करना।"⁶⁰ नीलू की बात सुनकर उमेश आवाक सा रह जाता है और उससे दूरी बना लेता है।

यहाँ लेखिका ने नीलू के माध्यम से निम्न मध्यवर्गीय नारी की दोहरी मानसिकता का चित्रण किया है। एक ओर संघर्ष करती है, जानते हुए कि पति अब कभी ठीक नहीं होगा, फिर भी अस्पताल के चक्कर लगाती है। दूसरी ओर नारी की मानसिक कठोरता का वर्णन देखने को

मिलता है। जहाँ आर्थिक विपन्नता और बच्चों के भविष्य को सामने देखकर जिन्दगी से हताश होकर वह खुद अपने पति को नींद की गोली देकर मार देती है।

'अकेला गुलमोहर' कहानी में लेखिका ने मध्यवर्गीय परिवारिक विघटन को प्रस्तुत किया है। इस कहानी की नायिका 'सुधा' दो भाई, भाभी और पिता के साथ संयुक्त परिवार में रहती हैं। नौकरी करती है, और प्रति माह दो सौ रुपये बड़े भइया को देती हैं। भइया और उनकी पत्नी दोनों ही नौकरी करते हैं। छोटे भइया अकेले ही कमाते हैं। इसी कारण बड़े भइया को लगता है वह घर की जादा जिम्मेदारी निभा रहे हैं। एक दिन भइया अपने छोटे भाई को घर से निकाल देते हैं। घर छोड़ते समय छोटे भैया चिल्लाते हुए कहते हैं - "ठीक है मैं कल घर से अलग हो जाऊंगा, पर याद रखो भइया तुम" "तुम कसाई हो। तुम चाहते हो हर आदमी कमाकर लाये तो खाये। इसलिए तुमने सुधा की शादी नहीं की। सुधा दूसरे के घर चली जाएगी तो बंधे हुए दो सौ कौन लाकर देगा?"⁶¹ छोटे भइया को जाते हुए दृश्य को देखकर सुधा सोचती है "जाने कितने सालों से सब इकट्ठे रह रहे थे। अमीरों के यहाँ जायदाद का बंटवारा होता है पर मध्यम परिवार वालों के यहाँ अपने सुखों का बंटवारा होता है।"⁶² कुछ समय के पश्चात सुधा अपने और उमेश के रिश्ते की बात करने भइया के पास जाती है। तभी भैया उसकी बात सुनकर नाराज होकर वहाँ से चले जाते हैं। सुधा को महसूस होता है क्या भइया सचमूच सिर्फ दो सौ रुपये के लिए ब्याह की स्वीकृति नहीं देते।

मेहरुन्निसा परवेज ने इस कहानी में मध्यवर्गीय परिवारों में किस तरह से परिवार बिखर रहे हैं, उसका चित्रण किया है। आज मध्यवर्गीय परिवारों में पैसे का महत्व रिश्तों से अधिक दिया जाता है, इसी कारण परिवार बिखर रहे हैं। आपसी संबंधों में अपनत्व कम और खटास अधिक देखने को मिलता है। पैसा इस कदर हावी हो चुका है कि एक भाई के लिए उसकी बहन का ब्याह घाटे का सौदा लगता है।

'बंजर दुपहर' मेहरुन्निसा परवेज ने इस कहानी में मध्यवर्गीय दांपत्य जीवन की नीरसता तथा एकाकीपन को प्रस्तुत किया है। राजेंद्र और सपना दोनों पति-पत्नी है। मध्यवर्गीय व्यक्ति अपनी रोजमर्रा की प्राथमिक जरूरतों को पूर्ण करने के लिए नौकरी तथा अन्य काम-काज में इतना व्यस्त हो जाता है कि वह अपनी पत्नी और परिवार वालों को समय नहीं दे पाता इसी कारण से उनके आपसी संबंधों में नीरसता उत्पन्न हो जाती है। बंजर दोपहर कहानी में मध्यवर्गीय पुरुष राजेंद्र अपनी प्रोफेसर की नौकरी में इतना व्यस्त हो जाता है कि पत्नी सपना को अधिक समय नहीं दे पाता है, सपना उसी खुंद में और चिड़चिढ़ी हो जाती है। चार-पाँच साल की शादी में सपना अकेले पन से ग्रसित हो जाती है, और इसीलिए वह अपने जीवन साथी को बदलना चाहती है और कहती है "ठंडापन, खिजलाहट, सीलन जैसे, दोनों एक दूसरे की जरूरत को मजबूरन पूरी कर रहे हैं शायद इसी वातावरण से बचने के लिए विदेशी अपना पार्टनर बदलते रहते हैं।"⁶³ किंतु मध्यवर्गीय समाज में जहां उन्हें बचपन से ही परंपरागत संस्कार दिये जाते हैं। हमारे समाज की मान्यता है कि पति-पत्नी के आपसी कलह से परिवार का सुख चैन तो खोता ही है साथ ही घर की प्रगति भी रुक जाती है। जहाँ परंपराओं एवं मान्यताओं का पालन करते हैं, वही मध्यवर्गीय नारी पार्टनर बदलने वाली बात सोच तो सकती है, किंतु उसके लिए साथी बदलना इतना आसान नहीं।

'भोगे हुए दिन' निम्न मध्यवर्गीय परिवारों में बेटियां शिक्षा से वंचित रह जाती हैं अधिकांश परिवारों में बेटों को स्कूल पढ़ने भेजा जाता है। वहीं बेटियां घर कामों में मां और परिवार के लोगों की सहायता करती हैं 'भोगे हुए दिन' कहानी में सात साल की सोफिया घर पर बैठी लड़की लकड़ियाँ बेचती है। उसका भाई जावेद तीसरी में पढ़ता है। व्यक्ति देखता है कि "सोफिया बड़े ही सधे हाथों से तराजू पर लकड़ियां चढ़ा रही थी। मुझे आश्चर्य हो रहा था सात साल की लड़की को भी समय ने कितना निपुण बना दिया था।"⁶⁴ किंतु आज की स्थिति बिल्कुल विपरीत हो चुकी है। विवाह संस्था में भी शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। आज कल के युवक भी

पढ़ी-लिखी कन्या से विवाह करना पसंद करते हैं क्योंकि जीवन सुधारने और आर्थिक स्तर पर मजबूत बनने में दोनों को काम करना आवश्यक है इक्कीसवीं सदी में भी कई परिवारों में युवतियां शिक्षा के अभाव में अपना जीवन जीने के लिए विवश है।

'खाली आँखों की पीढ़ा' कहानी में मेहरुन्निसा परवेज ने मध्यवर्गीय समाज में व्याप्त वैवाहिक संबंधों में अविश्वास को चित्रित किया है। पति-पत्नी दोनों एक दूसरे पर विश्वास नहीं रखते, दोनों अजनबियों की तरह अपना जीवन गुजारते हैं। माँ अपनी बेटी से कहती है "उमा, मैं हर महीने थोड़ा-थोड़ा पैसा जोड़कर जेवर खरीदने लगी हूँ, बुढ़ापे में आदमी मुझे धक्के देकर घर से निकाल देगा। तेरा ही एक सहारा है, लड़का होता तो उसी के घर पड़ी रहती।"⁶⁵ उमा जब अपने मायके आती है तब माँ बाबूजी दोनों अपनी बेटी से एक दूसरे के प्रति संदेह की बातें कहकर मायूस हो जाते हैं। उमा के बाबूजी कहते हैं "उमा मुझे अपने बुढ़ापे में डर लगता है मुझे यह औरत कभी भी जहर देकर मार देगी, रिटायर्ड होने के बाद तो मैं गाँव जाकर रहूँगा। हाँ, अपनी माँ को तू अपने साथ ले जाना, हम दोनों तब साथ तो रह नहीं सकेंगे।"⁶⁶ यहां उमा अपने माँ-बाबूजी दोनों की स्थितियों को अकेले सम्भालती है और बेचैन, परेशान हो उठती है, और सोचती है। "माँ को जहर देना ही था तो क्या अब तक नहीं दे सकती थी? बाबूजी को कौन समझाये? समझने बैठो तो वह कहेंगे माँ की तरफदारी करती है, उसकी तरफ से बोलती है!"⁶⁷

मध्यवर्गीय पति-पत्नी के आपसी संबंधों का आधार विश्वास पर टिका है। दोनों के बीच मानसिक समझौते की भावना होती है। उसके समाप्त हो जाने से ही विवाहित जीवन में दरार पड़ जाती है पति-पत्नी के मन में एक दूसरे के प्रति अविश्वास की भावना दाम्पत्य जीवन में जहर घोल देती है।

'जाने कब' कहानी में मेहरुन्निसा परवेज ने मध्यवर्गीय अशिक्षित लड़की शन्नो की व्यथा का चित्रण किया है। शन्नो से छोटी-छोटी उम्र की सभी लड़कियों का विवाह हो जाता है। किंतु शन्नो का विवाह उसके अशिक्षित होने के कारण नहीं होता, इसी दुःख से शन्नो अपने घर में

छिप-छिपकर आँसु बहाती है। अब तो लड़के वाले शादी के लिए मुंह पर मना कर देते हैं और कहते हैं "मियां, आजकल के लड़के पढ़ी-लिखी लड़की ढूंढते हैं जो बराबरी में बैठकर सिनेमा देख सके। कम से कम मेट्रिक तो होना निहायत जरूरी है, वरना जानवरों में और लड़कियों में, लड़के कोई फर्क नहीं समझते।" फिर जरा धीमे होकर मुंह को पास लाकर बोले, "अरे जानो मियां, वह शेखू की लड़की को देखते हो, काला ठीकरा रखी है; पर एम.ए.पास थी, तो प्रोफेसर को फंसा लिया।"⁶⁸

आज मध्यवर्गीय समाज में विवाह के लिए पढ़ी-लिखी लड़कियों को अधिक प्राथमिकता दी जा रही है। जिससे पढ़ी-लिखी लड़की समाज के कार्यों में सहयोग कर सकेगी। परिवार को सुचारू रूप से चला सकेगी। उसे किसी पर आश्रित नहीं रहना पड़ेगा। किंतु आज भी कई मध्यवर्गीय परिवारों में शन्नो की भाँती लड़कियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता रहा है। उन्हें चूल्हा-चौका तक ही सीमित रखकर उन्हें उनके अधिकारों से वंचित किया जा रहा है। अशिक्षित नारी ना तो स्वयं का विकास कर सकती है। ना ही परिवार, या समाज के विकास में अपना सहयोग दे सकती है। इसलिए आज समाज में लड़कियों की शिक्षा पर अधिक जोर दिया जा रहा है और आज वह शिक्षित हो भी रही है। जिससे हमारा देश प्रगति के पथ पर आगे बढ़े।

'विद्रोह' कहानी में लेखिका ने मध्यवर्गीय लड़की की मानसिकता को भली-भाँति चित्रित किया है। इस कहानी की नायिका 'नीना' एक अविवाहित काम-काजी लड़की है। परिवार में कमाने वाली अकेली लड़की है। अपनी कमाई से पूरे घर का खर्च चलाती है माँ हमेशा घर की एक-एक परेशानी और खर्चों के बारे में नीना को बताती है, जैसे अब उनका नीना से सिर्फ पैसों का ही संबंध रह गया हो? माँ की बातों से नीना का सिर और फटने लगता है, और वह कहती है "ऐसा भी क्या जीना है, इससे तो अच्छा है, सब कुएं में कूद जायें। भगवान या तो सबको गरीब बनाये या अमीर, पर ये बीच वाले तो बे मौत मरते हैं, न खाते बनता है, न उगलते।"⁶⁹ नीना के ऑफिस में एक-एक करके सभी लड़कियों का विवाह हो जाता है किंतु उसके घर में उसके विवाह

का जिक्र भी नहीं होता। वह अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त होना चाहती है। इसलिए वह ऑफिस में त्यागपत्र पद देने का निर्णय लेती है। तभी उसके कमरे में बाबूजी आते दिखे और नीना के समीप आकर कहते हैं "बेटा डॉक्टर ने कह दिया, नए चश्मे से भी कुछ नहीं होगा। ऑपरेशन ही करना होगा, वरना मैं अंधा हो जाऊंगा।"⁷⁰ बाबूजी की विवशता देख वह त्यागपत्र के टुकड़े-टुकड़े कर देती है।

इस कहानी के अंतर्गत लेखिका ने निम्न मध्यवर्ग की परेशानियों का मूल कारण आर्थिक तंगी को माना है। आर्थिक तंगी के कारण ही घर का वातावरण घुटा-घुटा रहता है। माँ-बेटी का रागात्मक संबंध आर्थिक मजबूरियों के कारण बोझ बन जाता है। निम्न मध्यवर्गीय परिवारों की आर्थिक विवशता और संबंधों की रागात्मकता का कसाव इस कहानी में देखने को मिलता है। वहीं दूसरी ओर निम्न मध्यवर्गीय माता-पिता के स्वार्थ को उजागर किया है। नीना का विवाह उसके माता-पिता इसलिए भी नहीं करना चाहते क्योंकि उनकी आवक का जरिया ही खत्म हो जायेगा।

'बंद कमरों की सिसकियाँ' कहानी में लेखिका ने मध्यवर्गीय नारी के बांझपन की समस्या का वर्णन किया है। मौना और शंकर पति-पत्नी हैं दोनों की जिंदगी में औलाद की कमी है। इसलिए दोनों समाज से कटकर रहते हैं। जो महिला माँ नहीं बन सकती है, उसे कलंकिनी बांझ यहां तक कि अन्य महिलाएं सुबह-सुबह उसका चेहरा तक नहीं देखती बल्कि अपमानित और प्रताड़ित करती है। एक दिन मौना औरतों की भीड़ के साथ हिम्मत कर मिस्टर राय के झूले में बच्चे के पास शगुन करने गई, तो उसकी सास ने उसे टोका, "अरे ! तुम नहीं, शगुन बच्चों की माँ करती है।"⁷¹ वह सबके बीच सहम कर रह जाती है। आखिरकार उसका अपराध ही क्या है। जो उसे यह अपमान हर बार सहन करना पड़ता है, यूँ भरी महफिल में भरे समाज में अपमानित और तिरस्कृत किया गया। बांझ नारी की बेबसी का जीवंत चित्रण जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविता 'सोनचिरई' में व्यक्त है

"ननद कहने लगी ब्रजवासिन

सास कहने लगी बाँझ

और जो रात-दिन समाया रहा उसमें

साँसों की तरह

उसने कहा तुम्हारी स्वर्ण देह किस काम की

अच्छा हो तुम गृह छोड़ दो

तुम्हारी परझाँई ठीक नहीं होगी हमारे

कुल के लिए"⁷²

उसके और शंकर का ब्याह हुए कई वर्ष बीतने के बावजूद कोई संतान नहीं हुई। जब वह छोटी थी तब भी पड़ोस के गंदे बच्चों को दिन-भर टांगे रहती थी। खेल भी खेलती तो हमेशा माँ बनती और पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़ों से बच्चा बनाया करती थी। जवानी में जब भी सपने आए तो वह प्रेमिका के रूप में नहीं, बल्कि किसी बच्चे की माँ के रूप में आये थे। पर उसकी तकदीर देखो, शादी के बीस साल बीत गए लेकिन उसकी गोद खाली की खाली रह गई।

मध्यवर्गीय समाज की यह विडंबना ही है कि वह समझ नहीं पाती, क्यों एक स्त्री ही दूसरी स्त्री की दुश्मन बन जाती है? क्यों एक औरत होकर भी दूसरी औरत के दुख को समझ नहीं पाती? एक स्त्री के जीवन में 'माँ' शब्द कितना महत्व रखता है, शायद यह एक स्त्री ही बता सकती है। औलाद नहीं तब भी स्त्री की ममता कभी नहीं मरती। ना ही कम होती है। बस जरूरत है, समाज को अपनी सोच बदलने की।

'वीराने' मेहरुनिसा परवेज़ ने इस कहानी में मध्यवर्गीय विधवा नारी जीवन की कठिनाइयों को दर्शाया है। भारतीय समाज में आज भी विधवा नारी को अभिशापित माना जाता है। विधवा

जीवन की स्थिति की चर्चा करते हुए, डॉ रेवा कुलकर्णी जी कहती हैं "जिस तरह भारतीय पतिव्रता स्त्री दुनिया में आदर, गौरव एवं सम्मान की वस्तु है उसी प्रकार भारतीय विधवा जैसी तुच्छ, उपेक्षित, दयनीय दुनिया की अन्य कोई वस्तु नहीं है।"⁷³ आज शिक्षा के प्रसार ने उसे आत्मनिर्भर बनाने की शक्ति दी है। शिक्षित होने के कारण स्त्री नौकरी कर सकती है, और उसे आर्थिक दृष्टि से किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। किंतु मध्यवर्गीय समाज उसे आसानी से जीने नहीं देता यहाँ तक कि रहन-सहन, पहनावे तक के लिए उन्हें अपनी मन पसंद से जादा परवाह समाज के लोगों की होती है। इस कहानी में बेटी अपनी विधवा माँ से कहती है "मम्मी यह साड़ी बांध लो। तुम पर खूब जंचेगी।" "छी: छी:, पागल है क्या, मैं विधवा ऐसी साड़ी पहन सकती हूँ!"⁷⁴ विधवा नारी कारुणिक दशा का वर्णन महादेवी वर्मा ने उनके लेखाचित्र 'भाभी' में बहुत संवेदना से प्रस्तुत किया है – "उस समाधि – जैसे घर में लोहे के प्रचीर से घिरे फूल के समान वह किशोरी बालिका बिना किसी संगी साथी, बिना किसी प्रकार के आमोद-प्रमोद के, मानो निरंतर वृद्धा होने की साधना में लीन थी। वृद्ध एक ही समय भोजन करते थे और वह तो विधवा ठहरी! दूसरे समय भोजन करना ही प्रमाणित कर देने के लिये पर्याप्त था कि उनका मन विधवा के संयम-प्रधान जीवन से ऊब कर किसी विपरीत दिशा में जा रहा है। प्रायः निराहार और निरंतर मिताहार से दुर्बल देह से वह कितना परिश्रम करती थी, यह मेरी बालक – बुद्धि से भी छिपा न रहता था। जिस प्रकार उसका, खंडहर- जैसा घर लम्बे - चौड़े आँगन को बैठ, बैठ कर बुहारना, आँगन के कुए से अपने और ससुर के स्नान के लिये ठहर - ठहर कर पानी खीचना और धोबी के अभाव में, मैले कपड़ों को काठ की मोगरी से पीटते हुये रुक - रुक कर साफ करना मेरी हँसी का साधन बनता था उसी प्रकार केवल जलती लकड़ियों से प्रकाशित, दिन में भी अंधेरी कोठरी के घुटते हुये धुएँ में रह-रह कर आता हुआ खाँसी का स्वर।"⁷⁵ इस कहानी में मम्मी के माध्यम से लेखिका ने मध्यवर्गीय विधवा स्त्री की दर्दनाक परिस्थिति को चित्रित किया जो अपनी इच्छा अनुसार पहन - ओढ़ ले तो लोगों के ताने सुनने पड़ते हैं विधवा स्त्री को जैसे जीवन जीने का भी हक नहीं होता।

'आदम और हव्वा' प्रस्तुत कहानी में परवेज़ जी ने मध्यवर्गीय विधवा स्त्री की मनोवस्था का चित्रण किया है। कहानी की नायिका 'उमी' विधवा स्त्री है। महीन, उमी से प्रेम करता है। महिम एक फोटोग्राफर है, अपने फोटोग्राफी के लिए केन नदी पर बने डैम पर जाता है, साथ ही उमी, ममी, उमी की बहन बीजू और मोबिन को वहां घूमने ले जाता है। महिम, उमी के साथ कुछ क्षण बिताने के लिए डैम के ऊपर बने छत पर जाता है। अचानक उमी से उसके पहले पति देव के बारे में पूछ पड़ता है। उमी कहती है "ऐसा क्यों पूछ रहे हो महिम, मेरा कुछ भी तुम से छुपा नहीं है ? तुम जानते हो देव मुझे बहुत प्यार करते थे, अगर अकस्मात एक्सीडेंट में उनकी मृत्यु ना हो गई होती तो कौन जाने मैं आज से ज्यादा सुखी रहती।"⁷⁶ महिम, उमी से कहता है, क्या तुम मुझे उतना ही प्यार करती हो जितना देव से करती थी। महिम के शब्दों को सुनकर उमी को आश्चर्य होता है। उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि महिम उससे ऐसे प्रश्न भी कर सकता है "उसे याद आया एक मित्र ने उससे कहा था, औरत से ज्यादा मर्द ईर्ष्यालु होता है। अचानक उसे पिछली दोपहर को कहे महिम के शब्द याद आयें - मैं बासी चीजें नहीं खाता।"⁷⁷ उमी की आँखें भर आयी दोनों वहां से वापस आ जाते हैं। देव किसी के बिना कुछ कहे गांव के अंदर तस्वीर खींचने के बहाने कभी ना लौटने के लिए वहाँ से चला जाता है।

मेहरुनिस्सा परवेज़ ने महिम के माध्यम से एक मध्यवर्गीय पुरुष की मानसिकता का चित्रण किया है। महिम, उमी से प्रेम करता है, पर बात जब शादी की आती है तब उसे ख्याल आता है कि वह विधवा है। अपने से उसके पहले पति की तुलना करवाने लगता है, और उमी से मुख मोड़कर चला जाता है। मध्यवर्गीय पुरुषों पर जब तक जिम्मेदारियों की बात नहीं आती तब तक उन्हें सारी चीजें अच्छी लगती है। लेकिन जिम्मेदारियों की बात आने पर उसके अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों स्थितियों की खोज करने लगता है और आने वाली जिम्मेदारियों से निकलने का मार्ग भी उन्हीं में से खोज लेता है।

'हत्या एक दोपहर की' एक मध्यवर्गीय विधवा स्त्री 'नूपुर' की कहानी है। इस कहानी में एक मध्यवर्ग स्त्री की असहाय स्थिति, मानसिक द्वंद, असुरक्षा और आत्म निर्णय का प्रभावी चित्रण प्रस्तुत किया गया है। नूपुर अपने पति विपिन की मृत्यु के पश्चात बेटे पिंटू को लेकर अपने पिता के घर में रहती है। नूपुर के ऑफिस चले जाने के बाद पिंटू के मामा पिंटू को डराते-धमकाते हैं, और कहते हैं जब हम लोग अलग हो जाएंगे, तब तुम कहाँ रहोगें ? तुम्हारा तो अपना कोई घर नहीं है। पिंटू डर कर अपनी आंखें बंद कर लेता है, और इसी कारण वश वह घर में घूटा- घूटा रहने लगता है। एक दिन अचानक ही नूपुर की मुलाकात महेश से होती है। महेश की पत्नी बिनी, जो बहुत मोटी है। शादी के कई वर्ष बाद भी बिनी और महेश को कोई संतान नहीं है। महेश नूपुर से बच्चा चाहता है। नूपुर, महेश की कॉलेज वाली करतूत को याद कर दुःखी हो जाती है। जब वह उससे प्रेम करती थी, उसके बच्चे की माँ बनने वाली थी तब उसने जिम्मेदारी लेने से साफ मना कर दिया था। आज वही महेश नूपुर को नाजायज संबंध रखने को कहता है। किन्तु नूपुर, महेश को किसी भी तरह का संबंध रखने से मना कर देती है। और अपने आपसे निर्णय करती है कि अब वह केवल अपने बेटे पिंटू के लिये जियेगी।

मेहरुन्निसा परवेज जी ने इस कहानी में मध्यवर्गीय संस्कारी नारी के वात्सल्य को श्रेष्ठ सिद्ध किया है। विधवा माँ बेटे के लिए सब कुछ त्याग कर अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करती है उसके मन में अनेकों इच्छाएं जागती हैं, किंतु नूपुर अपनी सभी इच्छाओं तथा फैसले को बदल देती है।

'गिरवी रखी धूप' कहानी में मेहरुन्निसा परवेज जी ने मध्यवर्गीय समाज में वर्तमान युग में बदलते जीवन मूल्यों के बढ़ती उपेक्षा का वर्णन किया है। बाबूजी जब से रिटायर्ड हुए, तब से ही उनकी अपने घर में अवहेलना होने लगती है। जैसे इस घर में उनका कोई अस्तित्व ही नहीं बचा था बच्चे तक तो ठीक है, लेकिन पत्नी ने भी जैसे रास्ता बदल लिया था। इन सब से दुःखी हताश होकर वह अपनी बहन के पास जबलपुर चले जाते हैं। वहां लगभग साल भर रहे लेकिन

किसी ने उनकी कभी खैरियत तक नहीं पूछा, ना ही किसी को घर में उनकी कमी महसूस हुई। एक दिन उनका बेटा उन्हें लेने जाता है, बाबूजी खुशी से गदगद हो जाते हैं, और बेटे के साथ घर वापस आ जाते हैं। घर का वातावरण उन्हें अच्छा, परिवर्तित लगा सभी उनकी जरूरतों का पूरा ध्यान दे रहे थे। बेटा चाय ला कर देती है, और पत्नी नहाने का पानी गर्म कर देती है। तभी बेटे ने पूछा कि पिताजी खाकर चलोगे कि आकर खाओगे, पिता ने आश्चर्य से पूछा पर जाना कहां है। पेंशन लेने दोनों साथ पेंशन लेने दफ्तर पहुंचते हैं। ऑफिस वाले बाबू जी से पूछताछ करते हैं - "कहो दादा, कहाँ रहे इतने दिन' हम तो समझे थे कि दूसरी दुनिया में पहुँच गए हो और घर के लोग अभी भी तुम्हारी कमाई खा रहे हैं। इसीलिए उस दिन तुम्हारे बेटे से मैंने कहा था, बरखुरदार, हराम की रोटी सब तोड़ते हैं, मैं भी और तुम भी पर डाका डालना ठीक नहीं, पहले अपने बाप को बुला लो हम देखना चाहते हैं। चलो दादा अच्छा हुआ, इसी बहाने तुम आ गए वरना शक पर पेंशन देना बंद कर दिया जाता।"⁷⁸ मुंशी की बात सुनकर बाबूजी की सारी खुशियां बिखर जाती है, और वह दुखी हो जाते हैं। घरवालों का लालची चेहरा उनके सामने आ जाता है।

मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक स्वार्थपरता ने व्यक्ति को कितना खोखला बना दिया है कि पेंशन से इतना मोह है, पर जिसकी पेंशन है, उस व्यक्ति को घर में पुराने सामान की भाँति घर के किसी कोने में पड़ा रहने दिया जाता है।

'कयामत आ गयी है' मध्यवर्गीय नारी के विवाह संबंधी विचार पिछली पीढ़ी से किस रूप में भिन्न हुए हैं, इसका वर्णन कहानी में देखने को मिलता है। नज़मा, आप के यहाँ रन्नो की शादी में आती है। रन्नो को देखकर नज़मा चौक जाती है। वह हूबहू आपा की परछाई दिखती है। उसे आपा के साथ बिताये दिन याद आ जाते हैं। आपा एहसान भाई से प्रेम करती थी, यह प्यार ज्यादा दिन पनप नहीं पाया, क्योंकि इसी बीच आपा जमशेद मामू की हवस का शिकार बन जाती हैं। आपा की माँ उनका विवाह किसी और से तय कर देती हैं। आपा विवाह पूर्ण उन्हें अपना गर्भ गिराना पड़ता है। यहां रन्नो का विवाह उसी व्यक्ति से होता है, जिससे वह प्रेम करते हैं।

अचानक रन्नो को उल्टियां होने लगती है ,और उसकी तबीयत की खबर नज़मा आपा से बताती है । आपा मुस्कराते हुए कहती है - "नूरी, इसे दिन चढ़े है, दोनों को मालूम है, अब वह हमारा जमाना तो रहा नहीं, जब हमें छुपाकर जहर पीना पड़ता था, यह नया जमाना है ।"⁷⁹ यहाँ लेखिका ने बड़ा सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है - "मैं आश्चर्य से आपा को देख रही थी, जाने क्यों मुझे अम्मा का आपा की शादी वाला गश खाता चेहरा याद आ रहा था, और उनके पीड़ा से भरे छटपटाते-से शब्द । लगा, कानों में जैसे वह कह रही है, कयामत आ गयी है" " एकदम पीछे हैं ! पीछे हैं !"⁸⁰

मेहरूनिसा जी ने यहाँ मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवेश का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है । समय के परिवर्तन के साथ हमारी मान्यताएं, हमारी सोच और दृष्टिकोण कैसे बदलता है । यहाँ रन्नो के माध्यम से दर्शाया है । पीढ़ी के बीच के अंतराल को एक ही घटना से दर्शाया गया है । आज के मूल्य जीवन को सुखी बना रहे हैं पुराने मूल्यों ने नारी जीवन को बद से बदतर बना दिया था ।

'खामोशी की आवाज' कहानी में लेखिका ने मध्यवर्गीय दांपत्य जीवन में तनाव का कारण स्वभावगत भिन्नता है जहाँ पति-पत्नी के बीच तीसरा हमेशा घातक रहा है । इसी तीसरे के आगमन ने यहाँ । अनु और रमेश के जीवन को कलह से भर दिया था । अनु की मृत्यु का समाचार अनु की सहेली अर्थात लेखिका को मिलता है यह समाचार सुनते ही लेखिका को अनु का विगत जीवन याद आने लगता है । उन्हें लगता है, अनु की मृत्यु आज हुई है, किंतु वह जिंदा ही कब थी ? उसकी मृत्यु तिल-तिल कर हुई है । अनु कि रमेश से जब शादी हुई थी, शादी के कुछ समय बाद ही दोनों में अनबन होने लगी थी । अनु की शादी-शुदा जिंदगी में घुटन, तनाव, परेशानियों ने घर बना लिया था । दांपत्य जीवन में एक समय के बाद सबके जीवन में उतार-चढ़ाव आता है । किन्तु कोई उससे निकल पाता है, और कोई उसी खाई में ढह जाता है । अनु की चर्चा करते हुए लेखिका कहती है - " अनु एक मुक़मल औरत है । मैंने हमेशा महसूस किया कि एक साथ वह दो औरत है यानी दो रूपा दो औरतों का जीवन वह साथ-साथ जी रही है । एक वह जो वह सामने से दिखती

है, दूसरी जिसे कोई नहीं जानता, केवल मैं जानती हूँ अनु ने अपनी उसी दूसरी औरत को हमेशा सताया है, तंग किया है। उसके अंदर वाली औरत अनु पर हावी होती गई और अनु की सारी इच्छायें, महत्वाकांक्षायें खत्म होती गई और वह बस एक ठूठ की तरह रह गई।"⁸¹

लेखिका अनु के घर आने के बाद बदल जाती हैं और अनु के पति से प्रेम करने लगती हैं। अनु और रमेश के बीच समस्या की चिंगारी लगाने का काम करती है, और उसमें सफल भी होती है। अनु और रमेश दो आपसी सहमति से तलाक ले लेते हैं। यहाँ अनु अपने गमों को भुलाने के लिए अपने आप को शराब के नशे में डुबो देती हैं। एक दिन अचानक रास्ते में अनु की भेंट लेखिका से होती है। अनु लेखिका को अपने घर ले आती है और शराब के नशे में कहती हैं - " मुझे सब पता है यार " मेरे सपनों की चोरी तूने की है, पर अब वह मामला भी नहीं रहा। सच ! तुझसे यह सब कहने के लिए ही मैं तुझे साथ लाई हूँ, वरना मैं कभी न कह पाती और तू मेरे मरने के बाद भी यही समझती कि मुझे चोर का पता कभी ना लग पाया। अच्छा ही हुआ, जिन तिनको को मैं बिखेर आई, तूने उन्हें सहेज लिया।"⁸²

इस कहानी के माध्यम से मेहरुन्निसा परवेज ने एक ऐसी मध्यवर्गीय स्त्री का वर्णन किया है। जिसका पति 'रमेश' विवाह के बाद पत्नी अनु की सहेली पर आकर्षित हो जाता है। जिससे अनु का जीवन दुःखमय बन जाता है। वह यह सह नहीं पाती, और अपने आप को नशे की लत से धीरे-धीरे खत्म कर देती है। 'मन्त्रबिद्ध' उपन्यास की नायिका दूसरी औरत के बारे में कहती है - "आदमी की बात तो एक बार में मान सकती हूँ कि वह कुत्ते की तरह सब जगह मुँह मार सकता है, लेकिन वो औरतें कैसी होती हैं, जो एक के प्रति अंधी हो जाती हैं, दूसरों को तोड़ती हैं। उन्हें दूसरी औरत के दुःख-दर्द का बिल्कुल भी ख्याल नहीं आता। अरे, कल को यही उनके साथ भी हो सकता है।"⁸³ फलतः दूसरी औरत के कारण दोनों पति-पत्नी का वैवाहिक जीवन टूट जाता है, और इसी गम में अनु की मृत्यु हो जाती है।

'खुरचन' यह एक मुस्लिम परिवार की कहानी है, जो मध्यवर्गीय धार्मिक मान्यताओं पर जीवन यापन करता है। जावेद इस घर में एक लौता कामाने वाला है, जो महीने की पूरी तनख्वाह अम्मा के हाथ में लाकर देता है। उसी के बलबूते पर ही घर का खर्च चलता है। जावेद अपनी मर्जी से एक हिंदू लड़की से प्रेम विवाह कर लेता है। यह बात अब्बा-अम्मा के लिए मौत से कम हादसे वाली नहीं है। अतः आवेश में आकर अब्बा जावेद और उसकी पत्नी सहित घर से निकाल देते हैं। घर से निकाले जाने के बाद दोनों अलग रहने लगते हैं। अब घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगती है, एक दिन अब्बा हापते हुए घर आते हैं, और अपनी पत्नी से कहते हैं "आज जब मैं उसी गली से लौट रहा था तो देखा एक बहुत बूढ़ा- सा आदमी, जो दिखने में भीखमंगा। नहीं लगता था जूठी पत्तलों को उठाकर जल्दी-जल्दी चाट रहा है। मैंने उसे टोका, क्या करते हो भाई ? और मेरी बात के जवाब में उसने मुझे जिन नजरों से घूरा वह मुझे भीतर तक चीर गई, फाड़कर रख दी। वह " वह आँखें एकदम, हूबहू मेरी थी "अल्लाह"⁸⁴ और बताते हैं, जावेद और उसकी पत्नी दोनों इसी शहर में हैं। वें रहीमन मुल्ला से कह रहे थे अब्बा अपना गुस्सा थूँक दे तो हम बहू-बेटे उन्हें कमाकर खिलायेंगे मैं पता ले आया हूँ। कल जाकर दोनों को ले आऊँगा। अम्मा कहती है कि समाज वाले क्या कहेंगे ? अब्बा कहते हैं "कोई समाज वाले तुम्हारा बुढ़ापा नहीं काट देंगे। बातें करेंगे, करने दो, हमारी औलाद है, क्या उसे हम फेंक देंगे ? छोटा था तो इन्हीं हाथों टट्टी-पेशाब उठाता था, साफ करता था, क्यों भूल गई ? मैं कल ही जाऊँगा।"⁸⁵ अम्मा दोनों का कमरा साफ करने लगती है।

धर्म जाति अहंकार कथा अस्मिता ये सारी बातें मध्यवर्गीय समाज के लोगों की अर्थ पर निर्भर रहती है। पूरे घर का खर्च बेटे के वेतन पर निर्भर रहता है, इसीलिए विवश होकर अब्बा को अपनी खोखली परंपराओं से समझौता करना पड़ता है, और बहू-बेटे को घर बुलाना पड़ता है। मेहरुनिसा परवेज जी ने इस कहानी के अंतर्गत कड़वे सच को उजागर किया है कि अर्थ ही समाज में सबसे ज्यादा प्रभाव रखता है।

'आरजू के फूल' मेहरुन्निसा परवेज जीने इस कहानी में मध्यवर्गीय सैनिक की पत्नी की व्यथा का सुंदर वर्णन किया है। चमेली का पति सरहद पर देश की रक्षा के लिए गया है, यहां चमेली उसकी याद में व्याकुल है, उसे हर समय अपने पति की याद सताती है। जब वह सुबह-सुबह गोबर के उपले बनाती है, और जब चूल्हे पर रोटियाँ बनाती है, तो उसे हर जगह उसका पति दिखाई देता है। उसे हर समय अपने पति की चिंता रहती है। यहाँ इतनी ठंड है, वह इतनी ठंड में बॉर्डर पर बंदूक पकड़ कर कैसे खड़े होंगे ? उसे अपनी शादी के पहले के सभी द्रश्य सामने दिखाई देने लगते हैं, कैसे चोरी छुपे तुम मुझसे मिलने आया करते थे, शादी तय होने के बाद मेरी सभी सहेलियां मुझे कैसे छोड़ा करती थी ? चमेली कुए की ओर जा रही थी, तभी बिरजू आकर बताता है कि तेरा आदमी लाभ पर काम आ गया, अर्थात् सहिद हो गया। चमेली की आँखों से आँसु इस कदर बहने लगते हैं। जैसे किसी ने बाँध को खोल दिया हो, वह छाती पीट-पीटकर रोती है, उसने अपने सारे कपड़े फाड़ दिये। सारे मोहल्ले वाले भी इकट्ठा होने लगते हैं, तभी चंपा आकर बताती है, कि बिरजू झूठ बोल रहा था या सुन हँसने लगती है। रोज रेडियो पर युद्ध के समाचार सुनकर व्याकुल हो उठती है। उसके बावजूद उसमें बड़ा धैर्य होता है। वह कहती है "जिस दिन तुम आओ खबर कर देना। मैं दुल्हन की तरह सज-सवर कर तुम्हारी राह देखूंगी और गाँव के रास्ते को फूलों से सजा दूंगी तुम उसपर जीत का सेहरा बाँधकर मेरे पास आना।"⁸⁶

इस कहानी में युद्ध पर गये सैनिक की पत्नी का जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया गया है। सैनिक तो युद्ध पर जीवन मृत्यु के बीच लड़ता है। वही उनकी पत्नियों को एक अलग युद्ध लड़ना पड़ता है। पत्नी के इसी मानसिक युद्ध को लेखिका ने बहुत ही सुंदर ढंग से चित्रित किया है।

'नंगी आँखोंवाला रेगिस्तान' कहानी की नायिका नीरा के माध्यम से लेखिका ने मध्यवर्ग की विवाह तथा प्रेम की समस्या का चित्रण किया है। नीलू और देव के माध्यम से असफल विवाहित जीवन का वर्णन किया है, नीलू का विवाह एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति देव से हो जाता है। अधेड़ उम्र के पति से पिता का सा स्नेह मिला किन्तु पति सा प्रेम नहीं मिल पाया। विवाह के

पहले वर्ष ही 'हेम' हुई उसके बाद नीरा को कोई संतान नहीं हुई। उसकी देव के घर में खाना-पानी और सभी आवश्यकता पूर्ण हो जाती है, पर पति के प्यार से वंचित रह जाती है। उसे अपना जीवन पिंजरे में कैद पक्षी की भांति लगने लगता है, एक मोटर एक्सीडेंट में देव अपाहिज हो जाता है, देव अपने जीवन से निराश होकर नीरा को गंदी-गंदी गालियां देता है। उसे पढ़ा लिखा आदमी गवार लगने लगता है। आधुनिक विचारों वाली नीरा, अपने जिल्लत भरे जीवन से उबकर चार साल की बेटी को लेकर अलग रहने लगती है, और अपने पति देव से तलाक ले लेती है।

अपाहिज पति से अलग होकर नीरा अमित के समीप आ जाती हैं, जिसके साथ रहकर उसे वेश्या का सा अनुभव होता है। मध्यवर्गीय तलाक शुदा स्त्री जब अपने जीवन के खालीपन को भरना चाहती हैं, तो उसके लिए इतना आसान नहीं होता, वह भी तब जब उसके साथ एक बच्चा भी हो ऐसी स्थिति में तीसरे पुरुष से संबंधों का आकार कैसा होगा ? उसका जीवंत उदाहरण इस कहानी में देखने को मिलता है। नीरा अपने जीवन में एक ऐसे पुरुष की खोज में है, जो उसे ऐसा आधार दे जिसकी सामाजिक पहचान हो। अमित के प्रेम में पड़कर वह अपना जीवन पूर्ण रूप से उसको समर्पित कर देती है। अमित विधुर पुरुष है, किंतु जवान बच्चों का पिता है। इसीलिए वह नायिका को पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं कर पाता है, वह उसके साथ बिना विवाह के ही मित्र के रूप में संबंध बनाए रखना चाहता है। यहाँ नीरा विवाह करके, अमित के साथ रहना चाहती है। किंतु अमित उससे झूठे वादे करता है, और विवाह की बात टालता रहता है। नीरा उसके छलाओ को भांप नहीं पाती, और उसके साथ उसके घर में रहने लगती है। घर में उसे सब इस तरह से देखते हैं, जैसे वह किसी के घर में जबरदस्ती घुस आई हो। अमित के काका उससे हाथ जोड़कर विनती करते हैं कि तुम अमित से संबंध तोड़कर उसकी जिंदगी से दूर चली जाओ, यहाँ नीरा "अपमान लज्जा और आसुओं से उसका चेहरा फक पड़ गया था। अपने में और कोठे की वेश्या में उसे कोई फर्क नहीं लग रहा था। जाने कितने उपन्यासों और फिल्मों में यही दृश्य उसने देखा पड़ा था। वेश्या के चंगुल से घर वाले आदमी को निकाल रहे हैं। क्या वह भी इधर वेश्या हो

गई है ? ऐसी स्थिति की उसने कल्पना की थी कि घर के बुजुर्गों को बच्चों की, समाज की, दुहाई देनी पड़ेगी ? क्या प्रेम यथार्थ की भूमि पर आकर इतना फुसफुसा हो जाता है ? आह! क्या वह गलत पते पर मंजिल ढूँढ रही थी ?"⁸⁷ स्थाई आधार की तलाश में निकली नायिका, इस धरातल पर आकर वेश्या जीवन के अनुभव से अक्रांत हो जाती है । बेटी की शादी में आयी नीरा से, अमीत कहता है मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ - "क्या हम दोनों इसी तरह सिर्फ मित्र बनकर नहीं रह सकते ? आज मंजु का कन्यादान करने के बाद से जाने क्यों मुझे अजीबसा लग रहा है। पहली बार आज लगा कि मैं बाप हूँ और अब ससुर बन गया हूँ ।"⁸⁸ उसकी बातों से निराश नीरा अपनी संतान के लिए मात्र जीने का निर्णय लेकर वहाँ से चली जाती है।

यहाँ लेखिका ने मध्यवर्ग पुरुष की दुर्बलताओं को उभारा है । जहाँ नारी पुरुष पर भरोसा करके अपना सर्वस्व समर्पित कर देती है, वहाँ पुरुष उसे बिना ब्याह किये केवल वेश्या का सा अनुभव मात्र दिला सकता है । इस प्रकार नारी हमेशा पुरुष द्वारा छली गयी चाहे पुरुष किसी भी रूप में हो, चाहे पति के रूप में, चाहे प्रेमी के रूप में, अमित ने नीरा की कमजोरियों का फायदा उठाया, उसे झूठे सपने दिखाये, झूठे वादों में बांधे रखा, जब बात स्वीकार करने की आती है तो मुकर जाता है ।

'टहनियों पर धूप' कहानी के सभी पात्र मध्य वर्ग से संबंधित हैं । मेहरून्सिसा परवेज़ जीने इस कहानी में नारी को केवल वासना पूर्ति का साधन के रूप में प्रस्तुत किया है । नारी की वेदना को समझा नहीं गया, उसे केवल भोग की वस्तु मात्र समझा गया । इसके अतिरिक्त उसका कोई स्थान नहीं है। कहानी की नायिका, इस घर में जैतून की मां के नाम से जानी जाती है । बीस साल पहले जब वह दुल्हन बन कर आई थी । दूसरे दिन ही उसे पता लग गया था कि वह अकेली पत्नी नहीं है, बल्कि बहुत-सी पत्नियों में उसे भी शामिल कर लिया गया है । उसने यहाँ आकर ही जाना कि प्यार, विश्वास, ममता जैसी कोई चीज नहीं होती । शारीरिक सुख ही सबसे बड़ा सुख है । उसके अतिरिक्त यहां किसी की भावना का कोई मोल नहीं है । सास ने तो मुंह दिखाई में ही झाड़ू

थमा दिया था। बड़ी आपा छोटी आपा दोनों के कमरे ऊपर थे, जहाँ किसी को जाने की इजाजत नहीं थी। शाम होते ही मर्दाना आवाज और शराब की महक आया करती थी। पति से उसे प्यार, दुलार, स्नेह उसे कुछ नहीं मिला, बस रात के अंधेरे में जब पति आवाज लगता उसे तुरंत उठकर उसके बिस्तर पर जाना पड़ता। उसकी इच्छा-अनइच्छा की किसी को परवाह नहीं होती। इसी जोर जबरजस्ती के रिश्ते में वह दो बच्चों की माँ बन गयी। सास-ननद ने बच्चों को भी अपने वश में कर लिया, जो उसे माँ, भी नहीं बुलाते थे। धीरे-धीरे बच्चे भी उससे नफरत करने लगते हैं। एक दिन उसे फालिस मार देता है। तब से उसे घर के पीछे एक कोठरी में फेंक दिया गया। जहाँ वह रोज अपनी मौत का इंतजार करती है। नौकरानी के नाम पर जवान विधवा को रख लिया जाता है। जो जैतून की माँ की सौतन होती है। एक दिन अचानक जैतून के अब्बा की मृत्यु हो जाती है। उसी दिन सकीना की कुंवारी बेटी मरियम की मृत्यु हो जाती है। तो वह सोचती है "तो वहाँ भी वे अकेले नहीं गए? एक औरत को वहाँ भी ले ही गये आखिर।" वह सोचती है, फिर मन को तुरंत झटका देती है, नहीं— - मरे हुए आदमी की बुराई नहीं करना चाहिए।"⁸⁹

इस कहानी में मेहरुन्निसा परवेज जीने प्रस्तुत किया है कि नारी केवल भोग की ही वस्तु मानी गयी है। नारी की अपनी कोई स्वतंत्रता नहीं है। पुरुष अपनी अहंवृत्ति तथा एकाधिकार की भावना का पूरी तरह प्रयोग करता है।

'टूटने से पहले' कहानी में लेखिका ने नायिका 'सुम्मी' के माध्यम से एक मध्यवर्गीय सरकारी ऑफिस में काम करने वाले पिता की स्थिति को दर्शाया है। मध्यवर्गीय जीवन में अर्थ का अत्यधिक महत्व होता है। इस कहानी में भी प्रमुख समस्या आर्थिक ही है, सुम्मी के बाबुजी परिवार में अकेले कमाने वाले व्यक्ति हैं। बेटे की पढ़ाई अभी अधूरी है, और बेटी 'सुम्मी' विवाहित है। किंतु माता-पिता अपनी सभी दुख, दर्द और तकलिफों को अपनी बेटी से बताते हैं। जब से सेवानिवृत्ति की आयु पचपन की उम्र में संभावित की जाती है, तब से माँ खाने में दो अड़्डों की जगह एक-एक अड़्डा ही परोसती है, सब्जी तो इतनी पतली बनाती है, जिसे देखकर

आश्चर्य होता है। बाबूजी तो अब रात को सोते समय दूध पीना भी बंद कर देते हैं, माँ-बाबूजी घर की परिस्थिति के बारे में विचार कर चिंतित हो जाते हैं। घर का खर्च कैसे चलेगा? बेटे की पढ़ाई पूरी कैसे होगी? सभी चिंताओं से घर में मातम सा वातावरण हो जाता है। आखिरकार एक दिन रेडियों पर सूचना मिलती है, कि पचपन की उम्र में सेवानिवृत्ति तय कर दिया गया है। बाबू जी यह सूचना सुनकर मरने से पहले ही टूट जाते। इस कहानी में आर्थिक तंगी के कारण परिवार की सभी लोग दुःखी, हताश दिखाई पड़ते हैं।

'आकृतियाँ और दीवारें' कहानी में मेहरुन्निसा परवेज़ ने मध्यवर्गीय पति-परित्यक्ता नारी की समस्याओं तथा समाज में उसकी अपेक्षा का अंकन बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है। कहानी की नायिका आत्मनिर्भर होने के बावजूद घर के लोगों से अपेक्षा ही मिलती है। पति-परित्यक्ता होने के पश्चात दुनिया उसे शक की निगाहों से देखती है। मध्यवर्गीय समाज की दुर्बलताओं को लेखिका ने नायिका के माध्यम से प्रकट किया है "कुंवारी लड़की जीवन-भर माँ की देहलीज पर रह सकती है, पर ब्याही लड़की आंख में पड़े बाल-सी खटकती है।"⁹⁰ मायके में आई नायिका को सब बोझ ही समझते हैं। उसे अपने ही घर में सब का तिरस्कार सहना पड़ता है, और हर महीने दो सौ अस्सी रुपये, भाभी के हाथ में देना पड़ता है। पश्चात विचारों वाला भाई अपनी बहन को बोझ समझ कर वह अपने बीवी बच्चों के साथ अलग घर में रहने चला जाता है। उनके जाने के बाद नायिका को लगता है, जैसे उस घर में दो आकृतियाँ और दीवारें ही बची हैं। आँटी और वह।

मेहरुन्निसा परवेज़ ने मध्यवर्गीय पति-परित्यक्ता नारी की सामाजिक प्रतिष्ठा एवं उनके समान अधिकारों के प्रश्न को लेकर, बड़ी गंभीरता से इस कहानी में अपने विचार प्रकट किए हैं।

'रिश्ते' यह एक मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार के विघटन तथा परिवार नियोजन की समस्या को इस कहानी में व्यक्त किया गया है। मुस्लिम परिवेश में लिखी गई यह कहानी एक अहम सत्य को प्रस्तुत करती है। जावेद जगदलपुर से अपने परिवार के पास रायपुर आता है, जहाँ उसके अब्बा-अम्मा साथ ही नौ भाई-बहन रहते हैं। जावेद अपने इतने बड़े परिवार का खर्च उठाने में

असमर्थ है। जावेद घर का एक लौता बेटा है, जिसने बी.ए तक की पढ़ाई की है। मैट्रिक परीक्षा पास करते ही अब्बा ने कहा था, कहीं बाबू की नौकरी कर लो अपने अब्बा का बोझ हल्का करो। यह सुनते ही खाना हलक में अटक जाता है, और सोचता है कह दे कि "दस-दस बच्चे पैदा करने के लिए किसने कहा था, जब किए तो उनके पालने की भी पहले सोचना था।"⁹¹ उसी दिन से उसने ट्यूशन पढ़ाकर अपनी पढ़ाई पूरी की। उसके बावजूद उसको यहां कोई नौकरी नहीं मिली, पिता के तानों से परेशान होकर वह बिना किसी को बताये जगदलपुर चला गया। वहां बड़ी मुश्किल से हाईस्कूल में क्लर्क की नौकरी मिल पाई थी, लेकिन उसके घर छोड़कर जाने के पश्चात किसी ने उसकी हाल खबर लेने की कभी कोशिश नहीं की। जब उसने एक बार मनीआर्डर से सौ रुपये भेजे तो उसे पहली बार खैरियत का खत मिला। उसी दिन उसे पहली बार अनाथ होने का अहसास होता है।

अम्मा को हमेशा सात बहनों की शादी का फ़िक्र रहता है। जब भी ईद पर कपड़े बनवाती, उसे सिर्फ उसी दिन पहने को देती। उसके बाद शादी के लिए सबसे नीचे की पेटी में रख देती है, और जो कपड़े पहनते-पहनते पुराने हो जाते तो उन्हीं कपड़ों से दहेज के लिए बर्तन ले लेती। जिन बहनों का निकाह किया भी है, उनका जीवन भी कस्टमर स्थिति में गुजर रहा है। उसे अपनी बहन को देखकर तरस आती है, एक मामूली दर्जी की कमाई से कुछ भी करके रुखा-सुखा ही खा पाते होंगे। वह कहता है अब्बा कितने बुरे है, "जानते बुझते ऐसे घर में लड़की को ढकेल दिया, जहां के अंधेरे कोने में ठंड से सिकुड़ी गरीबी अपने शरीर पर पड़े छोटे-से कपड़े को खींचती है; पेट ढंकता है तो पैर खुलते हैं; पैर ढंकते हैं तो पेट खुलता है। पर वह भी क्या करें, एक-दो हों तब न, यहां तो पूरी साथ हैं।"⁹² इस घर में वह जब से आया था उससे किसी ने सीधे मुंह बात तक नहीं की, सिर्फ इसलिए कि वह सभी की जरूरतें पूरी नहीं कर सका। इस घर की स्थिति उसे डरावनी लगने लगती है। जिस घर में उसका बचपन बीता है। उसी घर का वातवरण उसे अजनबी सा लगने लगता है।

मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज 'फैमिली प्लानिंग' के खिलाफ है। इस समस्या का उल्लेख अमरकांत जी ने अपनी कहानी में इसका मार्मिक चित्रण किया है – “साले जलते हैं, जो इंतजाम कराते हैं, उनको मैं हत्यारा समझता हूँ। किसी की किस्मत में दस बच्चे लिखे हों और उसने तीन के बाद इंतजाम करा लिया हो तो सात की हत्या हुई या नहीं ? भगवान देता है और वही सब का इंतजाम करता है। अगर मेरे सौ बच्चे हो जाय तब भी मैं अस्पताल नहीं जाऊँगा...”⁹³ बच्चे अल्लाह की देन हैं। ऐसी मान्यता है, कि वही उनकी जरूरतें पूरी करेगा। किंतु जिन संतानों की जरूरतें पूरी करने की परिस्थिति ना हो उसे संसार में लाना ही अन्याय है। अधिक संतानों की वजह से किस प्रकार गरीबी और दरिद्रता का सामना करना पड़ता है। मेहरुन्निसा परवेज़ ने मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज की इस कठोर सत्य को रिश्ते कहानी के माध्यम से हमारे सामने प्रकट किया है।

'सलाखों में फंसा आकाश' मेहरुन्निसा परवेज़ जीने इस कहानी में निम्न मध्यवर्ग की तपेदिक की बीमारी से ग्रस्त लड़की की पीड़ा को प्रस्तुत किया है। कहानी की नायिका 'लक्ष्मी' तपेदिक की मरीज है। उसे अपनी माँ और बाबूजी से कभी स्नेह नहीं मिला। यहाँ तक कि ब्याह पर विदाई के समय भी माँ उसके पास नहीं थी। इसका भी ताना उसे अपने ससुराल वालों से सुनना पड़ा। एक दिन पति सहरता से लक्ष्मी को उसके मायके छोड़ जाता है। यहाँ माँ भी उसकी बीमारी पर पैसा खर्च करना बेकार समझती है। वह सोचती है। उसे बचपन से ही किसी का प्यार-दुलार नहीं मिला। उसकी बीमारी के कारण उसे कोई अपने पास रखना नहीं चाहता। यहां लेखिका ने उसके मनःस्थिति को इतने सजीव ढंग से प्रस्तुत किया है- "खच्चरों की तरह ही क्या उसे सबो ने नहीं खेदा ? मां ने पति के घर, पति ने मां के घर।"⁹³ अचानक पिता के कोट से गिरे शादी के कार्ड से उसे पता चल जाता है कि उसके पति ने दूसरा ब्याह कर लिया है। अब उसके जीवन में जीने की कोई वजह नहीं बचती और जिंदगी से हार मानकर वह अपनी दवाई की शीशी नाली में फेंक देती है।

इस कहानी में लेखिका ने निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक परिस्थितियों के कारण मां-बेटी के रिश्ते में इतनी खटास आ जाती है की सलाखों में फंसा आकाश की भांति छटपटाने के अलावा और कुछ करने में असमर्थ रहती है।

'बीच का दरवाजा' इस कहानी में राजन और शीला दोनों ही मध्यवर्गीय पात्र हैं। दोनों का विवाहित जीवन किसी तीसरे के आगमन से टूट जाता है। पति जिस लड़की से प्रेम करता है, वह मालिन की बेटी हैम जो बिन ब्याही, राजन के बच्चे की माँ बनने वाली है। जब इस बात का पता शीला को चलता है, तो वह दुःख के समुंदर में डूब जाती है। जिस गृहस्थी को तिनके- तिनके से जोड़ा था। अचानक एक हवा का झोंका आया और सब तबाह कर गया। जिस पति पर उसे इतना विश्वास था, जब उसी ने धोखा दिया, तो वह राजन को छोड़कर शिमला चली जाती है। वही नौकरी कर अपना गुजारा करती है, और कुछ दिनों बाद वह राजन से तलाक ले लेती है।

पाँच साल बाद राजन शिमला में उससे मिलने आता है। शीला उससे कोई रिश्ता नहीं रखना चाहती, किंतु राजा शीला से भी रिश्ता बनाए रखना चाहता है। लेकिन शीला अपने अकेलेपन को स्वीकार कर लेती है, किंतु बीच का रास्ता अपनाना नहीं चाहती। वह सोचती है। उसका अकेलापन दूर करने के लिए ईश्वर ने एक बच्चा दिया होता, तो वह उसके सहारे अपनी जिंदगी गुजार लेती। राजन से अलग होकर बस किसी तरह अपना जीवन व्यतीत कर रही है। परंतु अपने आत्म सम्मान पर आंच नहीं आने देती। पुरुष हमेशा अपने अनुसार जीना चाहता है, और अपने अनुसार स्त्री को भी चलाना चाहता है। कहानी में शीला के माध्यम से लेखिका ने दर्शाया है कि आज मध्यवर्गीय नारी समाज में अकेली रह सकती है, पर किसी के सामने अपनी प्रतिष्ठा को खोने नहीं देना चाहती।

'मुंडेरों की दुपहर' इस कहानी में मेहरुन्निसा परवेज़ जी ने मध्यवर्गीय सभ्यता से प्रभावित स्त्री 'नीलू' की मानसिकता का चित्रण किया है। जो विवाहित होते हुए भी पर पुरुष से संबंध रखती है। उसकी मानसिकता ऐसी है, कि उस बात को वह जायज समझती है। उमेश के साथ खुशहाल

वैवाहिक जीवन को बिताते हुए, निःसंकोच राकेश के साथ भी संबंध स्थापित करती है। उसे पति के सामने अपने नाजायज रिश्ते का राज खुल जाने का भय है, किंतु उसके लिए कोई पश्चाताप, ग्लानि नहीं है। पति के साथ नायिका का जीवन कितने दिनों तक टिका रहेगा, यह उसे भी पता नहीं था। लेकिन नायिका ने अपनी अंतरात्मा को समझा दिया है, कि आगे जैसा जीवन आएगा वैसा ही व्यतीत करेंगी। मध्यवर्गीय समाज में पाश्चात्य प्रभाव के कारण मूल्यों में आये बदलाव को लेखिका ने नीलू के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

'गलत पुरुष' एक मध्यवर्गीय अनाथ लड़की 'शिप्रा' की कहानी है। जो अपने अस्तित्व की पहचान बनाने में इतनी व्यस्त हो जाती है, कि उसका यौवन आकर कब चला गया, उसे पता तक नहीं चलता। यहाँ तक कि अब वह पैंतीस साल की हो गई है। उसे सहारा देने वाला कोई नहीं था, जिसे वह आपना कह सके। ठीक उसी समय उसके दरवाजे पर एक शराबी आदमी विनय खड़ा था। जिसे देखकर उसे अजीब नहीं लगता। विनय के घर की स्थिति कुछ ठीक नहीं थी, एक बड़ी बहन मोना, माँ-मंदाकनी, साथ ही एक छोटा भाई दीपू जो दिमाग से पागल था। विनय जो शराब के नशे में लिप्त रहता था। अब शिप्रा उसकी बिखरी हुई जिंदगी को सवारने- सवाचने में लग जाती है। शराब की बोतल की जगह उसके हाथ में एक डायरी और कलम पकड़ा देती है। और कहती है - "लो विनय, अपने बिखरेपन को इसमें समेटो, यूँ टुकड़े-टुकड़े होकर मौत की ओर मत बढ़ो।"⁹⁴ धीरे-धीरे विनय शराब के नशे से दूर होने लगता है। मंदाकिनी को विश्वास हो जाता है कि सब ठीक हो रहा है वह सोचती है कि "पुरुष हमेशा अबोध रहा है। बिना उंगली पकड़े चलना नहीं सीखा बचपन में माँ के सहारे, जवानी में पत्नी या प्रेमिका के।"⁹⁵

एक दिन बरसात हो रही थी विनय, शिप्रा के घर में किताब पढ़ रहा था। अचानक वों दोनों एक दूसरे के बेहद करीब आ जाते हैं, तभी विनय, शिप्रा को अपने से अलग करते हुए, कहता है "शिप्रा, तुमने गलत पुरुष का चुनाव किया है लगता है अब अपनी सच्चाई तुम्हें बतानी ही होगी, तो सुनो, तुमने जिस पुरुष को चुना है। उसके यौवन के दरवाजे बंद हैं।"⁹⁶ पूरी जिंदगी

जिसे किसी की कमी नहीं खली, अगर खली भी तो कोई मिला नहीं, आज जब एक एहसास विनय के लिए उसके मन में जगह भी तो वह नपुंसक निकला। सब जानने के बाद शिप्रा पुरानी यादों को अपने भीतर समेटे शहर को छोड़कर कहीं दूर चली जाती है। किंतु मोना दीदी उसे बराबर पत्र लिखा करती थी। पत्र मोना दीदी के होते थे, और लब्ज विनय के होते थे। एक पत्र में मोना दीदी ने विनय की मृत्यु की खबर से वह काप जाती है। जिन पत्रों के सहारे जिंदगी गुजर रही थी, अब विनय की मृत्यु के साथ इन पत्रों की भी मृत्यु हो गई है, जो मेरे जीने का सहारा थे।

इस कहानी में मेहरुन्निसा परवेज़ जी ने मध्यमवर्गीय अनाथ लड़की के जीवन का संघर्ष बहुत ही निष्ठा पूर्वक प्रस्तुत किया है। जो अपना पूरा जीवन अपने पैरों पर खड़ा होने में लगा देती है, और इसी कारण से जिंदगी की सभी खुशियों से वंचित रह जाती है, और जिस व्यक्ति को वह अपने जिंदगी का सहारा समझती है। वह गलत पुरुष निकलता है।

'आकाश नील' कहानी की नायिका तरु उच्च मध्यवर्गीय नारी है। तरु जज है, इसलिए लोगों से घुलना मिलना कम पसंद करती है, अपनी गरिमा को बनाए रखती है। पर पति के घर में उसको उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना जज के रूप में कोर्ट में मिलता है। तरु का पति शराबी अय्याश किस्म का व्यक्ति है, जब वह पहली बार अपने पति के घर गयी थी तभी स्पष्ट हो गया था कि "कड़वा घूंट पीने की जिनकी आदत हो, वे क्या जानें मिठास क्या होती है ! वह भी एक पुरुष के पीछे फेरे लेकर, आग के आगे शपथ लेकर विश्वास से आगे बढ़ी थी। पता नहीं मंत्र किसने गलत पढ़े थे, जिंदगी की शुरुआत ही गलत ढंग से हो गयी थी। शराब के नशे में धुत्त पति... सस्ती औरतों के साथ ऐयाशी। जिसे नाली की गंदगी खाने की आदत हो वह भावनाओं को सहेजना क्या जाने और यही पर आकर तरु पथरा गयी। पहली ही रात जब पति ने कहा-'मैं औरतों के नखरे सहने का आदि नहीं'" थाली परोसकर खाना मैंने नहीं जाना, परोसी थाली खाने का मैं आदी नहीं..."⁹⁷

इसलिए तरु अपने पति को छोड़ देती है, और विशाल के साथ प्रेम बंधन में बंध जाती है। जब विशाल की मुलाकात तरु से हुई थी। तब वह तरु से पूछता है "तुम जज हो... औरत होकर न्यायधीश की कुर्सी पर बैठते तुम्हें विचित्र तो लगता होगा न?"⁹⁸ उनके प्रश्न का मतलब था कि इतने बड़े औंधे पर कोई मर्द ही अच्छा लगता है, किंतु आज महिलाएं भी पुरुषों के मुकाबले किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। वे अपने कर्तव्य के प्रति सचेत हैं, संघर्षरत हैं। नारी शिक्षा के कारण आज वह उच्च पदों को ग्रहण कर रही है। वैसे ही इस कहानी की पात्र तरु है। वह जवाब में कहती है "नहीं, अब तो आदत पड़ गयी है। पहले विचित्र लगता था, नाजुक मन की नारी होती है और रोज ढेर सारे खूनी लोग से आंखें मिलानी होती थीं। अब नहीं होता।"⁹⁹ विशाल, तरु से बताता है कि मेरे घर में मेरी पत्नी, एक बेटा और माँ है, तुम इन सब के साथ रह सकोगी तो मैं, माँ से बात करूँ। तरु, विशाल से कहती है कि "मेरे अभिशाप से भरे जीवन को तुम ढोने की चेष्टा मत करो। तुम मुझे सब दे सकते हो, पर अपना नाम नहीं दे सकते, क्योंकि मेरे नाम के साथ जुड़ा मेरा दुर्भाग्य तुम मिटा नहीं सकते। मेरे जीवन की पुस्तक के पिछले पन्ने तुम फाड़ नहीं सकते। वे मेरे साथ हमेशा रहेंगे एक लंबा जीवन, जो मैं भोग चुकी हूँ, उसे तुम वापस नहीं दिला सकते।"¹⁰⁰ विशाल मैं नहीं चाहती हूँ कि मेरे बच्चे को लोग नाज़ायज़ कहे। इस सच्चाई को सिर्फ तुम जानते हो, कि यह बच्चा तुम्हारा है, मैं दुनिया के सामने, मेरे और मेरे बच्चे के आगे पति का नाम ही रहने देना चाहती हूँ। बोलते-बोलते तरु की आँखों से आँसु बहने लगते हैं।

तरु एक उलझी हुई नारी पात्र है जो ना तो अपने पति को स्वीकार कर पाती है, ना ही प्रेमी को। किंतु अप्रत्यक्ष रूप से वह अपने प्रेमी के साथ है और उसके बच्चे की माँ बनने वाली है, लेकिन बच्चे को वह अपने प्रेमी का नाम ना देकर अपने पति का नाम देना चाहती है। पति के नाम पर एक ऐसे इंसान को ढो रही है, जिसमें इंसानियत दूर-दूर तक नहीं है, उसके सुख-दुःख में वह कहीं सरीख नहीं होता। किंतु प्रेमी उसके हर परिस्थिति, परेशानी, सुख-दुःख को समझता है, फिर भी तरु समाज के भय से उसे प्रत्यक्ष रूप से स्वीकार नहीं कर पाती। भारतीय परंपरा की जो

सामाजिक वेणियाँ हैं, उसको तोड़ने की हिम्मत तरु में नहीं है, जो समाज को न्याय देने वाली है, समाज की समस्याओं को सुलझाने वाली है, वों अपने जीवन की समस्याओं के साथ न्याय नहीं कर पाती, नहीं पति के साथ, नहीं प्रेमी के साथ, नहीं अपने बच्चे के साथ न्याय कर पाती है।

इस कहानी में मेहरुन्निसा परवेज़ ने उच्च मध्यवर्ग की, उत्तर आधुनिकता की जो नयी पारिवारिक संरचना बन रही है, उसमें पति-पत्नी के रिश्तों के बीच प्रेमी-प्रेमिका का जो चलन दिखाई देता है। उसका प्रभुत्व इस कहानी में प्रतिपादित है।

'रावण' मेहरुन्निसा परवेज़ ने इस कहानी में मध्यवर्गीय नारी शुभी, नपुंसक पति से तलाक मिलने के कारण दुःखी है पति उसे जीवन भर तड़पता हुआ देखना चाहता है। इस स्थिति में शुभी, पति को छोड़कर मायके आ जाती है, लेकिन शुभी जिंदगी की नई शुरुआत करना चाहती है। पर जब तक उसका पति उसे तलाक नहीं देता, तब तक वह कुछ नहीं कर सकती। कई सालों से तलाक का मामला अदालत में चल रहा है, इसी बीच शुभी, की मुलाकात प्रशांत नामक युवक से होती है। वो दोनों एक-दूसरे से बेहद करीब आ जाते हैं। प्रशांत शुभी से प्यार करने का वादा करता है। शुभी को विश्वास हो जाता है कि प्रशांत उसे उसके पति से छुटकारा दिलाएगा। किन्तु प्रशांत उन मध्यमवर्गीय पुरुष का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रेम तो कर सकता है पर उसके लिए समाज से लड़ नहीं सकता। "प्रशांत बड़ा अफसर था, उसके आगे पूरी एक खुशनुमा जिंदगी थी, कैरियर था। इतनी बदनामी उठाकर वह लोगों के बीच जी नहीं पाता"¹⁰¹ लोक लाज, समाज की डर से वह शुभी को अपना से इंकार कर देता है।

यहाँ शुभी की अपनी तकलीफें हैं। अदालत, वकील फिर तलाक इन सब से निपट पाना उसके बस की बात नहीं होती। वह समझ जाती है, इस युग में राम की नहीं रावण की विजय होती है। यहाँ परवेज़ जीने बड़ा ही सजीव चित्रण किया है "उसके आगे ढेर-ढेर सीमा रेखाएँ थी। जिन्हें लाँघकर सिर्फ रावण ही आ सकता था। उस दिन के बाद से उसने अपना आदर्श पुरुष राम को

नहीं रावण को मान लिया था ।"¹⁰² इस कहानी में लेखिका ने आधुनिक युग में तलाक की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला है ।

'चुटकी भर समर्पण' इस कहानी में मध्यवर्ग की समस्याओं का चित्रण किया है। नायिका पाखी को सबसे बड़ा दुःख इस बात का है, कि वह शादी के दस वर्ष बाद भी माँ नहीं बन पाती है। लेकिन मायके आने के बाद वह देखती है कि सब अपनी-अपनी परेशानियों से ग्रस्त है बहन तिथि तीस वर्ष की हो गयी है । मध्यवर्गीय समाज में अगर शादी सही उम्र में हो जाये तो कोई समस्या नहीं, अपितु किसी कारण वह शादी में विलंब हो जाये तो परेशानी हो जाती है । यहाँ लेखिका ने तिथि के माध्यम से बताया है - "भला बता, अपने समाज में है, कोई बड़े दिल वाला लड़का जो तीस साल की लड़की को ब्याह ले !"¹⁰³ पाखी का चरित्र मध्यवर्ग की अभाव ग्रस्त विवश नारी का चरित्र है, जो मायके आने के बाद मनीष से प्रेम करने लगती है । वह अपनी मनोदशा व्यक्त करते हुए कहती है "मनीष घर से निकला था एक पल को खरीदने और वह घर से चली थी सारा जीवन खरीदने ! बस यहीं पर दोनों की टकराहट होती थी"¹⁰⁴ मनीष से वह गर्भवती होती है पर वह उस बच्चे को अपना मानने से इन्कार कर देता है । तब उसे महसूस होता है, कि वह छली गयी है । तब वह अपना गर्भ गिरा देती है, और मनीष से हमेशा के लिए अलग हो जाती हैं ।

'बौना मौन' मध्यवर्गीय समाज में आर्थिक विषमता ही अधिकांश संघर्षों को जन्म देती है । मध्यवर्गीय परिवारों में लड़की की ब्याह में दहेज या और खर्च करने में असमर्थ होने के कारण लड़की का ब्याह किसी बूढ़े, कुरूप व्यक्ति से करवा दिया जाता था ।, लड़की को आजीवन उस बूढ़े के साथ लाचार होकर रहना पड़ता था। यह समस्या का महत्वपूर्ण पहलू अनमेल विवाह का है। जो दहेज प्रथा तथा निर्धनता के कारण प्रचलित हुआ। यह एक ऐसी समस्या है, जिसने स्त्रियों का सर्वाधिक शोषण किया । ऐसे विवाहों में स्त्री खुलकर भले ही अपनी मनोदशा को व्यक्त ना कर सके । किंतु जीवन भर अंदर-अंदर घुटना पड़ता है । 'बौना मन' कहानी की नायिका नीतू

विधवा स्त्री है। जो बहुत ही कम उम्र में विधवा हो जाती हैं। पति की मृत्यु के बाद उसे दो छोटे बच्चों का पालन-पोषण भी करना है। जिसके लिए उसे बहुत ही संघर्ष करना पड़ता है। पति की पेंशन के लिए ऑफिस के कई चक्कर काटती रहती है, नीतू की सहेली पुष्पा पेंशन की फाइल ठीक करने की एक तरकीब बताती है। नीतू, पेंशन के रुपये पाने के लिए पुष्पा की बात मानकर, ऑफिस के बड़े साहब को खुश करती है। यहाँ महेश, नीतू का अच्छा दोस्त होता है। वह नीतू की बहुत मदद करता है, और नीतू भी उससे सब सच बता देती है। तो महेश उससे कहता है "सुनो, तुम दूसरा ब्याह कर लो, इसके लिए मैं अपना नाम प्रस्थापित करता हूँ।"¹⁰⁵ महेश से दूसरे ब्याह के विषय में बताने के लिए वह बाबूजी को पत्र लिखती है। बाबूजी जवाब में कहते हैं - "नीतू, देख बच्चे हैं, कोई गलत कदम मत उठाना, बेटी ! औरत के आगे, उसके बच्चे लक्ष्मण रेखा की तरह होते हैं, जिन्हें वह कभी लांघ नहीं पाती, इस बात का ध्यान हमेशा रखना।"¹⁰⁶ बाबूजी उसे बच्चे और समाज का वास्ता देकर ब्याह करने से मना करते हैं।

माँ-बाप के दिये संस्कारों को वह कब तक ढोती रहेगी ? उनके दिए संस्कारों से क्या मेरा पेट भर पाएगा? आज बाहर काम के लिए उसे दर-दर भटकना पड़ रहा है हालात इतने बर्तार हो गए हैं कि उसे एक-एक चीज के लिए भटकना पड़ रहा है। माँ ने हमेशा यही समझाया कि बेटियाँ, बाप के सामने नहीं बोलती, और माँ के पसंद किए गये वर से उसे ब्याह करना पड़ा। माँ ने उसे चौदह वर्ष की आयु में, तीस वर्ष के पुरुष के साथ घर के कचरे की तरह निकाल फेंका। बिन इच्छा के बरबस के रिश्ते को निभाना पड़ा, यहां तक कि ससुराल वाले तथा पति ने भी उसे नहीं अपनाया, घर में पड़े किसी सामान की तरह ही पति ने उसे समझा। कहां जाएगी यह प्रश्न उसके मन में हमेशा रहा, एक पति का घर सुरक्षित खत्म थी, किंतु अब वह बच्चों को लेकर कहां जायेगी। जो लोग समाज और बच्चों की दुहाई दे रहे हैं, उन्होंने बचपन से ही उसकी किसी खुशी या इच्छा की परवाह नहीं की, जिंदगी भर उसकी एक-एक इच्छाओं की हत्या की है। आज जब समय उसे जीने का एक और मौका दिया है, महेश से ब्याह करने का तो क्यों ना वक्त का हाथ

पकड़कर अपना और बच्चों का जीवन सवार दे। वह कहती हैं "आज वह भटकी हुई जिंदगी क्यों जिये ? छिपकर अपराध क्यों करें ? बच्चों से वह क्यों ना कहे कि उसने अपनी इच्छा से उनके लिए नये पापा को चुना है। वह दुनिया की सैकड़ों औरतों की तरह अपनी जवान रातों का सौदा क्यों करें ? अपनी जवान रातों को क्यों बेचे ? इससे तो अच्छा है, किसी एक की धरोहर बनकर रहे !" ¹⁰⁷ नीतू निर्णय लेती है कि अब वह अपनी जिंदगी का फैसला खुद करेगी, और महेश से ब्याह करने का तय करती है "आज वह भारतीय नारी की मूर्ति को खंडित कर रही है, वे कोरी भावुकता - भरे उपदेश जीने के सहारे तो नहीं बनते ? क्या वह भी सफ़ेद साड़ी पहनकर संन्यास ले ले ? यही तो समाज, माँ, बाबूजी सब चाहते हैं, पर वह क्यों दूसरों की खातिर बलि का बकरा बन जाये ?" ¹⁰⁸

यहाँ मध्यवर्ग नारी नीतू का चरित्र बड़ा ही सशक्त, ठोस बन पड़ा है। यहाँ नीतू, के माध्यम से लेखिका ने विधवा स्त्री की स्थिति को दर्शाया है, साथ ही साथ अफसरशाही की काली करतूतों को हमारे समक्ष उजागर किया है, और मध्यवर्गीय समाज की पारंपरिक विधवा नारी के आदर्शों को उखाड़, नये सामाजिक मूल्यों को स्थापित किया है।

'ओस में डूबा गुलाब' कहानी में मध्यवर्ग के पारिवारिक विघटन को प्रस्तुत किया गया है। नायिका को पति ने त्याग दिया है, जिसके कारण परिवार के सभी सदस्य टुकड़ों बटकर रह जातें हैं। बेटी मुन्नी को बुआ के यहाँ भेज दिया गया है, उसे वहाँ बिल्कुल रहना पसंद नहीं है। लेकिन घर की मजबूरियों के कारण उसे वहाँ रहना पड़ता है। पत्नी और छोटे बेटे गाँव में दादी के पास रहते हैं। दादी हमेशा नायिका को गालियों से संबोधित करती है। प्रताड़ित करती है। यहाँ तक कि उसे घर से भी निकाल देती है। उसका देवर जब उसे अपने घर में पनाह देता है, तो दादी उसे भी खरी-खोटी सुनाती है। मुन्नी जब छुट्टियों में गाँव आती है, तो दादी उसे अपनी माँ से मिलने नहीं देती, किन्तु मुन्नी को अपनी माँ के पास रहना अच्छा लगता है, इसलिये दादी के इतनी पाबंदियों के बाद भी वह अपनी माँ के पास चली जाती है। उस घर में दादी का हुकुम चलता है। नायिका का,

उस घर में जैसे कोई अधिकार ही नहीं था। पति के तिरस्कार ने उससे, उसके सारे अधिकार छीन लिये थे। जिस घर में पति अपनी पत्नी को सम्मान, अधिकार नहीं देता, तो घर, समाज में भी उसे कोई महत्व नहीं देता। फिर गलती चाहे पति की ही क्यों न हो भुगतना पत्नी को ही पड़ता है। उसका पति अकोला में कार्यरत है। वहाँ उन्होंने दूसरी औरत से संबंध बना रखा है। बड़े पद पर होने के बावजूद, बेटी और पत्नी के पास दो-तीन जोड़ी ही कपड़े होते हैं। माँ का दुःख बेटी से देखा नहीं जाता वह अभी चौथी कक्षा में पढ़ती है, किंतु माँ के दुःखों को समझने की कोशिश करती है। एक दिन उसके पिता एक औरत के साथ बुआ के घर आते हैं, और खुद उस दूसरी औरत को, उसकी माँ के रूप में परिचय कराते हैं। तब वह समझ जाती है। उसका परिवार क्यों बिखर गया है। पिता उस औरत से शादी करने की इच्छा व्यक्त करते हैं, तो बुआ उसे अपने घर से निकाल देती है, और मुन्नी को भी उसे माँ कहने से सख्त मना कर देती है।

मेहरुनिसा परवेज़ जीने यहाँ मध्यवर्गीय नारी की निस्सहाय स्थिति को उजागर किया है। पति की कमाई के बावजूद पत्नी और बेटी को अभाव ग्रस्त जीवन जीना पड़ता है। यह मध्यवर्गीय जीवन की सबसे बड़ी विसंगतियाँ हैं जो एक परिवार को चलाने में असमर्थ होते हुए भी दूसरी शादी के लिए तत्पर हैं। दूसरी औरत के मोह-माया में पड़कर वह अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार सभी का जीवन दुःखमयी बना देता है, और अपने स्वार्थ के लिए परिवार को तितर-बितर कर देता है।

'फाल्गुनी' कहानी में मेहरुनिसा परवेज़ जीने मध्यवर्गीय स्त्री के नैतिक मूल्यों के अंतर संघर्ष को प्रस्तुत किया है। इस कहानी की नायिका फाल्गुनी दांपत्य के द्वंद्व को निभाते हुए अपने आप को अपराधीनी मानती है। जिस व्यक्ति के साथ उसकी शादी होती है, वह व्यक्ति उसे पसंद नहीं है, वह उसे पति के रूप में नहीं, घर के किसी बड़े बुजुर्ग के समक्ष समझती है, पति के घर में रहे केशव के प्रति आकृष्ट होती है, और उसके बच्चे राजू की माँ बनती है। जो दिखने में हूबहू केशव की तरह दिखता है। पति, फाल्गुनी और केशव के बारे में सब कुछ जानते हुए भी अनजान

बना रहता है। किंतु पति के साथ रहते-रहते सहसा उसके मन में नैतिकता का द्वंद्व उत्पन्न होता है, और वह निश्चय करती है, कि अब से वह केवल अपने पति की पत्नी बन कर रहेगी। केशव के साथ अपने सारे संबंध तोड़ देती है। पति से उसे चार पुत्र होते हैं - "वे चार बच्चे जो राजू से उम्र में पूरे दस वर्ष छोटे थे और काले दुबले, मैंने बच्चे, अंधा कह सकता था कि यें तुम्हारे बच्चे हैं। मैंने जीवन को लहंगे की तरह सिर से पहन लिया था और उसे कमर पर कस लिया था। घर जो शांत और सुखी था, अब नरक लगता था।"¹⁰⁹ वह सोचती है कि केशव के साथ संबंध की बात पति को मालूम नहीं है। परंतु जब पति की आखिरी सांस चल रही थी, तब पति कहते हैं - "फाल्गुनी, मेरी चिता पर छोटे से आग दिलाना, राजू से नहीं।"¹¹⁰ यह सुनते ही फाल्गुनी के पैरों तले जमीन खिसक गयी। अपने जिस गुनाहों को वह पति से छुपाती रही, जिसके लिए वह जीवन भर मन ही मन पश्चाताप करते रही। उस बात की खबर पति को पहले से होती है। वह चुप रहकर ही उसे सजा दे गये। तुम इतना बड़ा बोझ अपनी छाती पर रखकर चले गये। एक बार तो मुझसे बताया होता, कि फाल्गुनी तुम मेरी अपराधी हो, इस अंतः मूल्यों की संघर्षों में जल रही हूँ। मैं अपने अपराध बोध के बोझ तले धसती जा रही हूँ। इस कहानी में पेवेज़ जी ने मध्यवर्ग स्त्री के अंतः संघर्षों को व्यक्त किया है।

'अंतिम चढ़ाई' इस कहानी के सभी पात्र संपन्न मध्यवर्ग से संबंधित है। कहानी में पति-पत्नी के जीवन में हुए तलाक के कारण मां और बच्चे के बीच के अलगाव को चित्रित किया है। यहाँ माला को अपना विगत जीवन याद आता है। जीतेन उसे हमेशा नीचा दिखाने में लगा रहता था, जहाँ माला का विवाह जितेन से हुआ था, अपने खराब संबंधों के कारण दोनों तलाक लेते हैं, तलाक के बाद भी बेटा रुपेश पिता के साथ रहता है जितेन, रुपेश को अपनी माँ के खिलाफ भड़काता हैं माला को अपने बेटे से मिलने नहीं देता। वह अपने बेटे की एक झलक को तरस जाती है। इधर माला रितेश से पुनर्विवाह करती है। रितेश आदर्श पति है जो हमेशा उसका साथ देता है उसके दुखों को समझता है किंतु उसके जीवन में एक कमी है, शादी के कई सालों बाद भी

उसकी कोई संतान नहीं है, इसका दुःख रितेश और माला दोनों को है। पंद्रह वर्ष बाद बेटे रूपेश का पत्र, माला के पास आता है, कि मैं आपके शहर में आ रहा हूँ, कितने वर्ष के इंतजार के बाद वह रूपेश से मिलने जाती है। किंतु स्टेशन जाते वक्त रितेश, माला को समझाता है कि "याद रखो माला तुम अपने बेटे को लिवाने नहीं, अपने पिछले अतीत को निहारने जा रही हो, जो महज बिंदु बनकर शेष रह गया है। इससे आगे की ना सोचना, न ही अभिलाषा रखना।"¹¹¹

बेटे की रुखे व्यवहार से वह भीतर से टूट जाती है। किंतु रितेश उसे संभाल लेता है यहां लेखिका ने बेटे के लिए एक माँ कि तड़प को रूपांतरित किया है, साथ ही मध्यमवर्गीय आदर्श पुरुष के रूप में रितेश जैसे पति को दिखाया है, जो हर परिस्थिति में अपनी पत्नी को संभाल लेता है।

'अयोध्या से वापसी' मेहरुन्निसा परवेज़ जी ने इस कहानी में मध्यवर्गीय दांपत्य जीवन में कलह का चित्रण किया है। राजेंद्र पत्नी 'नीरा' को गुलाम बनाकर रखना चाहता है। जिससे परेशान होकर नीरा अपने मायके चली जाती है। लेकिन वहां भी उसे अपमानित होना पड़ता है और इसीलिये मजबूरन उसे राजेंद्र के पास वापस आना पड़ता है, बाबुजी उसे उसके ससुराल छोड़ने आते हैं। किन्तु उसके घर का वातावरण देखकर वह अपनी बेटी को समझने है, कि "औरत पति के घर ही अच्छी लगती है। अपने स्वाभिमान को कुचल दो, यह डंक जब तक रहेगा तुम्हें डसता रहेगा। पत्नी का दर्जा छोटा होता है, पति का बड़ा।"¹¹² यहाँ राजेंद्र उस पर अंकुश लगाने को तैयार रहता है। क्योंकि राजेंद्र, नायिका की कमजोरी समझ गया है, कि वह लौटकर मायके नहीं जाएगी। बात-बात पर उससे झगड़ लेता, उस पर शक करता है। यहां तक कि वह किससे बात करती है, कहां जाती है। उसकी हर हरकत की जांच पड़ताल करता है। एक दिन नीरा घर में बैठे-बैठे ऊब गयी थी, उसने सोचा थोड़ा बाहर टहल आये, साथ ही घर का कुछ सामान भी ले आये। सामान खरीदने में देरी हो जाती है, और घर देरसे पहुँचती है यहाँ राजेन्द्र रोष में आकर कहता है - "कौन सी दुकान गई थी की जहाँ इतना समय हो गया?"¹¹³ नीरा के लिये

राजेंद्र की हरकतों झेलना मुश्किल होता जा रहा था, वह सोचती है "जिन्दगी में विश्वास ही कुल जमा पुंजी होती है और जब वही नहीं तो कब तक जिया जा सकता है ! अब ऐसे वातावरण को सहज बनाना कठिन था ।"¹¹⁴ राजेंद्र के शक करने का दायरा धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था, नीरा पढ़ी-लिखी स्वाभिमानी स्त्री है, जो पति के शक करने के स्वभाव से तंग होकर कहती है "तुम्हारे मन में इतना ढेर सारा मेरे लिए शक है, यह आज पता चला । मुझे पहले ही पता था , यहाँ लौटने पर मुझे क्षण-क्षण अपमान मिलेगा । पर बाबूजी के माँ के आगे मैं हार गई । किसी भी युग में झगड़े के बाद पति के घर लौटने पर नारी को सम्मान नहीं मिला । इससे पहले कि अन्धे होकर तुम मुझे निकालो, मैं खुद जा रही हूँ, अब कभी ना लौटने के लिये ।"¹¹⁵ आज की नारी अपने सम्मान के लिये विद्रोह करने लगी है । अपने आत्म सम्मान की रक्षा के लिये ही नीरा, पति का घर छोड़कर दिल्ली के एक हॉस्टल में रहती है, और वहाँ नौकरी कर लेती है । लेकिन पति के अत्याचारों को सहन नहीं करती । आत्मनिर्भर नारी अपने पैरों पर खड़े होकर जीवन जी ने लगी है ।

इस कहानी में परवेज़ जी ने नीरा के माध्यम से मध्यवर्गीय नारी की वेदना ,नारी विद्रोह, नारी चेतना को प्रस्तुत किया है । आज की नारी, सामाजिक रुढ़ियों तथा लोक - लाज के दायरों को तोड़कर बगावत करने लगी है । अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को बनाये रखने के लिए पुरुष प्रधान समाज के बनाये रास्ते पर नहीं चलना चाहती अतः अपने मान-सम्मान स्वाभिमान के साथ जीना चाहती हैं ।

'बूंद का हक' मध्यवर्गीय नारी की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक पराधीनता की है । रेनू की माता और पिता राहुल के बीच हमेशा पैसों को लेकर झगड़ा होता है । राहुल बहुत ही कंजूस किस्म का व्यक्ति है जो पत्नी को घर खर्च के लिए पाई-पाई को तरसाता है । राहुल ने कभी पत्नी की अपनी आवश्यकता हो सकती है, इसके बारे में नहीं सोचा, पैसों का पूरा हिसाब खुद ही रखता है । जब घर की आवश्यक वस्तुओं को लेकर इतना झंझट होता है, तो वह उसके लिए कैसे खर्च करता, राहुल ने डांट फटकार कर उसे मिट्टी की मूरत बना दिया है । जिसकी सारी इच्छाएं

खत्म हो चुकी है। सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रभा खेतान ने ठीक ही कहा है "औरत की सारी स्वतंत्रता उसके पर्स में निहित है।" वास्तव में आर्थिक स्वतंत्रता ही व्यक्ति स्वतंत्रता का मूलाधार है। और इस सत्य तक पहुँचने के लिए स्त्री को अत्यधिक श्रम करना पड़ा है। इसके अतिरिक्त कोई अन्य उपाय उसकी स्वतंत्रता की गारंटी नहीं ले सकता। अन्य सभी बातें मात्र लच्छेदार बातें हैं।"¹¹⁶

एक दिन वह घर के लिए कुछ सामान मंगाने के लिए पैसे मांगती है, तो राहुल गुस्से में आकर उसके मुँह पर रजिस्टर से मारता है, उसे चोट लग जाती है। अपना अपमान सहन नहीं कर पाती और राहुल से कहती है - "संभालो अपना घर, मैं जा रही हूँ।" उसने गुस्से से उठते हुए कहा, "शर्म नहीं आती औरत पर हाथ उठाते हुए ? मैं भी कमाकर दिखा सकती हूँ।"¹¹⁷ आज समाज में शिक्षा के प्रचार- प्रसार के बाद भी नारी की परिस्थिति में कुछ खास परिवर्तन नहीं आया। किंतु कल्पना जागृत हो रही है, यहां नायिका पति के दुर्व्यवहार को देखकर उसके अंतर मन में आत्मनिर्भर बनने की भावना उत्पन्न होती है, वह स्वातंत्र्य के महत्व को समझने लगी है, अब वह दबकर रहना नहीं चाहती।

नायिका जब मायके जाती है, तो वहां भी उसे अवहेलना ही। मिलती है "माँ ने उससे बोलना छोड़ दिया था, भैया के लिए वह समस्या बन गयी थी। उनके कहे अनुसार उसके कारण, उनके दोस्तों में समाज में उनकी बदनामी हो रही थी। "कैसे बाप हो तुम लड़की को घर पर बैठाकर नाक नीची करवाओगे ? दुनिया क्या कहेगी ?"¹¹⁸ यहाँ लेखिका ने मध्यवर्ग की रूढ़िवादी मान्यताओं को व्यक्त किया है, कि दुनिया, लोक-लाज, समाज की इतनी परवाह है, किन्तु बेटी के कष्टों के बारे में कोई भी नहीं सोचता।

एक दिन ऑफिस से आकर भैया बताते हैं कि "राहुल का पत्र आया है, उसे अपनी गलती का अहसास हो गया है, माफी माँगी है।"¹¹⁹ राहुल और बेटी रेनु उसे लेने आते हैं। बेटी माँ को देखकर उससे दूर भाग जाती है। सास, ननद और पति ने अपने मन की सारी कड़वाहट बेटी के मन में भर देते हैं, किन्तु माँ का स्नेह पाकर वह धीरे-धीरे उसके समीप आ जाती है। कभी-कभी

जिंदगी में व्यक्ति इस कदर लाचार हो जाता है, कि जान बूझकर भी वह अनचाहे रास्ते पर चलना चाहता है। आखिर कार वह वापस पति के घर जाने का निर्णय लेती है। पास में लेती रेनु को " उसने प्यार, ममत्व से उमड़कर रेनु को अपनी बाँहों में समेट लिया। लगा, जैसे मन पर रखा कई- कई मन का बोझ हट गया हो। आखिर कार कितने भी कष्टों को झेलकर भी एक माँ अपनी संतान के लिए सब कुछ सहने के लिए राजी हो जाती है, ममता हर रिश्ते पर भारी पड़ती है।

'जमाना बदल गया' कहानी एक संपन्न मध्यम वर्ग के शान-शौकत में रहें परिवार का चित्रण किया गया है। एक पुराने जमींदार के परिवार की यह कहानी है पति की मृत्यु के बाद नानी माँ ने बड़े अच्छे ढंग से जमीन दारी संभाली थी। बेटी के बड़े होने पर उसका विवाह कर दामाद को घर जमाई रख लेती है। दामाद को वकील बनाती है। नानी माँ अपनी बेटी के बच्चों को खूब प्यार करती है, तीन पोतियों का विवाह अच्छी जगह हो जाता है। पोता ऊँचे पद पद दिल्ली में अपने परिवार के साथ रहता है। नानी माँ की मृत्यु की खबर से सभी बच्चे अपने गाँव की हवेली में एकत्रित होते हैं। यहाँ आने के बाद सभी को नानी के साथ बिताया गया समय याद आने लगता है, बाबूजी सभी बच्चे उनके साथ हवेली में रहे ऐसा चाहते हैं, और बेटी से कहते हैं - " देखो शालू, तुम लोग मौत के समय भी नहीं पहुँच पाये, आये भी तो तब, जबकि सारा काम हो चुका है। "बाबूजी ठण्डी सांस खींचते हुए कहते हैं, अगर ऐसा ही मेरी मौत पर हुआ तो बिरादरी में तो बेटा, मेरी नाक कट जाएगी। वह आदमी कितना बद किस्मत होता है, जिसे अपने ही बच्चों के कन्धे न मिलें।"¹²⁰ माँ-बाबूजी अभी भी पुरानी जमींदारी परंपरा को निभा रहे हैं।

किंतु मध्यवर्गीय आधुनिक सभ्यता से प्रभावित बच्चों को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं होती। ऊँचे पदों को प्राप्त करके सभी बच्चे गाँव छोड़कर शहर में रहने लगे माँ-बाबूजी नौकरों के सहारे अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इस कहानी के विषय में मनोहर नालावडे जी कहते हैं - "लेखिका ने तीन पीढ़ियों का अंतराल दिखाया है नई पीढ़ी अब नए विचारों वाली है। उसे

जमीनदारी परंपरा से कोई लगाव नहीं रहा है, लेकिन उनके माता-पिता को लगता है कि वे आज भी उसी परंपरा को निभाये और संयुक्त रूप से एक ही जगह अपनी पुरानी हवेली में रहे।"¹²¹

सोने का बेसर' मेहरून्निसा परवेज जी ने इस कहानी में मध्यवर्गीय नारी के दोहरे मानसिक द्वंद्व को प्रस्तुत किया है। कहानी की नायिका कुमकुम की सगाई देबू से तय किया जाता है। सारी तैयारियां शुरू हो जाती है, इसी बीच समाचार मिलता है, कि कॉलेज के चुनाव में देबू के हाथों एक लड़का जखमी हो जाता है। पुलिस आकर देबू को पकड़कर ले जाती हैं और उसे सात साल की जेल हो जाती है। इसी कारण से बिरादरी के सभी लोग मिलकर कुमकुम की सगाई देबू के छोटे भाई श्याम से करवा देते हैं। अपने जिंदगी में इतनी बड़ी उथल-पुथल को होते देख कुमकुम एक कोने में बैठी अपनी तकदीर को कोसती है। उसे देबू के साथ पहली मुलाकात के छण याद आते हैं। जब वह आपने ममेरी के ब्याह में गयी थी। उसकी मुलाकात देबू से दुल्हे के दोस्त के रूप में हुई थी। दोनों का मेल-मिलाप प्रेम में प्रवर्तित हो जाता है। देबू को याद कर तड़प उठती है। किंतु वह उसके लिए विद्रोह नहीं कर पाती। अंततः उसका ब्याह श्याम के साथ करवा दिया जाता है। ससुराल में आकर वह धीरे-धीरे सब के साथ घुल-मिल जाती है, और एक बच्चे की माँ बनती है।

अचानक कुमकुम की जिंदगी में एक बार फिर तूफान आता है, देबू के रूप में, वह सजा भुगतकर घर वापस आता है। देबू के सारे सपने हवा हो जाते हैं। पढ़ाई में सबसे आगे रहने वाला जिंदगी के सफर में पीछे छूट जाता है। अब वह किसी से मिलना-जुलना भी नहीं करता। अपने आप को एक कोठरी में कैद कर लेता है। खाने-पीने का भी कोई होश नहीं रहता जो मिलता वों खा लेता। देबू के घर आने के पश्चात कुमकुम का जीना दुश्वार हो जाता है। उसका पति उसका शक करने लगता है, उसके हर काम में नुक्श निकालने लगता है। एक दिन देबू सोने का बेसर लेकर आता है, और अम्मा के हाथों कुमकुम को देता है। कुमकुम बेसन नाक में पहन लेती है, जब पति की नज़र बेसर पर पड़ती है। तो वह पूछता है, कि यह किसने दिया। तभी बीच में उसकी सास आकर बिगड़ती हुई स्थिति को संभाल लेती है, कुमकुम चैन की सांस लेती है, कि चलो

बिगड़ते बिगड़ते बात रह गयी। अम्मा, बहू को समझाते हुए कहती है " बहू मैं औरत हूँ जानती हूँ आदमी के शक को, भाई-भाई में खून हो जाता है। औरत का शक तो चींटी कांटे की पीड़ा देती है, पर मर्द का शक तो साँप काटा जहर होता है, जान लेकर ही पीछा छोड़ता है।" ¹²²

तबीयत खराब होने के कारण देबू की मृत्यु हो जाती है। उसकी मौत की खबर सुनकर कुमकुम की आँखें खुली की खुली रह जाती है। उसका अपराध बोध उसे भीतर ही कचोटता है, घर समाज सबकी मर्यादा का ख्याल कर उसने कभी देबू से बात नहीं की और नाक का बेसर निकालकर बक्से में रख देती है। तभी उसकी सास उसके कमरे में आती है, और उसकी सूनी नाक देख चकित रह जाती है। उसको देखकर वह सारी परिस्थिति समझ लेती है, और उसे गले से लगा लेती है। वह भी सास के गले लगकर फुट-फुट कर रोने लगती है, जैसे बरसों का बोझ हल्का होने लगा हो।

कुमकुम के चरित्र की चर्चा करते हुए डॉ. मोहन नलावड़े कहते हैं - "मन से वह देबू की रहती है तो तन से सिर्फ श्याम की। वह अपनी इस दोहरी जिन्दगी से तंग आ जाती है। देबू की मृत्यु से उसके प्रेमी की मृत्यु का एहसास उसे होता है, और वह अपने प्रेम के प्रतीक, बेसर को नाक से निकालकर परे रख देती है। नारी किस तरह नियती के क्रूर चक्रों में फँसकर छटपटाती रहती है, जहाँ न उसे राहत मिलती है और न ही इससे छुटकारा।" ¹²³

'अपने होने का अहसास' कहानी के सभी पात्र मध्यवर्ग से संबंधित हैं। कहानी में पति द्वारा पत्नी पर होने वाले यौन शोषण, अपमान तथा अत्याचार का चित्रण किया गया है। कहानी की नायिका मध्यवर्ग की उन स्त्रियों में से है, जो अपनों के आत्मीयतापूर्ण व्यवहार के लिए तरसती रहती हैं। क्योंकि पति विलासी है, और अपनी पत्नी को जाहिल कहता है। पत्नी को शरीर का साधन मात्र समझता है। दोनों का एक पुत्र है, राजन। जिसे बाहर पढ़ने भेज देता है। वह जब छुट्टियों में घर आता है। तब भी उसे अपनी माँ से दूर रखा जाता है। राजन की माँ अपने बेटे के लिए जिंदगी भर तरसती रहती है। पढ़- लिखकर राजन आई.ए.एस बन जाता है। उसके पिता

उसका ब्याह किसी अंग्रेजन लड़की से करवाना चाहते हैं, और अपनी पत्नी को कोसते हुए कहते हैं - " निपट गँवार, फूहड़, औरत मेरे गले पड़ी, जिसके साथ दो घड़ी भी न बैठा जाए। लड़के के लिए ऊँची सोसाइटी की लड़की लाऊँगा, जो तेरी नाक में नकेल डालकर फिराएगी चकरी की तरह। देखना, सारी संपत्ति उसके नाम कर दूँगा, तब तू देखेगी कि आदमी रूपवती अप्सरा पत्नी के तलवे कैसे चाटती है ! एक घड़ी भी लड़का बाहर नहीं रहेगा। अरे, जब घर में ही जादू फिरनेवाला हो तो आदमी बाहर क्यों फिरे ! ऐं ! " ¹²⁴

राजन अपनी पसंद की लड़की से शादी करके घर आता है। लड़की को देखकर पिता के पैरों तले जमीन खिसक जाती है और क्रोध से चिल्लाने लगते हैं, तब राजन कहता है - "जिस औरत को आप उम्रभर चींटी समझकर पैरों तले रौदते रहे, वही मेरी आराध्य देवी रही। माँ ही मेरा आदर्श रूप रही और मैंने उसी की तरह एक सीधी-सादी लड़की को अपना जीवन साथी भी चुना है। "माँ आशीर्वाद दो।" कहता राजन उसके पैरों की तरफ झुक गया, "माँ, मैं तुम्हें लेने आया हूँ। मेरे घर को तुम अपने हाथों से सँवारोगी। मैं तुम्हें यहाँ अब रहने नहीं दूँगा।" ¹²⁵

बेटे की बात सुनकर राजन की माँ खुशी से निहाल हो जाती है, और बहू-बेटे को अपनी बांहों में समेट लेती है। उसे आज पहली बार अपने जीवित होने का अहसास होता है। पति द्वारा हर बात पर प्रताड़ित, उपेक्षित हुई स्त्री, आज बेटे का प्यार सम्मान पाकर गदगद हो जाती है। इस कहानी के अंतर्गत लेखिका के नारी की मूल संवेदना को नई दृष्टि दी है।

'क्यों नहीं' इस कहानी के सभी पात्र उच्च मध्यवर्ग से संबंधित हैं। इस कहानी की नायिका 'गुड़िया' प्यार में धोखा खाती हैं। गुड़िया जीस आई.ए.एस अधिकारी से प्यार करती है। वह गुड़िया के मां-पिता से गुड़िया का हाथ मांगता है, वह दोनों खुशी से उछल पड़ते हैं, कि घर बैठे इतना अच्छा लड़का मिल गया। अचानक एक दिन दिनेश की मां का पत्र आता है, और वह गाँव चला जाता है। कुछ समय बाद गुड़िया को दिनेश का पत्र आता है, कि मां की अंतिम इच्छा अनुसार उसकी बहन की अनाथ लड़की से शादी करनी पड़ी, पत्र पढ़कर गुड़िया का दिल टूट

जाता है। पहले प्यार का टूटना कितना दर्दनाक होता है, इन्सान जिंदगी भर के लिए कमजोर हो जाता है। किंतु उसकी माँ साहस कर उसके कमरे में जाती है, और उसे समझाते हुए कहती हैं - " गुड़िया दिनेश की इस बुजदिली का यही तमाचा -भरा जवाब होगा कि अब तुम खुद आई.ए.एस बनकर दिखाओ। मैं दूसरी माँ की तरह तुम्हें अच्छे रिश्ते का झूठा आश्वासन नहीं दूंगी। दुनिया में कहीं अच्छा नहीं है। जो व्यक्ति खुद स्वावलंबी होगा, वही दुनिया का सच्चा आनंद प्राप्त कर सकता है, और आत्मनिर्भर होने के लिए साहस, विश्वास एवं परिश्रम की अति आवश्यकता है। छोटी-छोटी विपत्तियाँ, जो हमेशा इन्सान को कमजोर कर देती हैं, इनसे परे हो जाओ, अपने को ठोस बना लो।" ¹²⁶

मध्यवर्गीय परिवारों में स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण था वह दृष्टिकोण टूट रहा है। अब बेटियों को किसी के भी पल्ले बाँध कर सरका बोझ हल्का नहीं करते, बल्कि किसी भी अयोग्य के हाथ, अपनी बेटी का हाथ देने की बजाय अपने पास रखना पसंद करते हैं। इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने एक ऐसी माँ का वर्णन किया है, जो परिस्थितियों के सामने हार नहीं मानती, बल्कि उससे लड़ना जानती है। गुड़िया की माँ ऐसी ही स्त्री है जो पुरानी रूढ़ियों तथा पारंपरिक रूप की धज्जियाँ उड़ा देती है। गुड़िया की माँ ने अपनी बेटी को आई.ए.एस, बना कर दिखा देती है, कि स्त्री अपने अस्तित्व का निर्माण स्वयं करती है। अब वह दिन नहीं रहे जब औरतें शादी टूटने के गम में आँसुएं बहाया करती थी।

'ढहता कुतुब मीनार' कहानी में लेखिका ने टूटे हुए दाम्पत्य जीवन को चित्रित किया है। सपना शिक्षित नारी समाज का प्रतिनिधित्व करती है। मध्यवर्गीय आधुनिका, शिक्षित सपना का विवाह मिलिटरी मेजर राहुल से होता है। हमेशा से उसके मन में पति और प्रेमी के लिए बहुत ऊँची कल्पना रहीं हैं जिस प्रकार कोई अपने परमात्मा का ख्याल करता है। उसी प्रकार उसमें कोई बुराई ना हो, शौक-व्यवसन ना हो, सलीकेदार, हुनरदार हो, पाक-साफ हो, बस जिस पर सिर्फ उसका अधिकार हो, उसे बचपन से ऐसी चीजें पसन्द आती थी जो सबसे अलग हो, और

किसीके पास ना हो । उसकी इन बातों को देखकर दादी उससे चिढ़ी-सी रहती और चिल्लाती,"बड़ी सलीकेवाली लड़की निकलेगी, पता नहीं कोई राजकुमार ही आए इसे ब्याहने!"वह दादी की बात पर हँस देती और कहती, "दादी, राजकुमार तो आएगा ही, अगर वह भी सलीकेवाला नहीं हुआ तो मुँह की खाएगा, मेरे नाम पर रोएगा !" ¹²⁷

वह खुश थी कि उसका ब्याह एक मिलिटरी अफसर से हुआ है । उसे क्या पता था कि जिंदगी उसके साथ ऐसा खेल खेलेगी कि जिसके साथ वह ब्याह के आई है वह तो उसकी कल्पना से बिल्कुल भिन्न हैं । वह तो उस जैसी छुई-मुई लड़की चाहता ही नहीं । वह तो नीलू से प्रेम करता है, अपने मध्यवर्गीय रूढ़िवादी विचारों वाले माता-पिता की जिद और दहेज के पैसों के लिए सपना से ब्याह करता है । जिससे छोटी बहन की शादी करके अपनी जिम्मेदारी से मुक्ति पाले।शादी के पश्चात भी राहुल नीलू से ही संबंध रखता है वह कहता है " सपना, तुमसे पहले नीलू मेरी जिंदगी में आई है, त्याग तो उसका है, मैं अगर अपने पुराने विचारों वाले माता-पिता के सामने ब्याह नहीं कर सकता तो प्यार तो कर ही सकता हूँ न !" ¹²⁸ मैं सारी जिंदगी यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकती,हमें अलग होना होगा? "कहा जाना है, पहले सोच लो ।" राहुल को भय था कहीं आत्महत्या न कर ले । "कहीं भी जाऊँ अब तुमसे मतलब? मैं माँ के पास जाऊँगी ।" मुझे पता है तुम माँ के घर नहीं जाओगी, इसलिए कहता हूँ, ठंडे दिमाग से जाना ।" राहुल ने कहा, राहुल का यह विश्वास उसे बुरी तरह खल गया । वह एड़ी से चोटी तक सुलग उठी और बिना रोए-पीटे,एकदम तटस्थ भाव से अपने जाने का प्लान बनाती रही, अपने को समेटती-सहेजती रही और एक दिन एकदम चुपचाप उसने राहुल का दरवाजा छोड़ दिया ।" ¹²⁹ रिश्ते इतने सड़ गल गये थे कि उसमें कहि खून, मवाद, दर्द नहीं था । टूटने का, अलग होने का जरा भी अहसास नहीं था । वह ही बेकार में इतने दिन भ्रम को पाले थी।सब कुछ सहेजना, समेटना चाहती थी ।

पति का घर छोड़ने के बाद वह मायके भी नहीं जा सकती। क्योंकि वह जानती है "जहाँ शादी के नाम पर लड़कियों की बलि चढ़ाई जाती हो, उस घर में उसकी बात सुनने वाला कोई

नहीं होगा। वह उस संस्कृति के वातावरण में पली थी जहाँ पुरुष का हर रूप आदेश माना गया है।¹³⁰ मध्यवर्गीय लोगों की सबसे बड़ी दुर्बलता यही है कि परंपरागत संस्कार उनको अपनी अकड़ से मुक्त होने नहीं देते। अपनी बेटी के लिए भी वह अपने संस्कारों के साथ समझौता नहीं कर सकती।

वह अपनी सहेली के सहारे एक छोटे से अखबार के दफ्तर में नौकरी कर लेती है। और धीरे-धीरे एक ऊँचे मुकाम तक पहुँच जाती है। सपना अपने दुष्चरित्र पति को छोड़ देती है, और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर स्वतंत्रता से जीवन यापन करती है। इस एकांकी जीवन में भी वह खुश है, क्योंकि यहाँ वह अपनी भावनाओं का सम्मान कर सकती है। अपने पैरों पर खड़ी होना ही उसकी सबसे बड़ी सफलता है। मध्यवर्गीय नारी की आत्मनिर्भरता, निडरता, आत्मविश्वास सपना में देखने को मिलता है। जो अपने आत्म सम्मान, प्रतिष्ठा के लिए परिश्रम करती है, किंतु अपने जीवन की परिस्थितियों एवं हालातों के सामने घुटने नहीं टेकती, बल्कि उससे लड़कर वह अपना एक अलग मुकाम बनाती है।

'भाग्य' इस कहानी के सभी पात्र मध्यवर्ग से संबंधित हैं। कहानी में मृत्यु के बाद की स्थिति को चित्रित किया गया है। साँस की मृत्यु के पश्चात बहु तारा को कोई दुःख नहीं होता। तारा निःसंतान स्त्री है, इसलिए उसकी सास उसे बच्चे के लिए ताना मारती है, और उसके पति को हमेशा दूसरी शादी करने एवं बच्चा गोद लेने की बात कर उसे अपमानित करती है। पर कुछ समय बाद तारा की सास को कैंसर होने से उसकी मृत्यु हो जाती है। तब उसे सुहागिनों की तरह साज-सिंंगार करके जलाया जाता है। तारा के घर में मृत्यु का दुःख-शोक किसी के भी चेहरों पर दिखाई नहीं देता। तब लोग बहू और बेटी में अंतर करते हुए कहते हैं - "भाग्य तो बढ़िया था जिस औरत के इतने बेटे हों, फिर सुहागन मरे तो भाग्य तो और ही अच्छा हुआ ना.... वह तो बेचारी अभागन निकली। भगवान उसे एक बेटा कम करके लड़की दे देता तो कम से कम एक लड़की तो होती जो माँ की मौत पर बिलख-बिलख कर रोती। बेटे बड़े हो गए, उन्हें क्या परवाह और बहुएँ

तो पराई होती ही है। उन्हें तो सास के मरने की खुशियाँ मनानी ही थीं। पर बेटी तो माँ को याद कर-करके रोती तो सही।"¹³¹ मेहरुन्निसा परवेज़ ने इस कहानी के माध्यम से यह प्रस्तुत किया है कि "सचमुच बेटी तो बस जीवन-भर रोने के लिए ही होती है। माँ-बाप के मरने के बाद भी लोग उसे सिर्फ रोने के लिए ही याद करते हैं। जैसे आँसुओं की जायदाद ही उनके नसीब में लिखी हो।"¹³²

'अम्मा' कहानी में एक मध्यवर्गीय अनुशासनप्रिय माँ का चित्रण किया गया है। नायिका सुमन और उसके दो बहनों की डोर अम्मा के हाथों में थी। जो उसकी मृत्यु के बाद बिखर जाती है। नायिका सुमन पति के घर में उपेक्षित जीवन जीने के लिए विवश है, अम्मा जीवित थी तब तक उसका पति भी आदर्श बेटा, पति बनने का ढोंग करता रहता था। अम्मा मध्यवर्गीय विधवा स्त्री थी, वह किसी भी हाल में अपनी बेटियों को खुश देखना चाहती थी, व उन्होंने सुमन का विवाह एक विधुर के साथ तय कर दिया, उन्होंने वैभव सुख-सुविधा देखकर बेटी को विदा कर दिया। उसी तरह छोटी बहन उमा का विवाह विदेश में कर दिया। शोभा दीदी का ससुराल किसी कैद से कम नहीं था, सास उन्हें हमेशा घर के कामों में लगाई रहती थी, उन्हें बचपन से ही घर के कामों में कोई रुचि नहीं थी, इसीलिए वह कोई न कोई बहाना कर मायके आजाया करती थी, फिर हफ्तों रुक जाती, जब जीजाजी लेने आते तो उन्हें जाना पड़ता। ऐसे ही कुछ दिन चलता रहा, फिर उन्होंने एम.ए. में एडमिशन करवा लिया और फिर अम्मा के घर ही रुककर अपनी पढ़ाई पूरी करती है। उन्हें और पत्नियों की तरह पति और सास के इशारों पर नाचना नहीं पसंद था इसलिए अपनी पढ़ाई पूरी कर, सर्विस कर लेती है, ससुराल वालों को उसका सर्विस करना पसंद नहीं था, सास मध्यवर्गीय रूढ़िवादी विचारों वाली महिला थी, जो बहु से साफ-साफ कह देती है, कि ससुराल और सर्विस मेसे किसी एक को चुनना होगा। दीदी ने सर्विस को चुना, उनके इस फैसले में अम्मा ने भी उनका साथ दिया। किन्तु कुछ दिनों बाद अम्मा की मृत्यु हो जाती है। अम्मा

मृत्यु के पश्चात दीदी को उनका अकेलापन खाये जाने लगा। तब उन्हें अपनी गलती का अहसास होता है।

उन्होंने अपने ही हाथों से अपनी गृहस्थी उजाड़ ली थी। इसी दुःख में घुट-घुट के एक दिन दम तोड़ देती हैं और जीजाजी भी दूसरा विवाह कर लेते हैं। अम्मा उनके परिवार के लिए एक छायेदार वृक्ष की भाँति थी, जिसके छाये में सब महफूज थे, अम्मा के न रहने से जैसे सब कुछ खत्म हो जाता है।

'सजा' कहानी में लेखिका ने मध्यवर्गीय स्त्री की अन्तर्जातीय विवाह की समस्या का वर्णन किया है। कहानी के नायिका का उमा है। ईश्वर के आशीर्वाद से पाँच भाई-बहन हैं। जब तक सब छोटे थे, तो पिता की नोकरी से ठीक-ठाक गुजारा हो जाता था। किन्तु जब से बेटियाँ बड़ी होने लगी तो, माथे की चिन्ता रेखा स्पष्ट दिखाई देने लगी। तीन बेटियों का ब्याह करना कोई मामूली बात थोड़ी थी। बड़ी बेटि का ब्याह तो देखते- देखते ही निपट गया। क्योंकि बाबूजी के दोस्त ने अपने बेटे के लिये आगे से बेटि का हाथ मांगा था। पहली बेटि का ब्याह तो, माँ के गहने, नाते-रिश्तेदार के योगदान, कुछ जमा-पुंजी, गांव की फसल आदि से बेटि विदा हो गयी, बाबूजी को पता भी नहीं चला। दूसरी बेटि उमा के ब्याह की बारी आई तो समय भी आगे बढ़ गया था, कई रिश्ते आते लेकिन बिना किसी हिचक से दहेज की मांग करते। उमा एम.ए की पढ़ाई पूरी करने के बाद, बाबूजी ने उसे ब्याह के लिए दो वर्ष रोक रखा था। पर कहीं बात नहीं बनी तो, उमा के आग्रह पर नौकरी करने की स्वीकृति देते हैं। वह एक बैंक में नौकरी कर लेती है, उसके नौकरी करते ही घर की स्थिति धीरे-धीरे बदलने लगती है। पुराने घिसे पिटे समानों की जगह नये सामान ने ले लिया था, नया सोफा, फ्रिज, गोदरेज की आलमारी आ गयी थी, जो वस्तुएं सपना हो गयी थी, वह भी घर में मौजूद हो जाती हैं। पूरे मोहल्ले में उमा उदाहरण बन गयी थी, लोग उसके विषय में चर्चा करते हुए कहते हैं - "देखो, फलाँ की बेटि बेटे से बढ़कर गुणी निकली ; कैसे बेटे के बराबर कमाकर बाप को दे रही है।"¹³³ जब उसने पहली बार स्कूटर लिया तो "जैसे सारे

मोहल्ले की औरतों ने भगवान् के आगे उलाहना- भरे आँसू चढ़ाए कि ऐसी सुघड़ कन्या उन्हें क्यों न दी ? वह जब भी स्कूटर पर निकलती, औरतों, बुढ़े, मर्द, जवान् - सब मुँह फाड़कर देखते, मानो किसी अजूबे को देख रहे हों ।"¹³⁴

उमा, के नोकरी करने के पश्चात माँ- बाबुजी घर में शादी का जिक्र करना तक छोड़ देते है । तब वह खुद अपने लिये लड़का पसंद करती है । जब यह बात घर मे पता चली तो खलबली सी मच गयी थी । लेकिन बात को दो -तीन दिन में सब भूला देते है । उमा को जब यकीन हो गया कि शादी के लिए घर में अनुमति नहीं मिलेगी, तब वह अपने पसंद किये लड़के से अन्तर्जातीय विवाह कर लेती है । लेकिन घर के सभी लोगों ने उससे सारे रिश्ते तोड़ लिये और पिता की मृत्यु तक उसे यह सजा भुगतनी पड़ी ।

मध्यवर्गीय लोगों की मानसिक और सामाजिक व्यवस्था ही ऐसी है कि वह सामनेवाले को कभी माफ नहीं करता, खुद तो रोज मंदिर जाकर रोता- गिड़गिड़ाता है, छमा मांगता है; खुद किसी को माफ करने की क्षमता नहीं रखता । वह सामने वाले के गुण तो कभी याद नहीं रखता, लेकिन उससे एक भी गलती हो जाये तो उसे जीवन भर नहीं भुलाता । माफ करने की योग्यता उसमें नहीं है, अगर योग्यता हो भी तो उसे पनपने नहीं देना चाहता । इसी कारण से उमा कि एक गलती को किसी ने माफ नहीं किया । उमा को घर से, फिर रिश्ते से, फिर दिमाग से, फिर यादों से निकाल दिया गया । बाबुजी के जीते जी किसी ने गलती से भी उमा का नाम घर में नहीं लिया था।

मध्यवर्गीय लोगों की दकियानूसी हैं, जो आधुनिक होते हुए भी अपनी जड़ मान्यताओं में बंधा हुआ है, और जो समाज में परिवर्तन आ रहे हैं । उसको उसी हद तक स्वीकार कर पाता है । जहाँ तक उसका स्वार्थ और उसके लाभ की बात है उसके आगे परिवर्तन को वह स्वीकार कर पाता या उसके आगे के परिवर्तन को वह अपने सामाजिक रचना से जोड़कर उसे स्वीकार नहीं कर पाता है । एक स्त्री के लिए सम्मान जनक बात है, जो पढ़ी-लिखी नोकरी करने वाली है । जिसकी सामाजिक दृष्टि से एक अलग पहचान है । अपने जीवन को अपने अनुसार जीने के लिए सम्पन्न

है, फिर भी वह इतना सब होने के बावजूद भी वह अपने जीवन साथी का चुनाव करने के लिए स्वतंत्र नहीं है, और वह यदि घर-परिवार के इच्छा के विरुद्ध जाकर अपने जीवन साथी का चुनाव करती हैं। तो उसे घर-परिवार, समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है, और उससे सारे संबंध तोड़ दिये जाते हैं।

'लौट जाओ बाबुजी' मध्यवर्गीय परिवारों में अन्तर्जातीय विवाह का स्वरूप कितना अस्थिर एवं खोखला होता है। यह इस कहानी में देखने को मिलता है। शालू प्रगतिशील विचारों वाली नारी है। वह गिरीश से प्रेम करती है। शालू, अपने बाबुजी से बताती हैं कि मैं और गिरीश दोनों शादी करना चाहते हैं। अम्मा और भैया इस बात की मंजूरी कभी नहीं देंगे, क्योंकि गिरीश दूसरी जाति के हैं। बाबुजी आप ही कुछ बताइये, गिरीश शादी के लिए दबाव बना रहें हैं। बाबुजी कहते हैं कि "बेटा तुम्हें यकीन है, तुम धोखा नहीं खा रही हो ? सोच लो अच्छे से, कल लौटने का दरवाजा नहीं होगा।"¹³⁵ बाबुजी विचार लिया है, अंतिम निर्णय के लिए गिरीश ने सिर्फ दो दिन का वक्त दिया है। बाबुजी बहुत ही असमंजस में थे, कही बेटा का निर्णय गलत ना पड़ जाये। जितना वह ऊपर से शान्त दिख रहे थे उतनी ही उथल-पथर उनके भीतर मची थी, बहुत ही गंभीरता से सोच-विचार कर कहते हैं - "शालू बेटा, अब तुम स्वयं अपना अच्छा-बुरा सोच सकती हो। तुम्हें अपने निर्णय लेने का हक है। मैं तुम्हारे निर्णय में तुम्हारे साथ हूँ, पर दूसरों की नहीं कह सकता।"¹³⁶ शालू अपने बाबुजी की सहमति से गिरीश के साथ भाग कर शादी कर लेती हैं।

शालू दूसरी जाती की है इसलिए उसे उसके ससुराल वाले नहीं अपनाते। उसपर अत्याचार करते हैं, उसके हाथ का पका खाना नहीं खाते। पति भी उसका साथ नहीं देता। गिरीश के पास पत्नी के लिए वक्त नहीं है। वह पत्नी को अपनी धरोवर समझता है। पत्नी के अपने रिश्ते भी हो सकते हैं, वह कभी सोच नहीं सकता उसका मानना है कि पत्नी बनने के बाद लड़की को अपना पिछला सब भूल जाना चाहिए। गिरीश बड़े शहर में रहने वाला स्वतंत्र मनोवृत्ति का व्यक्ति था।

वह तो सोचता है, सयानी होने के बाद लड़की अपने लिए अपने भविष्य के लिए स्वतंत्र रहती है। बेकार की झंझट उसे पसंद नहीं थी। उसका कहना था, ब्याह के बाद नए जीवन को ही याद रखना चाहिए। ससुराल को ही सब कुछ समझना चाहिए। मध्यवर्ग के पुरुष की इसी अधिकार-लिप्सा पति-पत्नी के संबंधों को गला रही है। परिस्थिति तो तब भयावा हो जाती है, जब शालू के बाबुजी उसके ससुराल से अपमानित होकर वापस जाते हैं।

बाबुजी जब उसके ससुराल आते हैं, तो वह बाबुजी को उसके ससूरजी के पैर छूने नहीं देती। बाबुजी ने यह बात बहुत ही लाचार होकर मानी थी, पर उसने अंदर से बहुत दृढ़ होकर बाबुजी से मना किया था। उसके इस विरोध से नाखुश होकर वह उससे झगड़ा करता है, कि मैं अपने पिता का अपमान बरदास्त नहीं कर सकता। तभी शालू कहती है कि "विरोध तो, गिरीश, तुमसे ज्यादा मैंने सहा है। नारी को कितना और क्या-क्या झेलना पड़ता है, यह तुम क्या जानो! रही बात पैर छूने की, तो इसके लिए मैंने उन्हें मना किया। हमारी शादी परंपराओं से हटकर हुई है, फिर उन फालतू की विरासती परंपराओं को ढोने से लाभ? हमारे पढ़ा-लिखा होने का फायदा? मेरे पिता केवल इसलिए छोटे हो गए कि वे बेटी के पिता हैं? तुम्हारा तो कहीं कुछ नहीं छूटा, पर मेरा तो सब कुछ कट गया; जैसे बाढ़ ने आकर किनारा काट दिया हो।"¹³⁷

एक दिन मौका देखकर बाबुजी, समधीजी से बात करते हैं, मेरी बेटी आपकी बहू है, दोनों ने प्रेम विवाह किया है, पर मेरी बेटी अच्छे संस्कारों की है। ससूरजी के सामने अपने बाबुजी को हाथ जोड़े खड़ा देख नायिका गुस्से से लाल हो जाती है। ससुर द्वारा अपने बाबुजी का अपमान होते देखकर, शालू मध्यवर्ग लोगों की खोखली मानसिकता पर व्यंग्य करती है - "पढ़े-लिखे, ऊँचे पद पर कार्य करनेवाले बाबुजी एक निपट, उजड़, गँवार व्यक्ति से सिर्फ इसलिए छोटे हो गए थे, क्योंकि वे एक लड़की के पिता थे।"¹³⁸ वह सब कुछ बर्दाश्त कर सकती है, पर अपने बाबुजी का अपमान नहीं, इसलिए वह अपने कलेजे को कठोर करके वह खुद अपने बाबुजी को जाने को कहती है।

मध्यवर्गीय समाज कितना भी आधुनिक क्यों न बन जाये किन्तु आज भी लड़की वालों को, लड़के वालों के सामने झुकना ही पड़ता है। इस विडंबना का यथार्थ चित्रण मेहरुनिसा परवेज़ ने इस कहानी में किया है।

'पापा का घर' कहानी में मध्यवर्गीय परिवार की व्यथा का अंकन किया है। माँ की मृत्यु के पश्चात अर्धे उम्र वाले पिता के पुनर्विवाह के कारण जवान बच्चों पर होने वाले मानसिक तनाव का उल्लेख किया है। घर में नयी मम्मी के आने से तीनों बच्चे बेगाने हो जाते हैं। मालवीका एक दिन पाप से मिलने उनके घर जाती है। पाप का घर एकदम बदला-बदला लगता है, जिस घर की एक-एक ईंट मम्मी ने अपने सामने रखवाई थी, जिस घर का कोना-कोना अपने हाथों से सजाया था, नयी माँ के आने से उस घर की साज-सजावट नये जवाने की तरह, किमती-किमती चीजों से सजाया गया था। घर पहले से बेहतर है, पर उसे तो वहीं घर अच्छा लगता है, जो मम्मी का था। पाप का घर तो उसे बेगाना लगने लगता है। पाप को देखकर उसे आश्चर्य होता है जो पहले की तरह बूढ़े नहीं लगते, बल्कि अब अधिक चुस्त-दुरुस्त जवान दिखाई देते हैं। अचानक एक बच्चा बाहर से दौड़ कर अंदर आता है, जो उसके बेटे की ही उम्र का है। वह पापा और माँ का बेटा है। उसे अजीब लगता है, उसे क्या कह कर पुकारे। वहाँ जब तक थी बड़ी मुश्किल से अपने आँसु को रोक रखा था, भीतर-भीतर वह अपनी मम्मी के पुराने घर को याद कर दुःखी होती है और पिता से इजाजत लेकर वहाँ से वापस आ जाती हैं।

मालविका अपने छोटे भाई प्रदीप से उसके होस्टल मिलने जाती है। और पापा के बारे में बताती है, तो प्रदीप कहता है - "मम्मी की जोड़ी गृहस्थी पर किसी दूसरे का अधिकार हो, यह सहन नहीं होगा। "दीदी, अब हमें यह याद रखना होगा कि वह अब हमारा नहीं, पापा का घर है।"¹³⁹ और वह अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए अमेरिका चला जाता है। जिससे उसे किसी के सहारे जरूरत न पड़े, पाप की भी नहीं। बहन बुलबुल अपने पति के साथ लंदन चली जाती है। कथा नायिका मालविका सोचती है कि "कोई भी पीछे मुड़कर देखना नहीं चाहता था, जैसे पीछे

भूत लगे हो। बस, एक मात्र वहीं अकेली छूट गई थीं, पाप और मम्मी की बड़ी बेटी होने के कारण विरासत में दुःखों का हिस्सा भी उसे अधिक मिलना था।"¹⁴⁰

ए.आर. जगताप जी कहानी में 'माँ' की महत्वता को दर्शाते हुए कहते हैं कि "जैसे चिड़िया तिनका-तिनका बुनकर अपना घोंसला बनाती हैं वैसे ही मम्मी ने भी कितने साल इस घर-परिवार को एक सूत्र में बाँधकर-जोड़कर रखा था।"¹⁴¹ तीनों बच्चों बड़े बनकर अपनी-अपनी राह की तलाश में निकल पड़ते हैं।

'निर्णय' यह ग्रामीण मध्यवर्गीय जीवन की कहानी है। कहानी की नायिका मालविका जबलपुर जिले के छोटे से हरई गाँव में पढ़ाई के दौरान तीन महीने का कोर्स पूरा करने आती है। वहाँ सरपंच के घर में आकर रुकती है। सरपंच से अपने अलग रहने की कोई अलग व्यवस्था करने को कहती हैं, पर सरपंच की पत्नी उसे अपने घर में रहने को कहते हैं। मालविका उन लोगों को कष्ट देना नहीं चाहती है, वह अम्मा से कहती है, मुझे यहाँ तीन महीना रुकना होगा, तो माँ कहती है - "तीन माह की जगह तीन साल रहो, तुम्हें कौन रोकता है ? जैसा हम खाते हैं, वैसे तुम्हें खिलाएँगे।"¹⁴² "अम्मा की मेहमान नवाजी पर वह दंग रह गई। कितनी आसानी से बोल रही थी यह सब। शहर में तो लोग एक दिन भी किसीका ठहरना पसंद नहीं करते ; एक समय खिलाना भी पसंद नहीं करते। कितना अंतर था शहर और गाँव की संस्कृति में !"¹⁴³

गाँव में आने के बाद मालविका को पता चलता है कि यहाँ की औरतों ने जबलपुर तक भी नहीं देखा उसे आश्चर्य होता है - "अम्मा, जबलपुर का तो यहाँ से दो घंटे का रास्ता होगा, और तुमने जबलपुर नहीं देखा !" उसने विस्मय से कहा। उसे आश्चर्य सा हुआ। गाँव की भोली औरतें आज भी अपने घर को, आँगन को, गाँव को, समाज को ही सारा संसार समझती हैं ! इन्हीं से घिरी वे अपना जीवन काट देती हैं। बाहर का कुछ नहीं जानती।"¹⁴⁴ दुनिया कहां से कहां पहुंच गयी है, इन्हें किसी बात की खबर नहीं। ये अपनी सीमित दुनिया में ही खुश हैं इन्हें ज्यादा की

चाह नहीं, जिस दिन इनके भीतर भी कोई इच्छा पनपने लगेगी तब यहाँ भी परिस्थितियाँ बदलने लगेगी।

निर्णय कहानी में लेखिका ने ग्रामीण नारी जीवन एवं गाँव के लोगों के मानवीय गुणों को दिखाया है गाँव में भले ही सुविधाएं कम हैं लेकिन यहां के लोग में अपनत्व, प्रेम, लगव अधिक देखने को मिलता है, इसी अपनेपन के कारण शहर से तीन महीने का कोर्स करने आई मालविका गाँव में इन्हीं लोगों के साथ रहने का निर्णय लेती है।

'अपने-अपने लोग' मेहरुन्निसा परवेज़ ने मध्यवर्गीय कामकाजी नारी एवं अन्तर्जातीय विवाह की समस्या का वर्णन किया है। कहानी की नायिका 'सुमन' अपनी पढ़ाई पूरी कर नौकरी कर लेती है और अपने पसंद के लड़के से शादी करती है, पहले तो माता पिता नाराज होते हैं, लेकिन बाद में ममता के आगे झुक जाते हैं, और उसे अपना लेते हैं। किन्तु सुमन दूसरी जाति की थी, इसलिए ससुराल वाले उसे अपना नहीं पाते, उसे अपने किसी तीज त्योहारों में शामिल नहीं करते। पति अपने परिवार से दूर रहकर दुःखी रहता तो उसे भी उसके लिए दुःख होता। वह अकेले ही अपने परिवार से मिलने गाँव जाता और महीनों उनके साथ रहकर आता, सुमन यहां अकेले ही रहती। अब पति का स्नेह अपने परिवार वालों के प्रति अधिक बढ़ने लगा था, और अपना पूरा वेतन अपने परिवार को भेज देता था, जिससे उसके माता-पिता उसे आदर्श बेटा मानने, और यहां का पूरा खर्च सुमन के वेतन से होता था। सुमन सेंट्रल गवर्नमेंट की सर्विस में थी, और उसका वेतन पति के वेतन से अधिक था। ननद की शादी में वह गयी तो पति ने दोनों हाथों दान किया, सुमन अपना पूरा बैंक बैलेंस खत्म करके आई, ससुराल में अपनी वापसी के लिए उसने अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया था। बहन की शादी के पश्चात पति अपने माता-पिता को अपने पास बुला लेता है। एक दिन सुमन अपनी सहेली से मिलने गई तो उसकी तबीयत खराब थी, वह सहेली बताती है, कि उसे हमेशा हल्का बुखार रहता है सहेली कारण जानकर दंग रह जाती है वह सुबह पाँच बजे उठती है, और घर का पूरा काम करके, खाना बनाकर रख कर और बेटी को स्कूल

छोड़कर, खुद अपने ऑफिस जाती है, और घर लौट कर भी दो से तीन बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती है। फिर शाम की रसोई के कामों में लग जाती है। जब सोती है तो ऐसा लगता है जैसे पूरे बह्मांड का चक्कर काट कर आई हो।

यहाँ लेखिका ने सुमन के माध्यम से मध्यवर्गीय कामकाजी नारी के दोहरे शोषण का उल्लेख किया है। सुमन की सहेली से उसका दुःख देखा नहीं जाता वह कहती है, तुम इतना सब कैसे कर लेती हो थक नहीं जाती तो वह कहती है - "थकती हूँ पर फिर भी खुश हूँ। अब पति के ताने सुनने को नहीं मिलते। पति के संबंध उनके माता-पिता से अच्छे हो गए हैं; वे लोग साथ रह रहे हैं।"¹⁴⁵

मध्यमवर्गीय पुरुष का दब्बूपन उसे कितना लाचार बना देता है कि इतना सब सहने के बावजूद उसे अपने परिवार में मान-सम्मान नहीं दिला पाता। धीरे-धीरे सुमन टूट रही थी। पति, सुमन के तनख्वाह का पूरा हिसाब रखता है, उसकी अपनी कमाई पर अपना अधिकार नहीं था। अगर उसे अपनी माँ या घर के लिये कुछ खरीदना या करना होता, तो ट्यूशन से कुछ पैसे बचाकर सहेली को देती, सहेली उन्हीं पैसें से सामान खरीद कर अपनी तरफ से उसकी माँ या घर वालों को देती, जिससे उसके ससुराल में किसी को पता न चले कि वह अपने घर वालों को अपने पैसे से भेंट दे रही हैं। यहाँ मध्यवर्गीय पुरुष के अत्याचार को देखने को मिलता है जो अपनी पत्नी से काम भी करवाते हैं और उन्हें अपना गुलाम भी समझते हैं। जॉन स्टूअर्ट मिल पुरुषों के अत्याचारों की परिभाषा कहते हुए कहते हैं "पुरुष अपनी स्त्रियों को एक बाध्य गुलाम की तरह नहीं बल्कि एक इच्छुक गुलाम की तरह रखना चाहते हैं, सिर्फ गुलाम नहीं बल्कि पसंदीदा गुलाम बनाए रखने के लिए सारे संभव रास्ते अपनाए हैं।"¹⁴⁶

मध्यवर्गीय समाज में पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन से संबंधित बहुत सी मान्यताएँ प्रचलित थी, जैसे बेटी पराया धन होती है, उसके घर का पानी माता-पिता नहीं पीते, किंतु आधुनिक युग सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन आ रहा है, 'अपने-अपने लोग' कहानी में हम

ऐसे ही बदलाव को देख सकते हैं। जब पति और बेटे की मृत्यु के बाद सुमन की माँ अकेली रह जाती है तो उन्हें सुमन अपने पास रखना चाहती है। लेकिन परिवार के डर से वह अपने पति से बोल नहीं पाती तो सहेली के माध्यम से कहलवाती है - "क्या बाई यहाँ नहीं रह सकती?" "वहतो ठीक है, दीदी" "कैलाश ने जबरदस्ती कुछ बोलने की चेष्टा की," मगर बाई क्या बेटी के घर रह लेंगी? उनके इतने पुराने संस्कार; फिर समाज के लोग क्या कहेंगे?"¹⁴⁷ सहेली जवाब में कहती है - "कौन से संस्कार? कौन - सा समाज?" "मैंने कैलाश की बात की नकेल अपने हाथ में पकड़ ली, "समाज को उसी दिन टूट गया था, जब अपने कायस्थ होकर एक ब्राह्मण की लड़की से ब्याह किया था। समाज कहाँ है? कौन लोग हैं समाज में? समाज में आखिर हमीं लोंगे तो हैं। हम ही तो समाज को गढ़ते हैं और अब जब तक हम एक नया समाज नहीं गढ़ेंगे तो कोन सामने आयेगा? अपनी कमजोरी को छुपाने के लिए हम समाज को दोषी ठहराते हैं।"¹⁴⁸

यहाँ पति कैलाश के माध्यम से मध्यवर्गीय सोच का दोहरा पन देखने को मिलता है, वह हमेशा अपनी सुविधा के अनुसार अपनी चिजों को ग्रहण करता है। मध्यवर्गीय स्वकेन्द्री सोच है, जो स्वयं के हित के बारे में सोचती है साथ ही लेखिका ने समाज में परिवर्तन पर जोर दिया है, रूढ़ी, परम्परावादी मान्यताओं को खण्डित कर नये सामाजिक मूल्यों को महत्वता प्रदान की गयी है।

'जीवन मंथन' यह कहानी उच्च मध्यवर्गीय स्त्री पर बलपूर्वक थोपे जाने वाले रूढ़ियों से संबंधित है। नायिका नंदिता चौबीस वर्ष की विधवा स्त्री है। नंदिता कॉलेज में शीला, अमित और महेश के साथ पढ़ती थी। नंदिता, अमित से ब्याह करती है। अमित से ब्याह के बाद नंदिता को पता चलता है कि नंदिता उसके जी की पहली और आखरी लड़की नहीं है। एक लौती औलाद होने के नाते उसकी जायज़-नाजायज़ हरकतों पर अंकुश नहीं लगाया जाता था। धीरे-धीरे उसके सामने अमित की सच्चाई सामने आने लगी। उसे दूसरी लड़कियों से संबंध बनाने में कोई परहेज नहीं था। नंदिता अपनी नाराजगी अमित से जताते हुए कहती है "नहीं, अमित, औरत को केवल

पत्नी का आसन ही नहीं चाहिए। मैं तो सोच भी नहीं पाती कि तुम किसी और को उस दृष्टि से देखो। जिस प्रकार पत्नी पर पति का पूरा अधिकार होना चाहिए। नारी की सत्यता, पवित्रता और सतीत्व का महत्व यदि पुरुष के लिए है तो नारी भी पुरुष से यह सब चाहती है। नारी पुरुष का अंतिम नहीं, प्रथम प्यार चाहती है। पुरानी मान्यताएँ अब वर्तमान में कोई अर्थ नहीं रखतीं। समय के साथ सब बदलना चाहिए।"¹⁴⁹ अमित चिढ़कर व्यंग करता है, तुम कॉलेज में नेता थी ना इसलिए इतने सवाल-जवाब करती हो। वह कहती है यह जीवन की सच्चाई है। अगर किसी स्त्री ने विरोध नहीं किया इसका मतलब यह नहीं सबको पसंद है। दाम्पत्य जीवन में होने वाले झगड़े इसका प्रमाण है। क्या मैं घर बैठ जाऊँ? व्यापार के लिए आना-जाना भी बंद कर दूँ? "यह मैंने कब कहा? पत्नी होने के नाते मुझे भी साथ जाने का, तुम्हारे बिजनेस में साथ जुड़कर काम करने का अधिकार मिलना चाहिए। मुझमें और माँजी में अंतर होना चाहिए। मैं पढ़ी-लिखी हूँ। तुमने ब्याह के बाद घर में पटक रखा है। मेरे लिए घर की सीमाएँ निर्धारित कर दी हैं और अपने लिए बाहर की यह सीमाएँ टूटनी चाहिए।"¹⁵⁰

समय के साथ-साथ स्त्री की मानसिक दृष्टि में परिवर्तन देखने का मिलता है। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रही हैं। पुरानी परंपराओं को तोड़कर नए राह की तलाश कर रही है। नंदिता सुशिक्षित है, उसके बावजूद विवाह के बाद घर की चारदीवारी में बंद रहना पड़ता है। वह अपने ऊपर इस प्रतिबंधों का विरोध करती है। अमित एक पढ़ा-लिखा पुरुष होने के बावजूद उसकी सोच रूढ़िवादी ही है। "आर्थिक सत्ता के साथ-साथ तमाम दूसरे परिवारिक निर्णयों और औरत के पूरे अस्तित्व पर अभी हाल तक पुरुष का नियंत्रण था। अतः अपनी सत्ता को पहचान कर उठ खड़ीं औरत से पुरुष निकटता महसूस नहीं कर पा रहा। यह अलगाव उसे औरत की मदद भी नहीं करने देता। उसे लगता है कि यह बदली हुई औरत अपनी बुनियादी जिम्मेदारियों से इनकार कर रही है।"¹⁵¹ पुरुषत्व की यही सोच अमित के भीतर भी सक्रिय होती है उसके माता-पिता को नंदिता का बाहर काम करना पसंद नहीं है और वह खुद भी नहीं चाहता कि नंदिता

अपनी पढ़ाई पूरी करे या बाहर जा कर काम करे। इसलिए वह नंदिता की सहायता नहीं करता। किन्तु नंदिता, स्त्री को घर की चारदीवारी तक सीमित रखने के पुराने रूढ़ियों का पूरी तरह विरोध करती है।

मेहरून्सिसा परवेज़ जीने अपने साहित्य के माध्यम से नाही पारंपरिक स्त्री संहिता का विरोध दिखाया है, बल्कि की बदलते दौर के साथ स्त्रियों को कामकाजी तथा उन्हें अपने अस्तित्व के प्रति सतर्क भी किया है। इस विषय पर चर्चा करते हुए नासिरा शर्मा कहती है "एक औरत इनसान की तरह इंसानियत और अस्मिता के साथ जी सके वही उसकी स्वतंत्रता होगी। मसलन उसे स्त्री होने की प्रताड़ना न सहनी पड़े उसकी इच्छाओं और गुणों को देखते हुए घर के परिवेश के अनुसार उसे वह सब कुछ मील जो एक नागरिक का अधिकार होता है।"¹⁵²

नंदिता पेट से होती है उसके बाद अमित रात को घर आना ही बंद कर देता है। अधिक शराब पिये लगता है और यही शराब की लत से उसकी मृत्यु हो जाती है। उसकी मृत्यु के पश्चात सास-ससुर उसके ऊपर रूढ़िवादी परंपराओं को थोपकर जिना दुर्लभ कर देते हैं। बेटे को भी उसके पास नहीं रहने देते। उन्हें सिर्फ उनका पोता चाहिए। वंश चलाने के लिए उन्होंने नंदिता पर भी कब्जा कर लेते हैं। जब वह उस कैद से निकलने के लिए अपने माता-पिता से सहायता मांगती है तो वह भी सास-ससुर की बात मानने को कहते हैं। शिला से नमिता की यह हालत देखी नहीं जाती वह कहती है "औरत को लोग बहू, बेटा और माँ के रूप में देखते हैं, पर उसके स्वतंत्र रूप को भूल जाते हैं कि वह इनसान है, हाड़-मांस की औरत है। उसका भी सब चीज में उतना ही अधिकार बनता है जितना बेटे का तुझे अब इन रिश्तों से ऊपर आना होगा।"¹⁵³

नंदिता कहती है मेरी परवाह किसको है ? मुझे तो मर्यादा और आदर्शों की बेड़ी में बांधकर मेरा मुँह बंद करवा दिया गया है। शिला समझते हुए कहती है "लादे गए संस्कारों को तू कब तक ढोती रहोगी ? कोरे उपदेशों से पेट नहीं भरता। जिस तरह पेट भरने को रोटी खानी ही पड़ती है, जो केवल हमारी अपनी होनी चाहिए। दूसरों की साँसों से हम जिंदा नहीं रह सकते।"¹⁵⁴

समाज में नारी के ऊपर अंकुश लगाने अपनी मान्यताओं को थोपा जाता रहा है न केवल मध्यवर्ग की स्त्री पर बल्कि सभी वर्ग की स्त्रियों को भुगतना पड़ता है। महेश जैसा सहज व्यक्ति ही ऐसी स्त्री की सहायता कर सकता है।

महेश नंदिता को दूसरी शादी करने को कहता है और वह खुद उससे शादी करने को तैयार है यह बताता है। नंदिता लोक-लॉज घर परिवार, समाज के बारे में सोचती हैं तभी महेश समझाता है कि "नंदिता! खानदान, आदर्श, परंपरा, संस्कृति ये सारी बातें, मनुष्य के कीमती लिबास किसी जमाने में रहें होंगे; पर आज ये कीमती चीजें म्यूजियमों में काँच की तालाबंद अलमारियों में शोभा दे रहे हैं। अब वे मटमैले और तार-तार हो गए हैं। वे पहनने के काबिल नहीं रहे हैं। वक्त की माँग है कि नए लिबास ही पहनने चाहिए।"¹⁵⁵ यहाँ मेहरून्सिा परवेज़ ने महेश के माध्यम से समाज की उन तमाम रूढ़ियों पर कटाक्ष किया है जो परंपराओं और मर्यादाओं की आड़ में अपना स्वार्थ साधते हैं। आज की पीढ़ी परिवर्तन की माँग कर रही है।

'कोई नहीं' कहानी में मध्यवर्ग की प्रेम की समस्या का वर्णन है। मध्यवर्गीय जीवन में जिस प्रकार अन्य समस्या मध्यवर्ग के सामाजिक जीवन को घेरे रहती है, उसी प्रकार प्रेम और विवाह की समस्या भी मध्यवर्गीय लोगों को मानसिक और आंतरिक संघर्ष का कारण है। प्रेम में पड़कर भावुकता के प्रवाह में बहकर नारी मानसिक उलझनों का शिकार बनती है। अपने जीवन में जो सुनहले सपने संजोती है, यथार्थ की कठोर भूमि पर आकर वह सारा स्वप्निल संसार खंडित हो जाता है। कहानी की नायिका शुभदा, विवेक के विवाहित होने के बावजूद भी उससे विवाह करना चाहती है। विवेक, शुभदा से बताता है कि उसका विवाह बचपन में हो गया था, अब उसका अपनी पत्नी से कोई संबंध नहीं है। वह शुभदा को समझा-बुझाकर शादी के लिए मना लेता है। शुभदा अपने घरवालों के विरुद्ध जाकर विवेक से प्रेम विवाह करती है। लेकिन जब शुभदा को पता चलता है कि वह अब भी अपनी पहली पत्नी से संबंध बनाये हुए है, तो शुभदा गर्भवती होते हुए भी उसके छल को बर्दाश्त नहीं करती, विवेक से संबंध तोड़ लेती हैं, "और जब

गुड्डू उसके गर्भ में आया तो वह चौक उठी थी। बच्चा यहाँ नहीं होना चाहिए। जो कष्ट-यातना वह सह चुकी थी वह अपने बच्चे को भुगतने नहीं देना चाहती थी। और बिना इस बात की जनकारी विवेक को दिए वह चुपचाप अपनी दोस्त के घर चली गई थी मद्रास और फिर वहाँ उसने नए सिरे से जिंदगी की यातना भोगी। पर इस यातना में जहाँ आर्थिक कष्ट था वहीं मानसिक शांति थी।"¹⁵⁶ यहाँ शुभदा प्रथम पत्नी के प्रति अनुरक्त अपने पति के दुर्व्यवहार को सिर झुकाकर अपना भाग्य समझकर स्वीकार नहीं करती बल्कि निर्णय लेती हैं। अकेले अपने बच्चे को लेकर अपना जीवन व्यतीत करती है।

स्वावलंबी और आत्मनिर्णय का अधिकार स्त्री के मानवाधिकारों के बंधकत्व की शुरुआत स्त्री की पुरुष पर आर्थिक रूप से निर्भर होने से है। इन अधिकारों के लिए लड़ने की पहली सीढ़ी आत्मनिर्भरता है। प्रभाखेतान जी का कहना है कि "अर्थ ही व्यक्ति को, अधिकार देता है जिसके द्वारा वह अपनी पपरियोजनाएँ पूरी कर सके। अनेक स्त्रियाँ चाहे वे बहुत साधारण अवस्था में ही क्यों न हो आर्थिक अधिकारों से मिलने वाली सुविधाओं का महत्व जानती है।"¹⁵⁷ यहां तक कि किसी के घर बर्तन मांझने वाली साधारण स्त्री भी सम्मान पूर्वक यह कहने की हकदार है कि उसने कभी भी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया अपनी सफलता खुद अर्जित की है। आर्थिक रूप से स्वावलंबी स्त्री अपनी पसंद ना पसंद, लिवास, का चुनाव अपनी मर्जी से करने के लिए स्वतंत्र हैं। लेखिका ने अपने कथा साहित्य में मध्यवर्गीय स्त्री ही नहीं सभी वर्ग की स्त्रियों के लिए आत्म निर्भर और आत्म निर्णय पर अधिक बल दिया है। और वहीं विद्रोहिनी प्रवृत्ति शुभदा के चरित्र द्वारा स्पष्ट हुई है। शुभदा के अनुसार अब युग नहीं रहा जब नारी, पुरुष के हर अत्याचार को, अहं को स्वीकार करती थी। अब नारी भी अधिकारों के प्रति जागरूक हो गई है। नारी अधिकारों की मांग करने लगी है, वह स्वावलंबी होने के कारण स्वाभिमानी एवं आत्मविश्वासी हो रही है, यह बात लेखिका ने शुभदा के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

मेहरुनिशा परवेज़ के कथा-साहित्य का समग्र अध्ययन करने के पश्चात हम कह सकते हैं कि लेखिका ने मध्यवर्ग नारी जीवन में आए अनेक आयामों को जीवन के यथार्थ पहलुओं से जोड़कर हमारे समक्ष रखने का प्रयत्न किया है। मध्यवर्गीय पात्रों के माध्यम से सामाजिक विकृति, राजनीतिक संघर्ष, आर्थिक समस्या, धार्मिक रूढ़िवादिता, सांस्कृतिक उत्थान और पतन का सजीव चित्रण मेहरुनिशा जी के कथा साहित्य में देखने को मिलता है। आधुनिक युग में नारी कितनी भी पढ़ी-लिखी, सफल, बुद्धिमानी, संस्कारी, पारिवारिक दायित्व को निभाने वाली क्यों न हो, उन्हें भी अबला से सबला अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्हें अपने जीवन में सकारात्मकता के साथ संघर्ष कर आगे बढ़ना है, इस दृष्टि से लेखिका सफल हुई हैं। मध्यवर्गीय नारी की प्रगति तथा आत्मनिर्भरता की बराबर समर्थक और प्रचारक रही हैं उन्हें नारी प्रत्येक वर्ग में प्रताड़ित, शोषित, पराधीन और दयनीय दिखाई देती हैं। लेखिका मध्यवर्गीय नारी जीवन के हर एक पहलू को हमारे समक्ष रखने में सफल रही हैं।

संदर्भ

1. डॉ.सरोज अग्रवाल - नारी उत्पीड़न के नये रूप, हिन्दी के साठोत्तरी उपन्यासों के संदर्भ में – पी. के तनेजा क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, प्रथम सं. 2009 - पृ. 98
2. मेहरुन्निसा पारवेज़ - आखो की दहलीज – प्रतिभा प्रतिष्ठान प्रकाशन, 1685, नेता सुभाष मार्ग, नई दिल्ली सं. 1992 - पृ. 23
3. डॉ. सरोज अग्रवाल - नारी उत्पीड़न के नये रूप, हिन्दी के साठोत्तरी उपन्यासों के संदर्भ में - पी. के तनेजा क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, प्रथम सं. 2009 - पृ. 98
4. मेहरुन्निसा पारवेज़ - आखो की दहलीज - प्रतिभा प्रतिष्ठान प्रकाशन - 1685, नेता सुभाष मार्ग, नई दिल्ली सं. 1992 - पृ. 104
5. वही - पृ. 96
6. वही - पृ. 82
7. वही - पृ. 71
8. वही - पृ.120
9. वही - पृ.121
10. वही - पृ.126
11. वही - पृ.73
12. डॉ. सरोज अग्रवाल - नारी उत्पीड़न के नये रूप, हिन्दी के साठोत्तरी उपन्यासों के संदर्भ में - पी. के तनेजा क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी कम्पुरा, नई दिल्ली, प्रथम सं. 2009 - पृ. 98
13. मेहरुन्निसा परवेज़ - उसका घर – नेशनल पब्लिशिंग हऊस 23, प्रकाशन दरियागंज, दिल्ली, प्रथम सं. 1972 - पृ. 7

14. डॉ. नीहार गीते - स्वातंत्र्योत्तर महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में यथार्थ के विभिन्न रूप - पृ.105
15. मेहरुन्निसा परवेज़ - उसका घर - नेशनल पब्लिशिंग हाउस 23, प्रकाशन दरियागंज, दिल्ली, प्रथम सं. 1972 - पृ. 41
16. एक और आकाश, प्रभा खेतान द्वारा रचित कविता में से www.google.com
17. मेहरुन्निसा परवेज़ – संग्रह - उसका घर - नेशनल पब्लिशिंग हाउस 23, प्रकाशन दरियागंज, दिल्ली, प्रथम सं. 1972 - पृ. 33
18. वही - पृ. 41
19. डॉ.आर.एस जगताप - मेहरुन्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में नारी – विद्या प्रकाशन प्रथम सं. 2010 - पृ. 54
20. मेहरुन्निसा परवेज़ - कोरजा – वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, सं. 2000 - पृ. 20
21. वही - पृ. 20
22. वही - पृ. 21
23. मंजुलता सिंह - हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग – आर्य बुक डिपो प्रकाशन , सं. 2015 - पृ. 87
24. मेहरुन्निसा परवेज़ - कोरजा - वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, सं. 2000 - पृ. 72
25. वही - पृ. 72
26. वही - पृ. 59
27. वही - पृ. 180
28. वही - पृ. 181
29. मेहरुन्निसा परवेज़ – संग्रह अकेला पलाश - वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, सं. 2002 - पृ. 32

30. वही - पृ. 33
31. वही - पृ. 100
32. वही - पृ. 103
33. वही - पृ. 136
34. वही - पृ. 189
35. प्रेमचंद – निर्मला उपन्यास – सरस्वती प्रेस, बनारस, छब्बीसवा सं. 1950 - पृ. 43
36. मेहरुन्सिसा परवेज़ – संग्रह अकेला पलाश - वाणी प्रकाशन, दरियागंग नई दिल्ली, सं. 2002 - पृ. १३
37. मेहरुन्सिसा परवेज़ – संग्रह पासंग - वाणी प्रकाशन, दरियागंग नई दिल्ली, सं. 2004 - पृ.1
38. वही - पृ. 163
39. वही - पृ. 171
40. वही - पृ. 181
41. वही - पृ. 190
42. वही - पृ. 190
43. वही - पृ. 233
44. वही - पृ. 314
45. मेहरुन्सिसा परवेज़ - समरांगण - वाणी प्रकाशन, दरियागंग नई दिल्ली, सं. 2002 - पृ. 235
46. वही - पृ. 235
47. वही - पृ. 286 & 287
48. वही - पृ. 287 & 288

49. मेहरुन्निसा परवेज़ - सिर्फ़ एक आदमी – आदम और हव्वा – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ. 36
50. वही - पृ. 41
51. डॉ. विजय वरदा - साठोत्तरी हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ – विकास प्रकाशन, कानपुर, सं, 1993 - पृ 48
52. मेहरुन्निसा परवेज़ - सिर्फ़ एक आदमी (संग्रह - आदम और हव्वा) – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ. 42
53. मेहरुन्निसा परवेज़ - अपने-अपने दायरे (संग्रह - आदम और हव्वा) – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ. 48
54. वही - पृ. 47
55. मेहरुन्निसा परवेज़ - चमड़े का खोल (संग्रह - आदम और हव्वा) – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ. 55
56. वही - पृ. 57
57. वही - पृ. 57
58. वही - पृ. 59
59. मेहरुन्निसा परवेज़ - तीसरा पेंच (संग्रह - आदम और हव्वा) – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 -पृ. 66
60. मेहरुन्निसा परवेज़ - एक और सैलाब (संग्रह - आदम और हव्वा) – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ. 83
61. मेहरुन्निसा परवेज़ - अकेला गुलमोहर (संग्रह - आदम और हव्वा) – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ. 87
62. वही - पृ. 88

63. मेहरुन्निसा परवेज़ - बंजर दुपह (संग्रह - आदम और हव्वा) – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ. 97
64. मेहरुन्निसा परवेज़ - भोगे हुए दिन (संग्रह - आदम और हव्वा) – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ. 101
65. मेहरुन्निसा परवेज़ - खाली आँखों की पीढ़ा (संग्रह - आदम और हव्वा) – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ. 111
66. वही - पृ. 112
67. वही - पृ. 112
68. मेहरुन्निसा परवेज़ - जाने कब (संग्रह - आदम और हव्वा) - नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ. 118
69. मेहरुन्निसा परवेज़ - विद्रोह (संग्रह - आदम और हव्वा) – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ.128
70. वही - पृ.129
71. मेहरुन्निसा परवेज़ - बंदकमरों की सिसकियाँ (संग्रह - आदम और हव्वा) – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ.132
72. जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविता - सोनचिरई से www.google.com
73. डॉ. रेवा कुलकर्णी - हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी – चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर, प्रथम सं. 1994 - पृ. 253
74. मेहरुन्निसा परवेज़ - वीराने (संग्रह - आदम और हव्वा) – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ. 140
75. डॉ. शहाबुद्दीन शेख – गद्द - - फुलवारी पब्लिशर राजपाल एण्ड सन, सं. 2019

76. मेहरुन्निसा परवेज़ – संग्रह - आदम और हव्वा – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1972 - पृ. 173
77. वही - पृ. 173
78. मेहरुन्निसा परवेज़ - गिरवी रखी धूप (संग्रह - तहनियो के धूप) – वाणी प्रकाशन कमला नगर, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1977 - पृ. 46
79. मेहरुन्निसा परवेज़ - कयामत आ गयी है (संग्रह - तहनियो के धूप) - वाणी प्रकाशन कमला नगर, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1977 -पृ. 66
80. वही - पृ. 68
81. मेहरुन्निसा परवेज़ - खामोशी की आवाज (संग्रह - तहनियो के धूप) - वाणी प्रकाशन कमला नगर, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1977 -पृ. 87
82. वही - पृ.96
83. राजेंद्र यादव - मंत्रबिद्ध – अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, सातवों सं. 1984 - पृ. 27
84. मेहरुन्निसा परवेज़ - खुरचन (संग्रह - तहनियो के धूप) - वाणी प्रकाशन कमला नगर, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1977 - पृ. 115
85. वही - पृ. 116
86. मेहरुन्निसा परवेज़ - आरजू के फूल (संग्रह - तहनियो के धूप) - वाणी प्रकाशन कमला नगर, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1977 - पृ.122
87. मेहरुन्निसा परवेज़ - नंगी आँखों वाला रेगिस्तान (संग्रह - तहनियो के धूप) - वाणी प्रकाशन कमला नगर, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1977 - पृ.129
88. वही - पृ. 131
89. मेहरुन्निसा परवेज़ – संग्रह टहनियों पर धूप - वाणी प्रकाशन कमला नगर, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1977 - पृ. 144

90. मेहरुन्निसा परवेज़ - आकृतियाँ और दीवारें (संग्रह – गलत पुरुष) - नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1978 - पृ. 36
91. मेहरुन्निसा परवेज़ - रिश्ते (संग्रह – गलत पुरुष) - नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1978 - पृ. 43
92. वही - पृ. 47
93. मेहरुन्निसा परवेज़ - सलाखों में फसा आकाश (संग्रह – गलत पुरुष) - नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1978 - पृ. 51
94. मेहरुन्निसा परवेज़ - गलत पुरुष - नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं, 1978 - पृ. 126
95. वही - पृ. 126
96. वही - पृ. 128
97. मेहरुन्निसा परवेज़ - आकाश नील (संग्रह – फाल्गुनी) – पराग प्रकाशन, दिल्ली सं. 1978 - पृ. 17
98. वही - पृ. 10
99. वही - पृ. 10
100. वही - पृ. 23
101. मेहरुन्निसा परवेज़ - रावण (संग्रह – फाल्गुनी)- पराग प्रकाशन, दिल्ली सं. 1978 - पृ. 55
102. वही - पृ. 56
103. मेहरुन्निसा परवेज़ - चुटकी भर समर्पण (संग्रह – फाल्गुनी) - पराग प्रकाशन, दिल्ली सं. 1978 - पृ. 61
104. वही - पृ. 63

105. मेहरुन्निसा परवेज़ - बौना मन (संग्रह – फाल्गुनी) - पराग प्रकाशन, दिल्ली सं. 1978 - पृ.
106. वही - पृ. 98
107. वही - पृ. 101
108. वही - पृ. 101
109. मेहरुन्निसा परवेज़ – संग्रह फाल्गुनी - पराग प्रकाशन, दिल्ली सं. 1978 - पृ. 129
110. वही - पृ. 135
111. मेहरुन्निसा परवेज़ – संग्रह अंतिम चढ़ाई – राज कमल प्रकाशन, प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1982 - पृ. 8
112. मेहरुन्निसा परवेज़ - अयोध्या से वापसी (संग्रह - अंतिम चढ़ाई) – राज कमल प्रकाशन, प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1982 पृ. - 22
113. वही - पृ. 28
114. वही - पृ. 29
115. वही – पृ. 31
116. बी.के.तनेजा - नारी उत्पीड़न के नये रूप – पब्लिशिंग कम्पनी, कानपुर, प्रथम सं. 2009 - पृ.31
117. मेहरुन्निसा परवेज़ - बूंद का हक (संग्रह - अंतिम चढ़ाई) - अंतिम चढ़ाई – राज कमल प्रकाशन, प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1982 - पृ. 37
118. वही - पृ.38
119. वही - पृ. 42
120. मेहरुन्निसा परवेज़ - जमाना बदल गया (संग्रह - अंतिम चढ़ाई) – राज कमल प्रकाशन, प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम सं. 1982 पृ. 98

121. मोहन नलावड़े - मेहरुन्निसा परवेज़ कथा सहित्य – चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर प्रथम सं. 2008 - पृ.73.
122. डॉ.मोहन नलावड़े - मेहरुन्निसा परवेज़ कथा सहित्य – चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर प्रथम सं. 2008 - - पृ.75
123. वही - पृ. 75
124. मेहरुन्निसा परवेज़ - अपने होने का एहसास (संग्रह - सोने का बेसर) – सत्साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1991 - पृ. 71
125. वही - पृ. 74
126. मेहरुन्निसा परवेज़ - क्यों नहीं (संग्रह - सोने का बेसर)- सत्साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1991 - पृ. 74
127. मेहरुन्निसा परवेज़ – ढहता कुतुबमीनार (संग्रह - ढहता कुतुबमीनार) – विद्या विहार प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 15
128. वही - पृ. 17
129. वही - पृ.18
130. वही - पृ. 18
131. मेहरुन्निसा परवेज़ - भाग्य (संग्रह - ढहता कुतुबमीनार) – विद्या विहार प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ. 164
132. वही - पृ. 164
133. मेहरुन्निसा परवेज़ - सजा (संग्रह – आम्मा) – ज्ञान गंगा, दिल्ली, प्रथम सं. 1997 - पृ. 25
134. वही - पृ. 25

135. मेहरुन्निसा परवेज़ – लौट जाओ बाबुजी (संग्रह – आम्मा) - ज्ञान गंगा, दिल्ली, प्रथम सं. 1997 - पृ. 36
136. वही - 37
137. वही - 40
138. वही - 38
139. मेहरुन्निसा परवेज़ - पापा का घर (संग्रह – आम्मा) - ज्ञान गंगा, दिल्ली, प्रथम सं. 1997 - पृ. 79
140. वही - पृ.81
141. ए.आर.जगताप – मेहरुन्निसा परवेज़ के कथा सहित्य में नारी – विद्या प्रकाशन, कानपुर - प्रथम सं. 2010 - पृ. 42
142. मेहरुन्निसा परवेज़ - निर्णय (संग्रह – आम्मा) - ज्ञान गंगा, दिल्ली, प्रथम सं. 1997 - पृ. 92
143. वही - पृ. 92
144. वही - पृ. 89
145. मेहरुन्निसा परवेज़ - अपने अपने लोग (संग्रह – आम्मा) - ज्ञान गंगा, दिल्ली, प्रथम सं. 1997 - पृ. 149
146. सविता रानी – हिंदी सहित्य में स्त्री चेतना – साहित्य संचय प्रकाशक, दिल्ली, प्रथम सं. 2019 - पृ. 11
147. मेहरुन्निसा परवेज़ - अपने अपने लोग (संग्रह – आम्मा) - ज्ञान गंगा, दिल्ली, प्रथम सं. 1997 - पृ. 153
148. वही - पृ. 154

149. मेहरून्निसा परवेज़ – जीवन मंथन (संग्रह – समर) – ग्रंथ अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018 - पृ. 70
150. वही- पृ. 70
151. डॉ. अनुपमा तिवारी - मेहरून्निसा परवेज़ की कहानियाँ : सामाजिक यथार्थ और कथाभास – अमन प्रकाशन कानपुर, प्रथम सं. 2017 - पृ.161
152. नासिरा शर्मा - औरत के लिए औरत – सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018 - पृ. 201
153. मेहरून्निसा परवेज़ - जीवनमंथन (संग्रह – समर) - ग्रंथ अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018 - पृ. 61
154. वही - पृ. 61
155. वही - पृ. 76
156. मेहरून्निसा परवेज़ - कोई नहीं (संग्रह – लाल गुलाब) - प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2011 - पृ. 45
157. प्रभाखेतान - स्त्री उपेक्षित सीमोन बोउवार – हिंदी पॉके बुक नई दिल्ली - पृ. 318